राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक

पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

(सम्मान्य संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर)

ग्रन्थाङ्क 27

राजस्थानी साहित्य - संग्रह

भाग-1

(खीची गंगेव नींबावत रो दो-पहरो, राजान राउतरो वात-वणाव आदि)

सम्पादक

पं. नरोत्तमदासजी स्वामी, एम.ए.

(अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, महाराणा भूपाल कॉलेज, उदयपुर)

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज.)

Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

द्वितीयावृत्ति **1997** मूल्य : 43.00

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक

पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

(सम्मान्य संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर)

ग्रन्थाङ्क : 27

राजस्थानी साहित्य - संग्रह

भाग-1

(खीची गंगेव नींबावत रो दो-पहरो, राजान राउतरो वात-वणाव आदि)

सम्पादक

पं. नरोत्तमदासजी स्वामी, एम.ए.

(अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, महाराणा भूपाल कॉलेज, उदयपुर)

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

द्वितीयावृत्ति 1997 मूल्य : 43.00

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानप्रदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी आदि भाषा-निबद्ध
विविध वाङ्मय प्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

ग्रन्थाङ्क : 27

राजस्थानी साहित्य - संग्रह

भाग-1

सम्पादक

पं. नरोत्तमदासजी स्वामी

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

प्रथमावृत्ति : 1957

द्वितीयावृत्ति : 1997 **मूल्य : 43.00**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रधान सम्पादकीय

संस्कृत साहित्य में गद्यलेखन की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। दण्डी का दशकुमार चरित, सुबन्धु की वासवदत्ता, कादम्बरी एवं हर्ष चरित्र प्राचीन गद्य के निदर्शनरूप में उपस्थापित किये जाते हैं। हिन्दी भाषा में गद्य काव्य की परम्परा सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से मिलती है। हालांकि राजस्थानी एवं गुजराती गद्य काव्य इससे पूर्व के भी मिलते हैं।

प्रस्तुत प्रकाशन में प्राचीन राजस्थानी की तीन गद्य रचनायें क्रमशः—(1) खीची गंगेव नींबावत रो दोपहरो; (2) रामदास वैरावत री आखड़ी री बात; (3) राजान-राउतरो बात-बणाव, पुनर्मुद्रण रूप में पुनः प्रस्तुत की जा रही है। आशा है राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति में रुचि रखने वाले अध्येताओं हेतु यह उपादेय सिद्ध होंगी।

आनन्द कुमार
आर.ए.एस.
निदेशक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रधान सम्पादकीय वक्तव्य

प्राचीन भारतीय साहित्य में पद्य के साथ गद्य का भी यथोचित रूप में प्रयोग किया गया है। वेदों, जैनागमों, संस्कृत नाटकों और कथा-ग्रन्थों आदि में गद्य की छटा विशेष द्रष्टव्य है। संस्कृत-साहित्य में पंचतंत्र, कथासरित्सागर, दशकुमारचरित्, शुकबहुत्तरी सिंहासनबत्तीसी, बैतालपच्चीसी आदि भी गद्य के अनूठे उदाहरण हैं। राजस्थानी भाषा में भी गद्य-साहित्य का निर्माण विशेष रूप में हुआ है। हजारों की संख्या में ऐतिहासिक ख्यातें, वार्ताएं और वचनिकाएं आदि लिखी गई हैं, जिनमें मुख्यतः राजस्थानी गद्य का व्यवहार किया गया है। साथ ही संस्कृत के गद्य-ग्रन्थों के अनुवाद भी प्रचुर मात्रा में राजस्थानी भाषा में किये गये हैं।

राजस्थानी वार्ताओं में राजस्थानी संस्कृति का बड़ा ही अनूठा चित्रण किया गया है। इन वार्ताओं में राजस्थानी जनता की दिनचर्या, हाट, उपवन, घर-प्राङ्गण, उत्सव, युद्ध, क्रीड़ा आदि का विस्तृत और सजीव वर्णन मिलता है। राजस्थान और बाहर के ग्रन्थ-भण्डारों में राजस्थानी वार्ताओं के छोटे-बड़े कई संग्रह मिलते हैं। राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर (Rajasthan Oriental Research Institute) के संग्रहालय में भी ऐसी वार्ताओं के कई हस्तलिखित ग्रन्थ प्राप्त हुए हैं जिनको यथाशक्य शीघ्र ही सुसम्पादित रूप में प्रकाशित किया जावेगा।

प्रस्तुत संग्रह में तीन वर्णनात्मक राजस्थानी वार्ताओं को प्रकाशित किया जा रहा है। इन वार्ताओं में आदर्श राजपूतों की दिनचर्या का विस्तृत वर्णन मिलता है जिससे राजस्थानी संस्कृति के कई अंगों पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। वार्ताओं का सम्पादन राजस्थान के प्रसिद्ध विद्वान् श्री नरोत्तमदासजी स्वामी द्वारा हुआ है और प्रारम्भ में राजस्थान के प्रसिद्ध अन्वेषक श्री अगरचन्दजी नाहटा के दो निबन्ध भी सम्बन्धित विषय पर प्रकाशित किये गये हैं जिनसे पुस्तक की उपयोगिता बढ़ गई है।

मुनि जिनविजय
सम्मान्य संचालक
राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर

जयपुर
ता० १० अगस्त, १९५६ ई०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान-सम्पादक
पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनविजय
[भू० पू० सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थांक २७

[राजस्थानी-हिन्दी साहित्य-श्रेणी]

राजस्थानी साहित्य-संग्रह

भाग १

(खीची गंगेव नींबावत रो दो-पहरो, राजांन राउतरो वात-वणाव आदि)

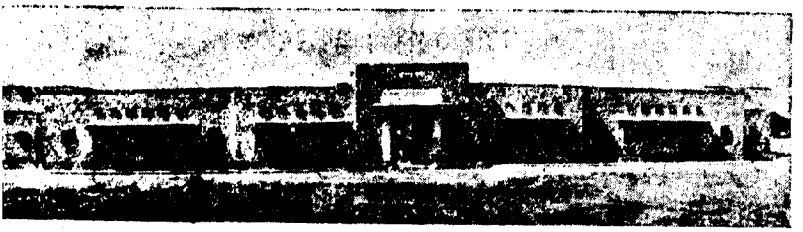

सम्पादक
पं० नरोत्तमदासजी स्वामी एम. ए.

प्रकाशक
राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज०)
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur.

1995-96

द्वितीयावृत्ति 500 **मूल्य रु०** 50.00

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान-सम्पादक

पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनविजय

[भू० पू० सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थांक २७

[राजस्थानी-हिन्दी साहित्य-श्रेणी]

राजस्थानी साहित्य-संग्रह

भाग १

(खीची गंगेव नींबावत रो दो-पहरो, राजांन राउतरो वात-वणाव आदि)

सम्पादक

पं० नरोत्तमदासजी स्वामी एम. ए.

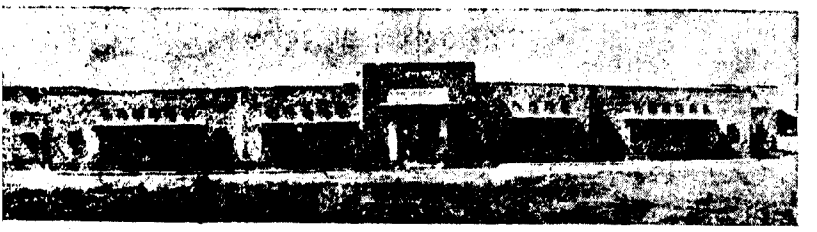

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज०)

Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur.

1995-96

द्वितीयावृत्ति 500 मूल्य रु० 50.00

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थान प्रदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषा-निबद्ध
विविध वाङ्मय प्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक
पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनविजय

ग्रन्थांक २७

प्रथमावृत्ति ७५०; सन् १९५७

प्रकाशक
राजस्थान राज्य संस्थापित
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज०)

वि० सं० २०१० × ई० सन् १९८४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निवेदन

प्रस्तुत ग्रन्थ में प्राचीन राजस्थानी साहित्य की तीन महत्वपूर्ण रचनाओं का संग्रह किया गया है। इनमें प्रथम दो अर्थात् खीची गंगेव नींबावतरो दोपहरो और रामदास वैरावतरी आख-ड़ीरी वात बहुत प्रसिद्ध और लोकप्रिय रचनायें रही हैं और राजस्थानी कहानी-संग्रहों में स्थान-स्थान पर उनकी प्रतियां मिलती हैं।

'खीची गंगेव नींबावतरो दोपहरो' एक सुन्दर गद्य-काव्य है जिसके काव्यमय वर्णनों की छटा निराली है और सहृदय को प्रभावित किये बिना नहीं रह सकती। इसमें खीची-वंशीय नींबा के पुत्र गंगेव या गंगा की और उसके साथियों की एक दिन की दिनचर्या का वर्णन है। दुपहर का वर्णन प्रधान होने से इसका नाम दोपहरो या बे-पहरो है। उत्तर-मध्यकालीन राजपूत सामंत के जीवन और रहन-सहन पर इससे अच्छा प्रकाश पड़ता है।

दूसरी रचना में मारवाड़ के राव रिड़मल (रणमल) के पुत्र वैरा के पुत्र रामदास राठौड़ का वर्णन है। रामदास अपने समय में नामी वीर हुआ। इस 'वात' में उसके १९ विरुदों और ८४ आखड़ियों का उल्लेख किया गया है। अन्त में उसके पराक्रम की एक कथा भी दी गई है। 'आखड़ी' का अभिपाय 'न करने की मानता' (मनौती) से अथवा शपथ या सौगन्ध से है। रामदास ने इन चौरासी बातों के न करने की मानता ले रखी थी। इन विरुदों तथा आखड़ियों से राजपूती जीवन के आदर्श का चित्र खड़ा हो जाता है।

तीसरी रचना 'राजान-राउतरो वात-वणाव' में विविध प्रकार के विविध अवसरोपयोगी वर्णनों का विस्तृत संग्रह है। कथाओं के कहने वाले (और लेखक) कथा कहते समय स्थान-स्थान पर ऐसे वर्णनों का उपयोग करते आये हैं। जैनों के प्राचीन आगम ग्रन्थो में इस प्रकार के सुन्दर वर्णन आये हैं। मैथिल विद्वान् ज्योतिरीश्वर ने पंद्रहवीं शताब्दी में वर्ण-रत्नाकर नामक ग्रन्थ की रचना की जिसमें कथा के विविध प्रसंगों और अवसरों के वर्णन संगृहीत हैं। संस्कृत के कवि-शिक्षा नामक ग्रन्थ में भी काव्य के विविध प्रसंगों और विषयों के वर्णन में किन-किन बातों का वर्णन करना चाहिए यह बताया गया है। राजस्थानी में वाग्विलास नाम से अनेक संग्रह अथवा कथाकाव्य तैयार हुए जिनमें विविध प्रसंगों और विविध अवसरों के वर्णनों को संकलित किया गया। जिन-माणिक्य सूरि का पृथ्वीचंद्र चरित्र अपर नाम वाग्विलास (संवत् १४७० के लगभग) इस प्रकार का सुन्दर कथा-काव्य है जिसके विविध वर्णन बड़े ही भावपूर्ण हैं। 'वात-वणाव' उसी परंपरा की रचना है। रचना प्राचीन नहीं है, पर वर्णन प्राचीन है। ऋतु-वर्णन में महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ की 'क्रिमन-रुकमणीरी वेलि' का प्रभाव है, वह वेलि के पद्यों का गद्यानुवाद-सा ही जान पड़ता है। 'दोपहरो' के वर्णनों के साथ भी उसका पर्याप्त साम्य है।

इस 'वात-वणाव' के वर्णन-संग्रह में उक्त अन्यान्य ग्रन्थों के वर्णन-संग्रहों से एक विशेषता है। उन ग्रन्थों में जहां वर्णनों का केवल संग्रह-मात्र है वहां 'वात-वणाव' में उनको एक क्रमबद्ध कथा के रूप में ग्रथित कर दिया गया है, जिससे यह केवल वर्णनों का संग्रह न रह कर एक सुन्दर कथा-काव्य बन गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'दोपहरो' का संपादन बहुत वर्ष पूर्व बीकानेर के अनूप-संस्कृत पुस्तकालय के एक कहानी संग्रह की प्रति के आधार पर किया गया था। बाद में दूसरी प्रतियां भी देखने में आई और उनमें यत्र-तत्र पाठभेद भी दिखाई पड़े पर उन पाठभेदों को संगृहीत करने का अवसर नहीं आया। इसी प्रकार 'वात-वणाव' का संपादन अपने संग्रह की प्रति के आधार पर करना आरंभ किया था। पर यह कार्य दो-ही-चार पृष्ठों तक बढ़ सका। मेरे प्रिय शिष्य दीनानाथ खत्री एम. ए. ने जो उन दिनों अनूप संस्कृत पुस्तकालय में राजस्थानी-असिस्टेंट का कार्य कर रहे थे, इसके बाकी अंश की प्रतिलिपि तैयार कर डाली। जब मुनि श्रीजिनविजयजी महाराज बीकानेर पधारे तो उन्होंने इन रचनाओं को देखा और इनको राजस्थान पुरातत्व-मंदिर-ग्रन्थमाला में प्रकाशित करने के लिये मांग लिया। 'वैरावत रामदासरी आखड़ीरी वात' की प्रतिलिपि श्री अगरचंद नाहटा ने अपने संग्रहालय की एक हस्तलिखित प्रति से तैयार करवायी थी।

'दोपहरो' और 'आखड़ी' की प्रतियां कई स्थानों पर मिलती हैं तथा 'वात वणाव' की एक अन्य प्रति भी राजस्थान-पुरातत्व-मंदिर के संग्रह में बाद में निकल आई। अच्छा होता कि इन रचनाओं को प्राप्य प्रतियों के आधार पर संपादित करके पाठ-भेदों के साथ प्रकाशित किया जाता। पर यह कार्य समय-सापेक्ष था और उधर पुरातत्व मंदिर का आर्थिक वर्ष समाप्त हो रहा था। इसलिये यही उचित समझा गया कि रचनाएं जिस रूप में हैं उसी रूप में अभी छाप दी जायं जिससे राजस्थानी साहित्य के ये विविध रूप एक बार साहित्य-प्रेमियों के सामने आ जायं।

राजस्थानी गद्यकाव्यों और वर्णन-संग्रहों की परंपरा का संक्षिप्त परिचय कराने के लिये राजस्थान के सुप्रसिद्ध शोधकर्ता विद्वान् श्री अगरचंद नाहटा के दो निबंधों को उद्धृत किया जा रहा है। इनको उद्धृत करने की अनुमति देने के लिये मैं श्रीनाहटाजी का अत्यंत आभारी हूं।

—नरोत्तमदास स्वामी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजस्थानी गद्यकाव्य की परम्परा

भारतीय प्राचीन ग्रन्थों में कवि की कृति को काव्य माना गया है और कवि को क्रान्तदर्शी मेधावी और पंडित कहा गया है। पीछे से 'कवि' शब्द छन्दोबद्ध रचना करने वाले विद्वानों के लिए रूढ़ हो गया और छन्दोबद्ध रचना 'काव्य' के नाम से सम्बोधित की जाने लगी। प्राचीन विद्वानों ने 'काव्य' शब्द की व्याख्या भिन्न-भिन्न प्रकार से की है। भामह और रूद्रट ने "शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्","शब्दार्थौ काव्यम्" अर्थात् शब्द और अर्थ मिल कर काव्य होता है, ऐसा कहा है। किसी विद्वान् ने अलंकारयुक्त शब्द और अर्थ को ही काव्य माना है। विश्वनाथ कविराज ने "वाक्यं रसात्मकं काव्यम्" काव्य का लक्षण बताया है अर्थात् रसात्मक वाक्य ही काव्य है। मुझे यह व्याख्या बहुत ही उपयुक्त और सुन्दर लगती है। काव्य के दृश्य और श्रव्य, दो प्रधान भेद हैं। नाटकों को दृश्य-काव्य कहा जाता है और श्रव्य-काव्य के गद्य, पद्य और मिश्र ये तीन भेद किये गये हैं। पद्यकाव्य छन्दोबद्ध होता है और उसके महाकाव्य, खण्डकाव्य और कोषकाव्य ये तीन भेद माने गये हैं। महाकाव्य और खण्डकाव्य तो प्रसिद्ध ही हैं। कोषकाव्य में स्तोत्र और सुभाषित संग्रह को माना गया है। गद्यकाव्य में छन्द का बन्धन नहीं रहता, अन्य सब काव्य-गुण पाये जाते हैं। वामन ने गद्य तीन प्रकार का बताया है–वृत्तगन्धि, उत्कलिकाप्रायः और चूर्णक। साहित्य-दर्पण-कार ने मुक्तक नामक चौथा भेद भी माना है। जिस गद्य में किसी छन्द के पाद व पादार्ध मिलते हैं उसे वृत्तगन्धि, लम्बे-लम्बे समास वाले गद्य को उत्कलिकाप्रायः, छोटे-छोटे समस्तपदयुक्त गद्य को चूर्णक और समस्त पदों के अभाव वाले गद्य को मुक्तक के नाम से सम्बोधित किया गया है।

गद्य-काव्य के, कथा और आख्यायिका, दो भेद भी हैं। कादम्बरी को कथा व हर्षचरित्र को आख्यायिका के नाम से सम्बोधित किया गया है। मिश्रकाव्य में गद्य और पद्य का मिश्रण होता है। इसके चम्पू, विरुद और करम्भक, ये तीन भेद हैं। वर्णनात्मक मिश्रकाव्य को चम्पू, गद्य और पद्य में की गयी राजस्तुति को विरुद एवं अनेक भाषा-युक्त मिश्रकाव्य को करम्भक की संज्ञा दी गयी है। गद्य की अपेक्षा पद्य सरलता से कंठस्थ हो सकता है और अधिक समय तक स्मरण रह सकता है, अतः इसकी उपयोगिता व स्थायित्व अधिक है। इस सुविधा को ध्यान में रखते हुए भारतीय विद्वानों ने शब्दकोष, वैद्यक, ज्योतिष आदि विषयों के उपयोगी ग्रन्थ पद्यबद्ध ही अधिक बनाये हैं। पद्य में कल्पना की उड़ान, लयसरसता, मनोहरता व श्रवणसुखदता होने से ग्रन्थकारों का ध्यान उस ओर अधिक जाना स्वाभाविक था। इसी आकर्षण के फलस्वरूप भारतीय साहित्य पद्य-रूप में अधिक मिलता है। मुद्रण-युग के प्रसार के साथ-साथ गद्य-साहित्य निरन्तर अभिवृद्धि को प्राप्त हुआ है। पूर्व लोक-भाषाओं में गद्य- रचनाएँ बहुत ही थोड़ी मिलती हैं। हिन्दी भाषा में तो प्राचीन गद्य राजस्थानी और गुजराती भाषा की अपेक्षा भी अल्प है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैसा कि ऊपर बताया गया है रसात्मक काव्यगुणोपेत विशिष्ट शब्दसंचयरूप, पर छन्दों के बन्धन से रहित रचना गद्यकाव्य के नाम से अभिहित है। साधारण गद्य को इसमें सम्मिलित नहीं किया जा सकता। गद्य होते हुए भी जिसके पढ़ने और सुनने में पद्य का-सा आनन्द या रस मिले वही गद्यकाव्य है।

भारतीय साहित्य में गद्यकाव्य का विकास पद्यकाव्य के साथ-साथ ही हुआ प्रतीत होता है, अतः उसकी प्राचीनता पद्य की अपेक्षा कम नहीं है। वेदों मे कहीं-कहीं वाक्य बड़े ही सुन्दर और पद्य का-सा आनन्द देने वाले मिलते हैं। जैनागमों और महाभारत के समय में तो गद्य को व्यवस्थित रूप मिल चुका विदित होता है। भास और कालिदास आदि के नाटकों में गद्यकाव्य की सुन्दर झलक पायी जाती है। प्राकृत भाषा के कई प्राचीन जैन-ग्रन्थों में कहीं-कहीं गद्य-लेखन में शब्द-योजना की सुन्दर छटा देखते बनती है। ईस्वी पूर्व दूसरी से छठी शताब्दी तक के शिला-लेखों के गद्य में भी काव्य का-सा आनन्द मिलता है, जिसे गद्यकाव्य का पूर्वरूप कहा जा सकता है।

गद्यकाव्य की संज्ञा दी जा सके ऐसे ग्रन्थों में दण्डी कवि का दशकुमारचरित सर्वप्रथम है, जिसका समय ईसा की छठी शताब्दी के लगभग का है। इस चरित की भाषा सरल एवं ललित है। इसके पीछे सुबन्धु की वासवदत्ता की कथा आती है। कवि के कथनानुसार इसके प्रति अक्षर में श्लेष है। तत्परवर्ती गद्यकाव्य बाणभट्ट की कादम्बरी और हर्षचरित्र हैं। कादम्बरी विश्व-साहित्य में उल्लेखनीय गद्यकाव्य है। इसकी कथा छोटी-सी, पर वर्णन के विस्तार से वह बहुत विस्तृत हो गयी है अर्थात् उसमें कथा गौण और वर्णन प्रधान है। ऐसा ही अन्य गद्यकाव्य, जिसे इसी के टक्कर का कह सकते हैं, जैन कवि धनपाल की तिलकमंजरी की कथा है। धनपाल महाराजा भोज के सभा-पंडित थे। पुरातत्वाचार्य मुनि जिनविजयजी ने इस तिलकमंजरी के सम्बन्ध में लिखा है- "समस्त संस्कृत साहित्य के अनन्त ग्रन्थ-संग्रह में बाण की कादम्बरी के सिवाय इस कथा की तुलना में खड़ा हो सके, ऐसा कोई दूसरा ग्रन्थ नहीं है। बाण पुरोगामी है, उसकी कादम्बरी की प्रेरणा से ही तिलकमंजरी रची गयी है, पर यह निःसन्देह कहा जा सकता है कि धनपाल की प्रतिभा बाण से चढ़ती हुई न हो तो उतरती हुई भी नहीं है; अतः पुरोगामी ज्येष्ठ बन्धु होने पर भी गुण-धर्म की अपेक्षा दोनों गद्य के महाकवि समान आसन पर बैठाने के योग्य हैं। धनपाल का जीवन भी बाण के जैसा ही गौरवशाली रहा है। इस कथन में तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं है।" तिलकमंजरी के बाद गद्यकाव्य के रूप में दिगम्बरजैन कवि वादीभसिंह का गद्यचिन्तामणि ग्रन्थ उल्लेखनीय है। इसके बाद के लगभग चार सौ वर्षों में कोई उल्लेखनीय गद्यकाव्य नहीं है। वैसे फुटकर वर्णन गद्यकाव्य की झलक अवश्य दिखा जाते है। पन्द्रहवीं शताब्दी में बामन भट्ट ने 'वेम भूपाल चरित' नामक गद्यकाव्य बनाया। इसका पद-विन्यास, माधुर्य, सरसालंकार-योजना, विप्रलंभ शृंगार बाण के सदृश माने गये हैं। भाषा सरल और मधुर है। कवि ने अपने लिए 'गद्यकवि सार्वभौम' विशेषण प्रयुक्त किया है।

भारतीय गद्यकाव्य की परम्परा का दिग्दर्शन कराने के लिए ऊपर कुछ संस्कृत गद्यकाव्यों का उल्लेख करना आवश्यक समझा गया। अब मूल विषय पर प्रकाश डाला जाता है।

हिन्दी भाषा में गद्यकाव्य की परम्परा प्राचीन नहीं दिखाई देती। वैसे हिन्दी की गद्य-रचना ही सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से पूर्व की नहीं मिलती। गोरखनाथ की कुछ रचनाएं गद्य में लिखी बतायी जाती हैं। इन रचनाओं की भाषा को तेरहवीं से पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य की माना गया, पर उसके लिए कोई सबल आधार नहीं प्रतीत होता, इन रचनाओं का गोरखनाथ की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कृतियाँ होना सम्भव नहीं जान पड़ता। किसी प्रसिद्ध साम्प्रदायिक नेता या मत प्रवर्त्तक के अनुयायी स्वयं ग्रन्थ बना कर नेता के नाम से या मतप्रवर्त्तक के नाम से प्रसिद्ध करते रहते हैं। गोरखनाथ के इन ग्रन्थों की हस्तलिखित प्रतियां अद्यावधि अठारहवीं शताब्दी से पूर्व की प्राप्त नहीं हैं। उनके अन्य पद्य-ग्रन्थों की प्रतियाँ भी अभी तक सत्रहवीं शताब्दी से पहले की मेरे अवलोकन में नहीं आयीं। अतः जब तक उनकी हिन्दी गद्य-रचनाओं की इससे पूर्ववर्त्ती प्राचीन हस्तलिखित प्रतियाँ प्राप्त न हो जाएँ, वल्लभ सम्प्रदाय के प्राचीन ब्रजभाषा के गद्य-ग्रन्थों को ही हिन्दी के प्राचीन गद्य ग्रन्थ कहा जा सकता है। बीकानेर राज्य की अनूप-संस्कृत लाइब्रेरी में 'कुतुबुद्दीन की बात' संवत् १६३३ में लिखित प्राप्त है, जिसका गद्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

हिन्दी की अपेक्षा राजस्थानी और गुजराती गद्य अधिक प्राचीन मिलता है। जैन-भंडारों की ताड़पत्री प्रतियों में चौदहवीं शताब्दी का गद्य पाया जाता है। संवत् १३३६ के संग्रामसिंह-रचित 'बालशिक्षा' ग्रन्थ में तत्कालीन गद्य के उदाहरण पाये जाते हैं। यह संस्कृत व्याकरण का ग्रन्थ है, जिसमें समझाने के लिए राजस्थानी का प्रयोग किया गया है। पन्द्रहवीं शताब्दी में 'पृथ्वीचन्द चरित' या 'वाग्विलास' नामक विशिष्ट ग्रन्थ मिलता है, जो राजस्थानी गद्यकाव्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस गद्य से वर्णनात्मक गद्य शैली की यह परिपक्वता का पता चलता है। इससे पूर्व भी कुछ ऐसे ग्रन्थ बने होंगे, ऐसी संभावना होती है; पर अब वे प्राप्त नहीं हैं। इसके बाद तुकान्त गद्य वाले और वर्णनात्मक विशिष्ट गद्य-ग्रन्थ राजस्थान में निरन्तर बनते रहे हैं, जिनका संक्षिप्त परिचय कराना ही प्रस्तुत लेख का उद्देश्य है। संस्कृत ग्रन्थों में गद्यकाव्य के जो लक्षण दिये हुए हैं, उनमें समय-समय पर रचयिताओं की रुचि के अनुकूल परिवर्तन होता रहा है। राजस्थानी में गद्यकाव्य किसे कहा गया है और इनमें कितने प्रकार हैं, यह जान लेना परमावश्यक है।

राजस्थानी के सुप्रसिद्ध छन्दग्रन्थ 'रघुनाथ रूपक' में प्रसिद्ध छन्दों एवं गीतों के लक्षण एवं उदाहरण देने के पश्चात् गद्य के दो भेद दिये हैं-दवावैत और वचनिका। इन दोनों के भी दो-दो भेद किये गये हैं-दवावैत के शुद्धबन्ध और गद्बन्ध, (गद्यबन्ध) और वचनिका के पदबन्ध और गदबन्ध। यथा--

सवै मंछ कवि ह्वै तिके, दवावैत विध दोय।
एक शुद्धबन्ध होत है, एक गद्बन्ध होय।।

इसकी व्याख्या करते हुए आधुनिक टीकाकार श्रीमहताबचन्द खारैड़ लिखते हैं-"दवावैत कोई छन्द नहीं है, जिसमें मात्राओं, वर्णों अथवा गणों का विचार हो। यह अंत्यानुप्रास रूप गद्य जाल है। अंत्यानुप्रास, मध्यानुप्रास और किसी प्रकार का सानुप्रास या यमक लिया हुआ गद्य का प्रकार है। यह संस्कृत, प्राकृत, फारसी, उर्दू और हिन्दी भाषा में भी अनेक कवियों और ग्रन्थकारों द्वारा प्रयोग में लाया हुआ मालूम देता है। आधुनिक लल्लूजीलाल के 'प्रेमसागर' आदि ग्रन्थों में तथा उर्दू के 'बहारवेखिजा' 'नोवतन' आदि ग्रन्थों में तथा फारसी के ग्रन्थों में देखा जाता है। यह दवावैत दो प्रकार की होती है-एक शुद्धबन्ध अर्थात् पदबन्ध, जिसमें अनुप्रास मिलाया जाता है और दूसरी गद्बन्ध जिसमें अनुप्रास नहीं मिलाते हैं।

पदबन्ध का उदाहरण--

"प्रथम ही अयोध्या नगर जिसका वरणाव,
बारै जोजन तो चौड़े, सोलै जोजनकी धाव,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चोतरफ के फैलाव चौसठ जोजनके फिराव,
तिसके तलै सरिता, सरिजूके घाट,
अत उतावल सूं वहे, चोसर कोसों के पाट।"

गद्बन्ध का उदाहरण--

हाथियों के हलके खंभू गणाते खोले, अरापत के साथी भद्रजाती के टोले। अत देहु के दिग्गज विन्ध्याचल के सुजाव. रंग-रंग चित्रे सुंडा डंडके बणाव। झूल की जलूस वीर घंटू के ठणके, बादलों की जगमगा मेरे मेरे भोरों की भकी भंणकै। कल कदमूं के लंगर भारी कनक की हूंस, जवाहर के जेहर दीपमाला की रूस।

वचनिका के दो प्रकार–

"दोय भेद बचनकारा एक पदबंध दूजी गदबंध, सू पदबंध दोय भेद एक तो बारता दूजी बारता में मोहरा राखणाँ। दोय गदबंध वचनका है-एक तो आठ मात्रारो पद हुवै, दूजी गदबंध में बीस मात्रारो पद हुवै--"

टीकाकार ने इसके विशेष विवरण में लिखा है कि ये वचनिकाएं दवावैत के ही भेद मालूम होते है। इतना-सा भेद मालूम होता है कि वचनिका कुछ लंबी और विस्तृत होती है और 'गद्बंध' में तो कई छन्दों के जोटे अर्थात् युग्म वचनिका रूप में जुड़ते चले जाते हैं।

इसके बाद पद्बन्ध का जो उदाहरण दिया गया है, उपयुक्त नहीं मालूम देता। दूसरे उदाहरण का ही कुछ अंश यहां दिया जाता है--

'तिण सभा में श्रीमुखवाणी, लिखमणजी तारीफ आणी।
आतो साराही जाण पाई, इण बल रावणसू जीतां नै सीता आई॥"

गद्बन्ध वचनिका--

"चक्री विचाल, रघुवर विसाल, जंपे जरूर, सुण भरथ सूर,
हणमंत एह, इण गुण अछेह, सेवा सुसेव किनी कपेस।
वे कहूं बैण, सुण विगत संण, पंचवटी प्रीत रहतां सुरीत,
उण ठाँम आय अवसाँण पाय, आसुर अभीत तिण हरी स...।"

गद्बद्ध वचनिका के दूसरे भेद को सिलोकों की संज्ञा दी है--

"बोले सीतापंत इसडी जी बाँणी, सुरनर नागाँ नै लगै सुहाणी।
संसाजल हणमंत जिम ही सरसाई, बीरां अंबरारी कीधी बढ़ाई।।"

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि संस्कृत गद्यकाव्यों की अपेक्षा राजस्थानी गद्यकाव्य की व्याख्या में अन्तर है। राजस्थानी गद्यकाव्य में तुक मिलाने का ध्यान रखा गया है। हिन्दी में भी कविवर बनारसीदासजी आदि की वचनिका--संगत रचनाएं मिलती हैं, उनमें तुक नहीं मिलती। साधारण गद्य और विवेचनात्मक टीका ही हिन्दी में वचनिका मानी गयी है। राजस्थानी में वह तुकान्त-प्रधान है।[1]

---

१ रघुनाथरूपक में वचनिका और दवावैत के जो भेद बताये गये है उनके नामों में थोड़ा उलट-फेर हो गया है, गद्यबद्ध को पद्यबद्ध और पद्यबद्ध को गद्यबद्ध कह दिया गया है। टीकाकार ने जो टिप्पणियाँ दी हैं वे भी भ्रांतिपूर्ण हैं। शुद्ध विवेचन इस प्रकार है।

वचनिका के दो भेद है-(क) पद्यबद्ध (या पदबद्ध), जिसमें मात्राओं का नियम होता है। इसके दो भेद होते हैं-(१) जिसमें आठ-आठ मात्राओं के तुक-युक्त गद्य-खंड हों, और

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दवावैत और वचनिका-संज्ञक रचनाएँ तो राजस्थानी भाषा में भी अधिक नहीं मिलती, अभी तक जिनलाभसूरि और नरसिंहदास गोडकी 'दवावैत' ये दो दवावैतें और अचलदास खींची की वचनिका' और 'रतन महेसदासोतरी वचनिका' ये दो ग्रन्थ ही मुझे ज्ञात है। इनमें से 'रतन महेसदासोतरी वचनिका' एल. पी. तेसीतोरी ने सम्पादित कर के रायल एशियाटिक सोसायटी, बंगाल से प्रकाशित की थी। अन्य तीनों रचनाएँ अप्रकाशित हैं। 'जिनलाभसूरि की दवावैत' की भाषा हिन्दी है। सलोका-संज्ञक छोटे-छोटे देवी-देवताओं की गुण-वर्णनात्मक रचनाएँ पचासों की संख्या में उपलब्ध हैं। राजस्थानी गद्य को कहीं-कहीं वार्ता या वार्तिक संज्ञा भी दी हुई मिलती है। वार्तिक के रूप में 'शिखरवंशोत्पत्ति काव्य' नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित हो चुका है। 'केहर प्रकाश' ग्रन्थ में तुकान्त गद्य की संज्ञा वार्ता में पाई जाती है।

जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है, सर्वप्रथम राजस्थानी गद्यकाव्य 'पृथ्वीचन्द चरित्र' है, जिसका अपर नाम 'वाग्विलास' है। इसकी रचना संवत् १४७८ में जैनाचार्य माणिक्यसुन्दर सूरि ने की है। इसमें पृथ्वीचन्द राजा की कथा तो बहुत छोटी-सी है, पर वर्णन का विस्तार अधिक है। ग्रन्थकार ने कोई भी प्रसंग बिना वर्णन या विवरण के खाली नहीं छोड़ा। विवरणात्मक नामों के अतिरिक्त प्रायः सम्पूर्ण ग्रन्थ तुकान्त गद्य में लिखा गया है, जिसे पढ़ते हुए काव्य का सा आनन्द मिलता है। उदाहरणार्थ दो-एक वर्णन यहाँ दिये जा रहे हैं।

मरहट्ठदेश वर्णन–

"जिण देसि गाम अत्यन्त अभिराम। भलां नगर जिहाँ न मागीयइँ कर। दुर्ग, जिस्यां हुई स्वर्ग। धान्य, न नीपजइ सामान्य। आगर, सोना रूपा तणा सागर। जेइ देस माहि नदी वहइं, लोक सुपहं निर्वहइ। इमिउ देस पुण्य तणाउ निवेश गरुअउ प्रदेश। तिणि देसि पहठाणपुर पाटण वर्त्तइं, जिहां अन्याय न वर्त्तइं। जीणइ नगरि कउसीसे करी सदाकार, पाषलि पोढउ प्राकार, उदार प्रतोली द्वार। पाताल भणी धाई, महाकाय षाई, समुद्र जेहनु भाई। जे लिइ कैलास पर्वत सिउं वाद, इस्या सर्वज्ञ देव तणा प्रासाद। करइं उल्लास, लक्षेश्वरी कोटीध्वज तणा आवास आनन्दइं मन, गरुड़ राजभवन। उपारी अषंड सुवर्णमय दंड, ध्वजपट लहलहई प्रचंड।

हिव हूउं प्रभात, फीटी राक्षसनी वात, टलिउ अंधकारव्रात, अदृश्य नक्षत्र पटल, गगन उज्ज्वल, निःशब्द धूक कुल, निर्मल, दिग्मण्डल, आश्रित पूर्वाचल, हूउं रविमंडल, विहसइं कमल, विस्तरइं परिमल, वायु वाइं शीतल, प्रसन्न मनीतल, जिस्यां रातां पारेवा तणा चरण, तिस्यां विस्तरइ सूर्य तणा किरण।

---

(२) जिसमें २०-२० मात्राओं के तुक-युक्त गद्यखंड हों। (ख) गद्यबद्ध–जिसमें मात्राओं का नियम नहीं होता। इसके भी दो भेद होते हैं-(३) वारता * या साधारण गद्य (४) तुक- युक्त गद्य।

दवावैत के भी इसी प्रकार दो भेद होते हैं-(१) पद्यबद्ध (या पदबद्ध)–इसमें २४-२४ मात्राओं के तुक-युक्त गद्य-खंड होते हैं। (२) गद्यबद्ध–इसमें तुक-युक्त गद्य-खंड होते हैं, मात्राओं का नियम नहीं होता।

दवावैत और वचनिका में क्या अन्तर है ? यह अभी तक समझ में नहीं आ पाया है। वचनिका के चतुर्थ भेद और दवावैत के द्वितीय भेद में कोई अन्तर नहीं दीख पड़ता। उपलब्ध दवावैतों की भाषा राजस्थानी से प्रभावित खड़ी बोली हिंदी है जबकि वचनिकाओं की राजस्थानी।

* कहीं-कहीं तुकान्त गद्य के लिये भी वात, वार्ता या वार्तिक नाम का प्रयोग देखा जाता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महोत्सव वर्णन-

"अलंकरिउ प्राकार, शृंगारिया प्रतोली द्वार। मंच प्रति मंच तणी रचना हुई, स्वर्गपुरी तणी शोभा लई। ध्वज पताका लहकई, पुष्प परिमल बहकई। नाचइं पात्र, राजभवनि आवइं अक्षत पात्र। सोमाई भणतां आवइं छात्र, लोक अलंकरई आमरणि गात्र, उत्सव करिवा एहइज वात। तीणि वेलाँ नऊइं कोरण, बांधीयई तोरण, बांधीयई वंदरवाल, उत्सव विशाल। गुल घीउ लाहीयइं, मन ऊमाहीयइं। ईण युक्ति जन्म महोत्सव हुआ।"

इस ग्रन्थ के चार वर्ष बाद ही जिनवर्द्धनगणि ने "तपो गच्छ गुर्वावली" लिखी उसमें भी पद्यानुकारि गद्य विशेष रूप से मिलता है। यहाँ उसका थोड़ा-सा उद्धरण दिया जाता है-

"जिम देव माहि इन्द्र, जिम ज्योतिश्चक्र माहि चन्द्र,
जिम वृक्ष माहि कल्पद्रुम, जिम रक्त वस्तु माहि विद्रुम,
जिम नरेन्द्र माहे राम, जिम रूपवंत माहे काम,
जिम स्त्री माहे रम्भा, जिम वादित्र माहे भंभा,
जिम सती माहि सीता, जिम स्त्री माहि गीता,
जिम साहसीक माहि विक्रमादित्य, जिम ग्रहगण माहि आदित्य,
जिम रत्न माहि चिंतामणि, जिम आभरण माहि चूड़ामणि,
जिम पर्वत माहि मेरु भूधर, जिम गजेन्द्र माहि ऐरावण सिन्धु,
जिम रस माहि घृत, जिम मधुर वस्तु माहि अमृत,
तिम सांप्रति कालि, सकल गच्छन्तरालि,
ज्ञानि विज्ञान तपि जपि शमि दमि संयमि करी अनुच्छ,
ए श्री तपोगच्छ, आचन्द्रार्क जयवंतउ वर्त्तइ।"

इस ग्रन्थ के तीन वर्ष बाद सं. १४८५ में हीरानन्द सूरि द्वारा रचित 'वस्तुपाल तेजपाल रास' में निम्नोक्त प्रकार का गद्य आया है-

इमउ एक श्री शत्रुञ्जय तणउ विचारु महिमा नउ भण्डारु मन्त्रीश्वर मन माहि जाणी उत्सरंग आणी। यात्रा उपरि उद्यम कीधउ, पुण्य प्रसादन नउ मनोरथ सिद्धउ॥ १॥

शिवदास-रचित 'अचलदास खीची की वचनिका' का रचना-काल १५ वीं शताब्दी माना जाता है। उसमें पद्य के साथ-साथ बात रूप गद्य पाया जाता है। यद्यपि यह सर्वत्र तुकान्त नहीं है, फिर भी वचनिका-संज्ञक सबसे प्राचीन रचना यही है। उदाहरण-

"पगि पगि पउलि पउलि हस्तीकी गज-घटा, तीं ऊपरि सात-सात मइ धनक-धर मांवठा। सात-सात ओलि पाइककी वइठी, सात-सात ओलि पाइककी उठी। सेड़ा उडण मुद फरफरी चुहँचकी टाँड टाँड ठरगी इसी एक त्यापट उडि चत्र दिसी पड़ी, निगा वाजि तकइ निनादि घर आकास चड़हड़ी,। बाप बाप हो ? थारा आरम्भ पारम्भ लागि गढ़ लेयण हार, किना बाप बाप हो ? थारा सत तेज अहँकार, राइ दुग राखण हार।"

१६ वीं शताब्दी में लिखित एक विशिष्ट वर्णनात्मक जैन-ग्रन्थ जैसलमेर के 'जैन-भण्डार' मे अपूर्ण प्राप्त हुआ है। उसका नाम हासिये में 'मुत्कलानुप्रास' लिखा हुआ है। उसके कुछ उद्धरण मैंने अपने वर्णनात्मक 'राजस्थानी गद्य ग्रन्थ' शीर्षक लेख में दिये हैं। यहां उसमें से उदाहरणार्थ ग्रीष्म ऋतु का वर्णन दिया जा रहा है-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"महा पित्रुनउ आलउ, आव्यो उन्हालउ ।
लूय वाजइ, कान पापड़ि दाझइ, ।
झाझूआं वलइँ, हेमाचलना शिखर गलइँ,
निवांणे खुटइ नीर,पहिरइ आछा चीर ।
एवडऊ ताप गाढउ, भावइ करवउ टाढउ ।
वाइ बाजइ प्रबल, उडइ धूलिना पटल ।
सीयालइ हुंति मोटी रात्र, ते नान्ही थई रात्रि,
सूर्य आपणा पइ तापइ, जगत्र संतापइ,
जे जीव थल चरइ, तेहि जलासय अनुसरइ",

यह ग्रन्थ वर्णनों का सुन्दर संग्रह-ग्रन्थ है । सम्भवतः इसकी रचना १५ वीं सदी के अन्त या १६ वीं सदी के प्रारम्भ में हुई है । पूर्ण प्रति मिलने पर इसका महत्व और भी बढ़ जायगा ।

१६ वीं शताब्दी की अन्य दो रचनाएँ 'राजस्थानी' भाग २ में प्रकाशित की गई हैं । इनका भी थोड़ा सा उद्धरण नीचे दिया जाता है-

"रायाँ माँहि वडउ राउ श्री सातल, जिणइ मालविया सुरताण तणउ दल, भाँजी कीधउ तल्ल । खुदाई-खुदाई तोब तोब करतउ नाठउ, जातउ गणउ धाठउ माल्हाला हिरण तणी परिश्राठउ । घणी गालइ घाली बंदि छोडावी, रेख रहावी, खाडइ जइत्र अणावी नव कोटो मारुयाड़ि भली माल्हावी । मोटउ साहस कीधउ, वडउ पवाड़उ सीधउ ।

"श्रीकरणराय रिणमल्लानी, तइँ कँपाव्या सेन सुरतानी । तइँ हंस-नइ परि निवेड्या दूध नइ पाणी, मुकाँवी गुरु करि कहाणी ।

"जिणइ ठाकुरि प्रवेसक महोत्सव कराव्या, तणिया तोरण बँधाव्या, बंदरवालि ठाम-ठाम सोहाव्या, व्यवहारिया साम्हा इणि परि वांदिवा आव्या कुणही जो तस्या वहिलइँ कल्होड़ा, कुण ही पल्लाण्या आसण होड़ा, केइ करहि चडी द्यइ दह दिसि द्रोड़ा, केइ मुखि माणइ तंबोल-लवंग-डोड़ा ।

"तिमरी आविया, पइसारा मोटइ मँडाण कराविया, जांगी ढोल झालरि संखि वादित्र, वजाविया । बिहु पासे पटकूल तणा नेजा लहकाविया, पगि-पगि खेला नचाविया, तणिया तोरण बँधाविया । गीत गान कीधा, पून कलस सूहव सिरि दीधा, भला मांगलिक कीधा । घरि-घरि गूडी उछली, श्री सघतणी पूगी रली ।"

१७ वीं शताब्दी के वर्णनात्मक गद्य के दो संग्रहों की प्रतियाँ मिलती हैं, जिनके कुछ उद्धरण अपने अन्य लेख में दे चुका हूँ । वर्णन बड़े सुन्दर हैं । लेख-विस्तार के भय से यहाँ इस शताब्दी की अन्य दो रचनाओं के उद्धरण दे करके ही संतोष करना पड़ता है । पहली रचना 'कुतबद्दीन शहजादे की बात' है । उनकी १७ वीं शताब्दी की लिखित प्रति अनूप संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर में उपलब्ध है । हिन्दी गद्य के प्राचीन रूप की जानकारी के लिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण है ।

कुतबदीन साहिजादैरी वारता—

"आदि-अथ कुतबदीन साहिजादैरी वारता लिख्यते ।'

बडा एक पातिस्याह । जिसका नाम सवल स्याह । गढ़ मांडव थांणा । जिसकै साहिजादा दाना । मौजे दरियाव तीर । जिसकै सहरमें वसै दान समंद फकीर । जिसकी औरत का नाम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मौजूम खातू । सदा बरत का नेम चलातू । जो ही फकीर आवैं । तिसकुं खांणा खुलावै । एक रोज इक दीवान फकीर आया । दावल दाँन घरां न पाया ।

अन्त-बेटे बाप विसराया, भाई बीसा रेह ।

सूरां पुरां गल्लडी, माँगण चीता रेह ॥१०७॥

ऐसा कुतबदीन साहजादा दिल्ली बीच पिरोसाह पातस्याह का साहजादा भया । दांवलदांन फकीर की लड़की साहिबां से आसिक रह्या । बहुत दिनां प्रीत लागी । दुख पीड़ आपदा सह भागी । पीरोसाहि का तखत पाया साहजादा साह कहाया । यह सिफन कुतबदीन साहजादे की पढे, बहुत ही वजन सुख से बढै । यह बात गाहजुग से रहि । ढढीणी ने जोड़ कर कही ।"

दूसरी रचना राजस्थान के सुप्रसिद्ध कवि समयसुन्दर रचित 'भोजन विच्छित्ति' नामक है । 'कल्प-सूत्र' की टीका में, महावीर के जन्म के पश्चात् कुटुम्बीजनों को जो भोजन कराया गया, उसका वर्णन बड़ी छटापूर्ण भाषा में किया गया है । खाद्य पदार्थों का इतना सुन्दर वर्णन पढ कर पाठकों को भी भोजन करने की इच्छा जाग उठेगी । परोसने वाली स्त्री का वर्णन करके खाद्य पदार्थों का वर्णन किया गया है—

"मांडयउ उत्तंग तोरण मांडवउ, तुरत नवउ । बेसवानउ आंगणउ, तेतउ नील रतन तणउ । सखरा मांडया आसण, बैसतां किसी विमासण प्रीसणहारी पइठी । ते केहवी ?—सोल श्रृंगार सज्या, बीजा काम त्यज्या । हाथनी रूड़ी, बिहुं बांहे खलकइ चूड़ी । लघ लाघवी कला, मन कीधा मोकला । चितनी उदार, अति घणी दातार । दउलती हाथ, परमेसर देजे तेहनो साथ । धसमसती आवी, सगलांरइ मन भावी ।

"हिव पकवान आणइ, केहवा वखाणइ—सत्तपुडा खाजा, तुरतना ताजा, सदला नइ साजा, मोटा जाणे प्रासादना छाजा । पछे प्रीस्या लाडू, जाणे नान्हा गाडू । कुण कुण ते नाम, जीमतां मन रहे ठाम । मोतीया लाडू, दालिआ लाडू, सेविया लाडू, कीटीरा लाडू, नांदउलिरा लाडू, तिलना लाडू, मगरिया लाडू, भूगरिया लाडू, सिंह केसरिया लाडू ।"

१८ वीं शताब्दी के सभा-श्रृंगार, कुतुहलम् आदि कई वर्णनात्मक ग्रन्थ मिले हैं, जिनके उद्धरण अपने ग्रन्थ लेख में दे चुका हूं । इस शताब्दी की दो सुन्दर रचनाएँ चारण कवियों की भी प्राप्त हैं, जिनमें से 'खिची गंगेव नीबांवतरो दो-पहरो' और 'राजान राउतरो वात-वणाव' बहुत ही महत्वपूर्ण ग्रन्थ है । इनका एक एक उदाहरण नीचे दिया जा रहा है । पहली रचना के प्रारम्भ में वर्षा का वर्णन तो बहुत ही सुन्दर है जिसको मैंने 'राजस्थानी साहित्य' में वर्षा वर्णन लेख में दे दिया है । उसे यहां भी दिया जा रहा है ।

"वरखा रितु लागी, विरहणी जागी ।
आभा झर हरैं, बीजां आवास करैं ।
नद्दी ठेबा खावै, समुद्रे न समावै ।
पाहाड़ां पाखर पड़ी, घटा ऊपड़ी ।
मोर सोर मंडै, इन्द्र धार न खंडै ।
आभो गाजै, सांरग वाजै ।
द्वादश मेघनैं दुवो हुदो, सु दुखियारी आंख हुवो ।
झड़ लागो, प्रथीरो दलद्र भागो ।
दादुरा डहिडहै, सावण आणबैरी सिध कहै ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इसौ समइयौ वरण रह्यो छै, बरखा मंड. नै रही छै।
बिजली झिलोमिल कर ने रही छै, बादलां झड़ लायी छै।
सेहरां-सेहरां वीज चमक नैं रही छै।
जाणै कुलटा नायक घरसूं नीसर अंग दिखाय दूसरै घर प्रवेस करै छै।
मोर कुहकै छै, डेडरा डहकै छै।
भाखरांरा नाळा बोल नैं रह्या छै।
पाणी नाडा भर नैं रह्या छै, चोटडियाल डहक नै रही छै।
वनसपतीसूं वेलां लपट नै रही छै।
परभातरी पो'र छै। गाज-आवाज हुय नैं रही छै।
जाणैं घटा घणैं हरखसूं जमींसूं मिलण आयी छै।
इसै वखत समइयै में गंगेव नौबावत बोलै छै, मनरी उमंग खोलै छै।
सैलां-सिकारांरो दुवो हुवो छै।

"तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति हमें आगै वसंत रितरा वणाव बखाणीजै छै, दखिण दिसा मलयाचल पहाड़री पवँन वाजिग्रौ छै। सीत मंद सुगन्ध गति पवँन मतवाला मैंगल ज्यूं परिमल झोला खावतो बहे छै। अढ़ार भार वनसपती मकरंद फूलादिरा रस माँणतौ थको वहै छै। अंबर मोरीजे छै, कूंपला फूटीजै छै। वणराइ मंजरी छै। वासावली फूटि रही छै। केसू फूलि रहिया छै। रितिराज प्रगटियो छै। वसंत आयो छै। भमर मधुकर झंकार करी रहिया छै। मधुरी वाणीरा सुर करि कोकिला बोलि रही छै। बार बगीचां दरखत गुलकारी झिलि फूल रही छै।"

सं० १७८८ के लगभग रतनूं वीरभाण कृत 'राजरूपक' ग्रन्थ राजस्थानी भाषा का एक बृहद् ऐतिहासिक काव्य है, जिसे पंडित रामकरणजी आसोपा ने नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित कराया है। इस ग्रन्थ में कई जगह वार्ता का भी प्रयोग हुआ है। यहां उसका एक उदाहरण दिया जा रहा है। इसमें औरंगजेब का वर्णन है—

"औरंगसा पातसा आसुर अवतार, तपस्याके तेज पुंज एक से विस्तार।
मापका विहाई सा प्रतापका निदांन, मारतंड आगे जिसी जोतसी जिहांन।
जापका पैगंबर आपका दरियाव, तापका सेस ज्वाल दापका फुरराव।
सकसेका जैतवार अकसेका वाई, अरिदल समुद्र आए कुंभज के भाई।
रहणी में जोगेश्वर वहणी में जगदीस, ग्रहणी में सिवनेत्र सहणी में अहीस।
जाके जप तप आगे ईश्वर आधीन, ताकूं छल बांह बल कुण करै हीन।

१८ वीं शताब्दी में ही दवावैत-संज्ञक दो रचनाएं प्राप्त हुए हैं, जिनमें से पहली रचना 'नरसिंहदास गौड़ की दवावैत' भाट मालीदास-रचित है। इसकी प्रति अनूप संस्कृत लाइब्रेरी में १८ वीं शताब्दी पूर्वार्द्ध की लिखित प्राप्त हुई है। आदि-अन्त के उदाहरण इस प्रकार है—

आदि—"हींदवाण छात हींदवाण सूर, अजमेर जोधपुर मांण पूर, अजबाल बंस अस गांव अरोड़, ढीलड़ी बीच महिपत्यां मोड़।"

अन्त—"रंग छहरते हैं। कपड़े पहरते हैं। तोसक सील्यावता है। हजूरी पावता है। चढ़ते उतरते पाव दे सलाम करांवदे है।
जरबफत पाटता है। अम्बर फटते हैं। सभा विराजती है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कीरत राजते हैं। घोड़े फिरते हैं। पायक अड़ते हैं।
गुणी जण राग घटता है। वह वषत वणता है।
सोभा वणती है। श्री दिवाण पधारते हैं। दुसमण को जारते हैं।
देसौं दूर डरते हैं। साहो काम सरते हैं।
कवीसुर बोलते हैं। भरणा षोलते हैं।
कामका सूरत। जेतला दिहाड़ा तेतला प्रवाड़ा।
जग जेठराम नरसिंह जेत. कवि मालीदास कहै दवावेत।

दूसरी दवावेत जैनाचार्य जिनलाभसूरिजी की है जिसे याचक विनयभक्ति (बम्तुपाल) ने १९ वीं सदी के प्रारम्भ में बानायी है। इससे पूर्ववर्ती जैनाचार्य जिनसुखसूरिजी की दवावेत उपाध्याय रामविजय ने संवत् १७७२ में बनायी थी। इसका दूसरा नाम 'मजलस' भी है। दोनों दवावेतों के उद्धरण नीचे दिये जा रहे हैं—

"अहो आवो वे यार बैठो दरबार। ए चांदणी रात, कहौ मजलीसकी बात। कहो कौण कौण, मुलक कौण कौण राजा देषै, कौण कौण पातिस्या देषै कौण कौण दईवांन देषै, कौण कौण महिवान देषै। तो कहै—

दिल्ली दईवांन फररुषसाह सुलतान देषै। चित्तोड़ संग्रामसिंघ दईवान देषै। जोधांण राठौड़ राजा अजीतसिंह देषै। बीकाणराज सूजाणसिंघ देषै। आंबेर कछवाहा राजा जयसिंघ देषै। जेसाण जादव रावल बुधसंघ देषै।

ए कैसे हैं- वडे सु विहान हैं, वडे महिवांन हैं, वडे सिरदार हैं। वडे बूझदार हैं, वडे दातार हैं। जमी आसमान बीच संभू अवतार हैं।

आचार्य श्रीजिनसुखसूरि का वर्णन करते हुए लिखा गया है —

"दुस्मन् दूर है, सब दूनीमें हुक्म मंजूर है। मगरूरांकी मगरूरी दफै करते हैं, छत्र धारीकी सी रीस धरते हैं। बड़े-बड़े छत्रपति गढ़पती देसोत डंडौत करते हैं, चिकारे मुकारे भुंज मरते हैं। (और) भी कैसे हैं— गुनुनके गाहक हैं, गुनुके जान हैं, गुनुके कोट हैं, गुनुके जिहाज हैं विजैजिनराज है। षट्दर्शनके महाराज हैं सब दुनियां बीच जस नगारेकी अवाज है।"

जिनलाभसूरि – दवावेत उपर्युक्त दवावेत से चौगुनी बड़ी है। इसमें कुछ पद्य व गीत भी सम्मलित हैं। यहां वचनिका-संज्ञक गद्य काव्य के भी कुछ उद्धरण दिये जाते हैं।"

'फिरि जिनुका जसका प्रकास मनु हसका सा विलास,
विधु हरजूका हास किधु सरद पुन्युका सा उजास।
फिर जिनु का रूप अति ही अनूप मनु सब रूपवतु का रूप,
जाकु देष्यै चाहै सुरनके भूप कामदेवका सा अवतार।
किधु देवका सा कुमार, तेज पुंज की झलक मनु कोटिन सूरन की जलक।"

उपर्युक्त दोनों दवावेतों में फारसी शब्दों का प्राचुर्य है, क्योंकि इन दोनों की रचना सिन्ध प्रांत में हुई है। पंजाब और सिन्ध की भाषा में उस समय फारसी शब्दों का बाहुल्य था।

२० वीं शताब्दी की रचनाओं में 'शिखर वंशोत्पत्ति' नामक ऐतिहासिक काव्य संवत् १९२६ में कविया गोपाल ने बनाया, जिसे पुरोहित हरिनारायणजी ने सम्पादित कर काशी नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित किया है। इसका अपर नाम 'पीढी वार्तिक' भी है। इसका प्रधान

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिह्न वार्ता नामक है, जिसे श्लोक की तरह मात्राओं आदि के प्रतिबन्ध रहित गद्य ही समझिए। उदाहरण इस प्रकार है –

"स्याम ताज कफनी कमंडलमैं नीर।
डाटी सुपेत सेष सुबरण शरीर ।।१४।।
मोकल राव आतो देषि माथाकौं नवायो।
साँई स्यां भुरांनी सेष नामी पंथ पायो।।१५।।
जंगल में चरे छी सो अव्याई झोटी आई।
मोकलका कनांसू सेष चीपीमें दुहाई।।१३।।
बोल्यो दूध पीकै सेष नीकी भांति रैणां।
तेरे पुत्र होगा राव सेषा नाँव कैणां।।१७।।

इसी कवि का अन्य ऐतिहासिक ग्रन्थ 'लावा रासा' है, जो राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, से प्रकाशित हुआ है। उसमें भी दवावेत गद्य-छंद प्रयुक्त हैं। इसकी परवर्ती रचना कविराव बख्तावर के सं० १९३६ में रचित 'केहर प्रकाश' है। यह भी एक ऐतिहासिक काव्य है। बीच-बीच में वार्ता एवं वचनिका विशेष रूप से पाई जाती है। यहां उन दोनों का एक उदाहरण दिया जा रहा है।

जवाहर वेश्या की पुत्री कंवलप्रसण के रूप का वर्णन वार्ता में इस प्रकार किया गया है–

"पुत्री जिणरे कंवलप्रसण रूपरी निधान।
सुकेशियासूं सवाई साव रम्भारे समान।।
साहित्या शृंगार काव्य जबानी पर कहे।
रमाताल परिजंत संगीतमें रहे ।।
वीणांधर सहजांई गावे किण भांत।
तराज पर नहँ आवे नारद वीणारी तांत ।।
जिणने सुण्यां कोकिला मयूर लाज भाग जावे।
कुरंग औ भमंग वन पातालसूं आवे।।"

उसके रूप को देख कर अन्य नारियों ने उसे बाग-बगीचों में जाने का निषेध करते हुए क्या ही सुन्दर कहा है।

"सुघड़ जठे बोली या नवेली सहल सारे ही सिधावज्यो।
पण बाग वन सरोवर कदे भी मत जावज्यो।
जावेला बाग तो पिक शुक अली उड़ जावसी,
ने बिम्बफल श्रीफल अनाड़ सेवां जो सुखावसी,
जावेला जो वन तो खञ्जन कपोत चोष चूरेला।
मणधर मृगराज गजराज बिवर बूरेला।
जावेला सरोवर राज हंस बूड जावसी।
कंवल काला पड़ेला सिवाल अवटावणो आवसी।
रातने या अटारी माथे कदेई जो जावेला।
तो चन्द्रमारे भरोसे राहूसूं खताहीज खावेला।
राहू कदाक न आयो तो चकोर तो आवसी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जावसी न आग माथे चहराने कूंथ जावसी ।
सावण आयां घरे यारे हींदा जिको घालेला ।
हींदिया छै तो परियां धोके परियां खांच जावेला ।

वचनका

कंवल उरवसी आत आतमें कहात ।
परस्थानी परियों सी सहेल्यों ले साथ ।
जरकस वट जेवर झलामल के जोत ।
हेरी जात चारों ओर चानणी सी होत ।।
छुद्रघण्टा बिछियोंका छूटे छण छणाव ।
ज्यों हंसे बच्चोंकी बाणीका बणाव ।
जां झरूका झणकार व्है जोरें पर जोर ।
सावणके मौसम ज्यों झिल्ल्योंका शोर ।
फबणीमें अनुरागमें अगणितके फैल ।
गुम्मजके महल आई मिजाजोंके गैल ।।६३।।"

आधुनिक शैली के गद्यकाव्य की परम्परा भी राजस्थानी भाषा में चालू है। यहां कविवर कन्हैयालालजी सेठीया के गद्यकाव्यों के दो उदाहरण देखिए —

"आसोजरो महीनूं। नान्हींसी'क एक बादली ओसरगी। रेवड़ बालैरो अलगोजी गूंज उठ्यो। रिमझिम-रिमझिम मेवलो बरसै। अतैमें ही अचाणचूको पूनरो एक लहरो आयो अर बादली उड़गी। करड़ी तावड़ो निकल आई। खेतमें निनाण करतो करसो बोल्यो-आसोजांरा तप्या तावड़ा काचा लोहा पिण गलग्या-'मिनखरी जबानमें कठेई पल कोनी'।

बादलवाईरो दिन। मधरो मधरो आथूणुं बायरो चालै। खेजड़ी परां बैठी कमेड़ी बोली—'टमरक टूं'।

नीचै छियांमें सूतो मिनख सोच्यो किस्योक सोवणूं पंखेरू है? अतेमें ही कमेड़ी बींठ करी-सीधी आ'र मिनखरे ऊपरां पड़ी मिनख झुंझला'र बोल्यो—किस्योक बदजात जीव है?"

हिन्दी भाषा में तो राजस्थान के कई विद्वानों ने अनेकों गद्यकाव्य लिखे हैं, जिनमें ठाकुर रामसिंहजी (बीकानेर), भंवरमल सिंघी (जयपुर), दिनेशनन्दिनी डालमिया (उदयपुर), आदि प्रधान हैं। श्रीयुत् कन्हैयालालजी सेठिया का मातृभाषा का प्रेम विशेष उल्लेख योग्य है। हिन्दी के अच्छे कवि होने के साथ इन्होंने राजस्थानी भाषा में भी समय-समय पर बहुत सुन्दर रचनाएं कीं। इनके राजस्थानी के गद्यकाव्यों का संग्रह 'पाखड़ल्यां' के नाम से शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है।

—श्री अगरचन्द नाहटा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कतिपय वर्णनात्मक राजस्थानी गद्य-ग्रन्थ

वाक्-शक्ति मनुष्य को दी हुई प्रकृति की विशेष देन है। वैसे तो नेत्रधारी सभी प्राणी वस्तुओं और घटनाओं को निरंतर देखते ही रहते हैं, पर मनुष्य का देखना उनकी अपेक्षा बहुत महत्व रखता है। देखने के पीछे अनुभव करने की विशेष शक्ति आवश्यक है और वह केवल मानव को ही प्राप्त है। इतर प्राणी उन्हें देख भर लेते हैं, पर जैसा अनुभूतिपूर्ण वर्णन मानव कर सकता है अन्य कोई भी प्राणी नहीं कर सकता। वस्तुओं का ज्ञान कर लेना एक बात है और अपने अनुभव को सुन्दर एवं साकार रूप में दूसरों के समक्ष वाणी द्वारा उपस्थित करना दूसरी बात है। किसी भी बात का वर्णन करते समय श्रोता के सामने उसका चित्र-सा उपस्थित हो जाय-यह वर्णन करने की विशेष कला है। वैसे रसीले व चमत्कारपूर्ण वाक्य लिपिबद्ध हो जाने पर वे साहित्य की संज्ञा पाते हैं।

भारतीय प्राचीन साहित्य में वर्णन करने की विशेष छटा स्थान-स्थान पर देखने को मिलती है। कहीं कहीं तो निरूपण शैली इतनी सजीव होती है कि पढ़ने और सुनने वाले बरबस आकर्षित हो कर मंत्र-मुग्ध से हो जाते हैं। यह वर्णन-शैली कई प्रकार की होती है। किसी में वस्तु के बाह्य रूप की, किसी में भीतरी गुणों की, और किसी में भेद-प्रभेदों के विस्तृत विवरण की प्रधानता होती है। किसी किसी रचना में भाषा का चमत्कार देखते ही बनता है। शब्दों का चयन बड़ा सुन्दर होता है और वर्णन गद्य में लिखे जाने पर भी (तुकान्त होने से) पढ़ने वाले को पद्य का सा आनन्द मिलता है। संस्कृत में गद्य-काव्य में जिस प्रकार लंबे-लंबे समास प्रधान होते हैं उसी प्रकार लोक-भाषा के वर्णनात्मक गद्य-ग्रन्थों में तुकान्त शैली बहुत विस्तृत पाई जाती है। इसमें एक के बाद एक तुकान्त शब्द ऐसे सुन्दर एवं सहज ढंग में सजाये जाते हैं कि मानों मोतियों को चुन चुन कर माला ही पिरो डाली हो। सहृदय पाठक व श्रोता उस तुकान्त शब्दावली और वर्णन-शैली का चमत्कार देख कर आनंद विभोर हो उठते हैं और लेखक के प्रति बरबस उनके मुंह से 'वाह वाह', 'खूब खूब' शब्द फूट निकलते हैं।

प्राचीन जैनागमों का अध्ययन करते समय आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व की वर्णन शैली का अच्छा पता चलता है। भेद-प्रभेदों का विवरण देने वाले स्थानांग, समवायांग प्रश्न-व्याकरण आदि आगम तो ज्ञानवर्धक हैं ही, पर उववाई सूत्र जैसा कई ग्रन्थों में वर्णनों की अच्छी बहार है। उववाई सूत्र में चम्पानगरी, पूर्णभद्र चैत्य, वनखंड, अशोक वृक्ष, महाराजा श्रेणिक, के पुत्र अंजसार (कोणिक-अजात शत्रु), धारणी राणी, भगवान् महावीर का आगमन, समवसरण महाराजा कोणिक का वंदनार्थ गमन, श्रमणों की तप साधना आदि का अच्छा वर्णन है। इसी प्रकार अन्य जैनागमों में भी प्रसंगानुरूप अनेक प्रसंगों के सुन्दर वर्णन पाये जाते हैं। जैसे कल्पसूत्र में भगवान् महावीर की माता चौदह स्वप्न देखती है-उनका विस्तार से वर्णन मिलता है इस संबंध में स्वतंत्र लेख द्वारा प्रकाश डाला जायगा अतः लेख-विस्तार भय से यहां उदाहरण नहीं दिये जा रहे हैं।

परवर्ती संस्कृत काव्य आदि ग्रन्थों में प्राचीन वर्णनशैली को और अधिक आगे बढ़ाया गया है। जैसे देश वर्णन, नगर वर्णन, हाट बाजार वर्णन, राजा और राज सभादिक का वर्णन,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फिर राणियों और अन्य नगर की रमणियों के रूप का वर्णन, वनखंड, आराम, उद्यान, महल आदि के वर्णनों के साथ साथ छः ऋतुओं, उत्सवों और क्रीड़ाओं आदि का वर्णन भी कविगण अपने काव्य में अवश्य ही करते हैं। सुकवि वर्णन-योग्य प्रसंगों को कभी खाली हाथ नहीं जाने देते, जिससे काव्य में सजीवता व सरसता आ जाती है और श्रोता एवं अध्येता विविध रसों का पान कर निमग्न हो जाते हैं। पद्य ग्रन्थों की भांति गद्य काव्यों (कादम्बरी, तिलकमंजरी आदि) में भी स्थान-स्थान पर वर्णनों की छटा देखते ही बनती है। कहीं-कहीं तो वर्णन बहुत ही चमत्कारिक एवं कलापूर्ण पाये जाते हैं।

कई ऐसे स्वतंत्र ग्रन्थ भी भारतीय-साहित्य में पाये जाते हैं। जिनका उद्देश्य केवल वर्णन करने का ही होता है। ऋतुसंहार आदि ऐसे ही काव्य हैं। कतिपय ऐसे संग्रह-ग्रन्थ भी उपलब्ध हैं जिनमें भिन्न भिन्न वस्तुओं के वर्णन संग्रहीत मिलते हैं। उनके वर्णनों का उपयोग दूसरे ग्रन्थ प्रणेता अपनी रुचि के अनुकूल घटा बढ़ा कर स्वरचित ग्रन्थों में कर लेते हैं। कथा-चरित्र आदि ग्रन्थों में स्थान-स्थान पर ऐसे सजीव वर्णन जुड़ जाने से उसकी शोभा बहुत अधिक बढ़ जाती है[1]।

संस्कृत-प्राकृत की भांति लोक-भाषाओं में भी ऐसे वर्णनात्मक ग्रन्थ समय समय पर रचे गये हैं। मैथिली भाषा का "वर्ण रत्नाकर" ग्रन्थ इसी प्रकार का है। यह डा. सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या और बाबू मिश्र द्वारा संपादित हो कर एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता द्वारा सन् १९४० में प्रकाशित हुआ था। यह १५ वीं शती की रचना है और इसमें भेद-प्रभेद रूप वर्णन ही अधिक है। संजीव कथात्मक महत्वपूर्ण वर्णन ग्रन्थ सं. १४७८ में माणिक्यसुन्दरसूरि रचित पृथ्वीचंद चरित्र है। लोकभाषा में वर्णनों का ऐसा सुन्दर संदर्भ ग्रन्थ अन्य नहीं है। इसका सार्थक व अपर नाम "वाग्विलास" रचयिता ने स्वयं रखा है। क्योंकि पृथ्वीचन्द्र के चरित्र की अपेक्षा इसमें वाग्विलास रूप चमत्कारिक वर्णनों की ही प्रधानता है। पाठकों को इसकी शैली का रसास्वाद कराने के लिये दो चार उदाहरण नीचे दिये जाते हैं।

वर्षाकाल वर्णन—

"विस्तरिउ पर्षाकाल, जे पंथी तणउ काल, नाठउ दुकाल।
जिणिइ वर्षाकालि, मधुर ध्वनि मेह गाजइ, दुर्भिक्ष तणा भय भाजइ,
जाणे सुभिक्ष भूपति आवता जय डंका बाजइ।
चिहुं दिशि बीज झलहलइ, पंथी घर भणी पुलइ। बीपरीत आकाश, चन्द्र सूर्य परियास।
राति अंधारी, लवइं तिमिरि। उत्तर नऊ उनयण, छायउ गयण। दिसि घोर, नाचई मोर।
मधुर वरसइ धाराधर। पाणी तणा प्रवाह खलहलइ, वाडी ऊपर वेला वलइ।
चीखलि चालतां सकट स्खलइं, लोक तणा मन धर्म ऊपरि वलइ।
नदी महापूरि आवइं, पृथ्वी पीठ प्लावइं। नवा किसलय गहगहइं, वल्ली वितान लहलहइं।
कुटुम्बी लोक माचइं, महात्मा बैठा पुस्तक वांचइं।
पर्वत तउ नीझरण विछूटइं, भरिया सरोवर फूटइं।
इसिइं वर्षाकालि।

---

१. कविवर सूरचन्द्र के 'पदैक विंशति' कथा-संग्रह ग्रन्थ की अपूर्ण प्रति हाल ही में मुनि श्रीजिन-विजयजी से अवलोकन को मिली है। मूल ग्रन्थ संस्कृत में है, पर स्थान-स्थान पर सुन्दर वर्णन राजस्थानी-गद्य में दिये हैं। वे कवि के स्वयं रचित भी हो सकते हैं, पर कई वर्णन अन्य प्राप्त प्रतियों वाले भी हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वसन्त ऋतु वर्णन-

तिसिइ आविउ वसंत, हुउ शीत तणउ अंत।
दक्षिण दिशि तणउ शीतल वाउ वाइं विहसइं वणराइं।

दोहा

सव्वे भला मासड़ा, पण वइसाह न तुल्ल।
जे दवि दाधा रूखड़ा, तीहं माथइ फुल्ल ॥

मउरिया सहकार, चंपक उदार।
बेउल बकुल, भ्रमर कुल संकुल, कलरव करइं कोकिल तणा कुल।
प्रसर प्रियंगु पाडल, निर्मल जल, विकसित कमल।
राता पलास, सेवत्री वास। कुंद मुचकुन्द महमहइं, नाग पुन्नाग गहगहइं।
सारस तणी श्रेणि, दिसि वासीइं कुसुम रेणि। लोक तणे हाथि वीणा, वस्त्राडंबर झीणा।
धवल शृङ्गार सार, मुक्ताफल तणा हार। सर्वांग सुन्दर, वन माहि रमइ भूप पुरंदर।
एकि गीत गवारइं,, दान दिवारइं। विचित्र वाजित्र वाजइं, रमलि तणा रंग छाजइं।
एकि वाविइं फूल चूटइं, वृक्ष तणा पल्लव खूंटइं। हिंडोलइं हींचइ, झीलतां वादिइं जलिइं सींचइं।
केलिहरां कउतिग जोअइं, प्रीतमंत होअइं।
वनपालकि अवसर लही, ववंत अवतरिया तणी वार्ता कही ॥[1]

उपमा व तुलना आदि प्रधान विभिन्न शैली के वर्णन-

१. तुम्हें कहवउ धर्म पणि नथी जाणता मर्म। सांभलउ-वन ते वणवीइ जे वृक्षवंत, नदी ते जे नीरवत, कटक ते जे वीरवंत, सरोवर ते जे कमलवंत, मेघ ते जे समावंत, महात्मा ते जे क्षमावंत, प्रसाद ते जे धजावत, धर्मी ते जे दयावंत, आदि।

२. माहरी लक्ष्मी इह सरीखी हुइ। तउ कहीइ-
आभ तणी छांह, कुपुरिस तणी बांह,। दासीनु स्नेह, शरद कालनु मेह।
थोड़ा मेह नउ नेह, बहिलु आवइ छेह।

३. जेटलु अंतर राणी मनइ दासी, जेतलु अंतर दही नइ छासि,
जेटलु अंतर मधुर ध्वनि नइ धासि। जेटलु अंतर समुद्र नइ कूया,
जेटलु अंतर सोनइया नइ रूपा, जेटलु अंतर बाप नइ फूपा।
जेटलु अतर लूण नइ कपूर, जेटलइ अंतर खजुइआ नइ सूर।
जेटलइ अंतर डाकिली नइ तूर, जेटलइ अंतर खाल नइ गंगा पूर।
जेटलइ अंतर साधु नइ चोर, जेटलइ अंतर हार नइ दोर।

४. सूर्य पाखइ दिवस नही, पुण्य पाखइ सौख्य नहीं,
पुत्र पाखइ कुल नहीं, गुरु उपदेश पाखइ विद्या नहीं,
हृदय शुद्धि पाखइ धर्म नहीं, भोजन पाखइ त्रिपति नहीं।
साहस पाखइ सिद्धि नहीं, कुलस्त्री पाखई घर नहीं।

---

१. इस वाग्विलास ग्रन्थ के कई वर्णन प्रस्तुत लेख में दिये गये अन्य वर्णनात्मक ५ प्रतियों में भी ज्यों के त्यों मिलते हैं व कई वर्णनों में शब्दों का बहुत अधिक साम्य पाया जाता है। भेद-प्रभेद रूप वर्णनों को इस लेख में उद्धृत नहीं किया गया, जैसे कि जातियों का प्रसंग आया तो वहां ८४ जातियों के नाम हैं। आदि आदि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. जिमि बिलंब बिणसइ काज, कुठाकुरी बिणसइ राज।
कुसंगति बिणसइ संतान, स्वर पाखइ बिणसइ गान।

वर्णनात्मक ग्रंथों के प्रति मेरा आकर्षण–

श्वेताम्बर जैन समाज में कल्पसूत्र का वाचन प्रतिवर्ष पर्युषणों में होता है। बचपन से ही मैं उसे सुनता रहा हूं। बीकानेर में उसकी खरतरगच्छीय 'लक्ष्मीवल्लभी' टीका ही विशेष रूप से बांची जाती है। इस टीका में व इससे पूर्ववर्ती 'कल्पलता' टीका में भगवान महावीर के जन्माभिषेक के प्रसंग में भोजन विच्छित्ति आदि का लोकभाषा में सरस वर्णन आता है। जो मनोविनोद के लिए अच्छा है। उसमें विस्तार से जानने के लिए "वाग्विलास"* ग्रन्थ का निर्देश होने से उक्त ग्रन्थ के प्रति मेरा आकर्षण बढ़ा। जब उस ग्रन्थ के दो चार वर्णन जो इस संस्कृत टीका में दिये हुए हैं वे इतने सुन्दर हैं तो वाग्विलास ग्रन्थ में तो न मालूम ऐसे कितने सुन्दर वर्णन संगृहीत होंगे। यही उस आकर्षण का कारण था। कुछ बड़े होने पर (साहित्यान्वेषण एवं अध्ययन की वृद्धि के समय) उपर्युक्त माणिक्यसुन्दरसूरि का 'पृथ्वीचन्द्र चरित्र' देखने में आया जो बड़ोदा ओरियंटल सिरीज से प्रकाशित "प्राचीन गुर्जर काव्य संग्रह" और मुनि जिनविजयजी द्वारा संपादित "प्राचीन गुजराती गद्य संदर्भ" में प्रकाशित हुआ है। इस चरित्र का अपरनाम 'वाग्विलास' भी है। यह जानने पर वाग्विलास ग्रन्थ का स्वरूप तो स्पष्ट हो गया, पर लक्ष्मीवल्लभी टीका में उल्लिखित भोजन विच्छित्ति आदि का वर्णन इस ग्रन्थ में नहीं मिलने से वह वाग्विलास नामक ऐसा ही कोई अन्य ग्रन्थ होना चाहिये–यह अनुमान किया गया। पर कई वर्षों तक ऐसा कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हुआ। फिर क्रमशः ५ ग्रन्थ उपलब्ध हुए जिनका परिचय प्रस्तुत लेख में दिया जा रहा है।

१ कुतुहलम्—

बीकानेर के जैन ज्ञान-भंडार में एक 'कुतुहलम्" संज्ञक प्रति सर्व प्रथम मिली जिसमें गज नाम, सभा नाम, वस्त्रनाम आदि नाम और वर्षाकाल आदि का कुछ वर्णन था। इसके अन्त में 'इति कौतूहलम्' शब्द लिखे थे जिससे चमत्कारपूर्ण वर्णन वाली रचना को कौतूहलोत्पादक होने से 'कौतूहल' नाम दिया गया प्रतीत हुआ। इस ग्रन्थ के चार वर्णन पाठकों की जानकारी के लिए यहां दिये जाते हैं।

१. वर्षाकाल वर्णन–

ऊमटी घटा, बादला होई एकठा, पड़ई छटा, भाजइ भटा, भीजइ लटा।
मेह गाजइ, जाणे नाल गोला बाजइ, दुकाल लाजइ, सुभाव, इन्द्र राजइ, ताप पराजइ।
बीज झबके, मेह टबके, हीया दबके, पाणी झभके, नदी उबके, वनचर लबके, आभो अबके।
बोलइ मोर, डेड करे शोर, अंधार घोर, पेइसर चोर, भीजई ढोर।
खलके खाल, वहै परनाल, चूये साल सांप गया पयाल।
झड़ लागी, लोक दसा जागी, घर पड़े, लोक ऊंचा चड़ै। आभा राता, मेह माता।

२. एता किसी काम का नहीं–

ऊनालानो मेह, दासीनों नेह, रोगीनी देह, स्त्री विण गेह।
पर घरनी छासि, कंठ विहूणो रासि, अवसर बिना भास, कुकुलनो दास।
फूसनी आग, जमाइनो भाग, काचो ताग, पाणीनो साग।
दीवानो तेज, दुर्जननो हेज। उधारानो वैपार, रांडनो सिणगार। पावइयानो प्यार।

---

* अथ पुनः वाग्विलास ग्रन्थाइ भोजन युक्ति कथ्यते(पंचम व्याख्यान)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. विशेषताएँ–

प्रथम पिंड पाणीरो, रूपो तो जावररो, दरसण तो परमेसररो. ताल मानसरोवररो, हस्ती तो कजलो वनरो: पदमणी तो सिंहल द्वीपरी, चतुराई गुजरातरी, वासो तो हिंदुस्तानरो, स्वाद तो जीभरो, मतो तो पंचांरो, खेती तो बाड़री, घीणो तो भैंसरो, देणो तो माथारो, गाळ तो मातारी, चूड़ो दांतरो, आदि-आदि।

४. ये वस्तुएँ भली–

अमल खारा भला, खड्ग धारा भला, हेत मांरा भला, धात पारा भला, हाथ वहता भला, माल खरचता भला, दांन मांनसूं भला, काथा पानसूं भला। साहिब जससूं भला, खेत नीचा भला। घर ऊंचा भला। रांणी, पांणी पातळा भला। अमल जोरका भला। निसांण थोरका भला। इत्यादि।

२–सभा शृङ्गार

इस प्रति की प्राप्ति के पश्चात् 'सभा-शृङ्गार' नामक ग्रन्थ की एक प्रति सं० १७६२ में महिमा विजय लिखित ७५९ श्लोक परिमाण की मिली जिसमें पूर्व प्रति से वर्णन बहुत अधिक व सुन्दर प्राप्त हुए। यहां उसमें से दो चार वर्णन देकर हमें संतोष करना पड़ता है। वैसे इस ग्रन्थ में बहुत से वर्णन पाठकों का मनोरंजन कर सकते हैं। वर्षा का वर्णन इसमें दो बार आता है। जिसमें पहला वर्णन उपर्युक्त प्रति जैसा है, पर अधिक विस्तार से है। दूसरा वर्णन इस प्रकार है–

१. वर्षाकाल हुउ, ग्रहितो रहिउ कुयउ, वावि पाणी भरता रया। बादल उनया।
मेघ तणा पाणी वहै, पंथी गामइ जाता रहै। पूर्व ना वाजइ वाय, लोक सहु हर्षित थाय।
आकाश धड़हड़ै, खाळ खड़हड़ै। पंखी तड़फड़इ, वडा माणस लड़थड़इ,.
काठ सड़इ, हाळी हळ खड़इ। आपणा घरि कादम फेड़इ, बीजा काज मेड़इ।
पार पार न लीइं, साध विहार न करीइं।
अनेक जीव नीपजै, विविध धान्य ऊपजै। लोकनी आस पूजै, गाय भैंस दूजै। इत्यादि।

२. धनी और निर्धनी का अन्तर–

निर्धनी वर्णन

ऊंचो तो एरंड, खाटरो तोहि नाग, घणो भोळो लांफु, बहु बोले तो लबोळ। घणुं जीमे तो भूखो, थोड़ो जीमे तो अभोगियो। भला वस्त्र पहिरे तो इतर, सामान्य पहिरे तो दरिद्री। गोरो तो पांडु रोगियो, काळो तो कबाड़ी। व्यापारी तो भड़ङ्क, बीखै तो सर्वधन बाह्य, विषयहीन तो नपुंसक।

धनी वर्णन

ऊंचो तो अर्जुन बाहु, वामनो तो वासुदेव, गोरो तो कंदर्प, कालो तो कृष्ण, घणो जीमे तो अहारी, थोड़ो जीमे तो पुण्यवंत, ऊंचा वस्त्र पहिरे तो राजेश्वर, सामान्य पहिरे तो चूमो, दाता तो कर्णावतार, जो न दे तो छाना पुण्य करइ, घणो बोले तो भोळो, न बोल तो मितभाषी, जो लंपट तो भोगी, जो नपुंसक तो परनारी सहोदर।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. प्रभात व संध्या वर्णन-

प्रभात

हवइं कूकड़ा बोल्या, लगारेक नींदथी डोल्या ।
नींदइं झकोल्या, मूकी संभोगनी लोल्या, स्त्री भर्त्तार डमडोल्या ।
आवइ नारि, बारि उघारि. राति अंधारि । दही संभाल्यूं, विलोवणो चाल्यूं ।
रातिज दीसै छै, घटी पीसइ छैं । इतरइ संख वाग्या, झवकीने जाग्या ।
तितरई झालर वागी, स्त्रियो पण जागी, उठवाने लागी ।
मुंहड़े बोली-उठो भाई ! जागो भाई ! राति विहाई ! प्रह पीळी थई !
राति डरी गई ! चड़कलड़ी चहचई ! मालण वाड़ी गई !
नोबत गड़गड़े छै, पारसी भणे छै, खुदा खुदा करे छै ।

संध्या

सूरजना किरण पच्छिम ढल्या, पंथी सगां नइ मिल्या ।
विरहीना हीया वल्या, गोवाळ घरे वल्या ।
चौपूं लाव्या, आप आपना घरे आव्या ।
पंखी टळवल्या, माळे जावा ने खळभल्या, चोर सळसल्या, आवइ हळफल्या ।
आकास राता, मेह करि माता । क्यां किण नीला, क्यां किण पीला ।
नाना प्रकारना रंग, भला सुरंग । वाधै अनंग, जंगी करै जंग, भोगी पीये भंग,
स्त्री वंछै संग । आदि ।

४. शीतकाल वर्णन-

भोगी भमरनै प्यारो, जोगीश्वरानै न्यारो ।
महा टाढो, वाजइ गाढो, जावानो नहीं मिळै किहां सांढो ।
दाहे रूंख बाल्या, सज्जन ही साल्या । स्त्री सूं धणी गोठ, खावा लाडू सोंठ ।
वासइ सगड़ी धखइं, अवल चीज भखइं, ठारे करि ठर्या, हाथ सोड़ में धर्या ।
हाथे न लेवइं वस्त्र, आधा ओढै वस्त्र । लोक सीसिआट करइं, चौपूं उछरइं, ताढइ न चरइं
धूजे बाळगोपाळ, विरहीमां पड़इ हवाल, सहु बैठा चौसाल,
साचव्या देहरा नइ पोसाळ, एहवो सीतकाळ ॥

५. उनालो-

गयो सियाळो आयो ऊनाळो । लू वाजइ छै, सीत लाजइ छै, पग दाझइ छै ।
तावड़ो तपीजइ छै । पंथी पसीजइ छै, चन्दण घसीजइ छै ।
रूंख पात झड़इ छै, पणिहार पांणी माटइ लड़इ छै ।
वाव कूवा सूके छै । पंथी मारग मूकै छै, कंठ सूकै छै । आदि २ ।

६. अंधारी रातरो वर्णन-

सांझ परी गई, गुदड़ी परी थइ, दीवइ जोति भई ।
चोहटइ भीड़ मिटी, व्यापारीनी महिमा घटी, हाटइ ताला जड़इ ।
आप आपरै घर आया, कूंची लाया । स्त्री सोलह सिंगार सजै, गणिका जारने भजै ।
हाथे हाथ न सूझइ, कोई कोने न बूझइ, विचार माणस मूझइ ।
चोर ते धसइ छैं, वूतरा ते भुसइ छैं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. वस्तु स्वभाव–

चंद्रमाने कुण शीतल करइ, अग्निने कुण दाह करइ ।
दूधने कुण धोळे छै, समुद्रने कुण हिलोळे छै ।
मयूर पखनै कुण चितरै । लक्ष्मीने कुण नोतरे, गंगोदक कुण पवित्र करे ।
हंसने गति कुण सिखावे, वृहस्पति नै कुण बंचावे । कृपणनै कुण संचावै ।
तिम सज्जननै स्वभावे जाणवो ।

८. शोभा–

कुल वहू ते शीळे शोभै, रजनी चन्द्रमा शोभै, आकाश सूर्य करि शोभै,
वदन चंदनै शोभै, कुल सुपुत्रे शोभै ! कटकइ राजा शोभै, इत्यादि ।

९. न शोभे–

जिम लवण रहित रसवती, वचन रहित सरस्वती, कण्ठ रहित गायन, नृत्य रहित वादन,
फल रहित वृक्ष, तप रहित भिक्षुक । वेग रहित घोड़ो, केस रहित मोढ़ो,
वस्त्र रहित सिणगार, स्वर्ण रहित अलंकार । इत्यादि ।

१०. परिणहारी–

वइरांनी भीड, हुई पीड़, तुटई चीड़ ।
एक उंतावळि दौड़इ छै, एक माथइ वेहडु चउड़इ छै, लूगडू ते माथे ओढई छै,
वेहडू ते फोड़इ छै । एक एक नइ अड़इ छै, धडाधड़ पड़इ छै-मांहो माह लड़इ छै,
हवइ नानी लाडी, चीखलथी पड़इ आडी, बीजानी भीजइ साडी, ते माटे करइ राडी,
सोक सोकनी करइ चाडी, डीलै जाडी, खीजइ भाडी, सासूइ पाछी ताडी ।
एक परिणहारी भमरइ छै, वातां ते करइ छै, निजर ते अरइ-परइ फिरे छै,
एक एक नइ हसै छै, पाणी मांहे धसै छै । आदि ।

३–मुत्कलानुप्रास

उपर्युक्त प्रति प्राप्ति के पश्चात् दो वर्ष हुए जैसलमेर के जैन ज्ञान-भंडारों का पुनरावलोकन करने के लिए जाने पर वैद्य यतिवर लक्ष्मीचन्द्रजी के संग्रह की अपूर्ण प्रतियों में १६ वीं शताब्दी के लिखे हुए ८ पत्र प्राप्त हुए, जिनमें १०८ वर्णन लिखे हुए हैं । इनमें से कुछ वर्णन संस्कृत भाषा में हैं, पर अधिकांश राजस्थानी में ही हैं । यहां इस प्रति से भी कुछ वर्णन उद्धृत किये जा रहे हैं । प्राप्त वर्णनात्मक प्रतियों में यह सबसे प्राचीन है ।

१. रसवती वर्णन–

उपलइ मालि, प्रसन्नइ कालि । भला भंडप निपाया, पोयणी नै पाने छाया ।
केसर कुंकमना छड़ा दीधा । मोतीना चौक पूर्या ।
ऊपरि पंच वर्णा चंद्रवा बांध्या, अनेक रूपे आछी परियछीना रंग साध्या ।
फूलांना पगर भर्या, अगरना गंध संचर्या ।
धान गादी चातुरि चाकळा, बइसण हारा बइठा पातळा ।
सारुवा घाट, मेलाव्या आगलि पाट । ऊंची आडणी, झलकती कुंडली ।
ऊपरि मेलाव्या सुविसाल थाळ, वाटा वांटली, सुवर्णमई कचोली ।
रूपानो सीप ढूकी, इसी भांति मूकी । आदि २ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फिर विविध रसवतियों के नाम हैं। इससे प्राचीन खाद्य-पदार्थों के नामों की विस्तृत विगत मिल जाती है।

२. विरहिणी–

किसी एक विरहणी हुई विरहावस्था, आहार ऊपरि करइ अनास्था।
सर्व सिंगार, मानि अंगार। तिणइ अबला(अंतर्गत) फूला कीधा वेगला।
चंद तपइ पान, थयां विखवान। विरहानल प्रज्वलइ अंगु, सखिजनसूं विरंगू।
एहवऊं कांई थ्यूं विग्र चित्तू, न वुलगई गीत्तू। न कुणहीसूं हँसइ, सदा नीससइ,
बोलावि खीजइ, विहाड़इ दिहाड़ देह खीजइ। आदि २।

३. वर्षा–

आसाढ संसादु मेघ आव्या, कुणाइए नइ मनि उछरंगि न भाव्या।
कालंबिणी वली, जगत्रइ नइ मनि रली। उत्तर वाय वाज्या, आकाश मेघ गाज्या।
कूडा बहूक्या, केवडा महक्या। कुद उलस्या, करसणि हरख्या।
आंब महमह्या, मयूर गहगह्या। बप्पिहा वासइं, विरहणी उसासइं।
बूठा मेह, उलस्या स्नेह। नदी महा पूरि वहिवा लागी, देस विदेसनी वाट भागी।
जल भरिया निवाण, पृथ्वी प्रवर्ती मेहनी आण। आदि।

४. हेमत ऋतु–

अति वसंतु, आवियो रितु हेमंतु। जिहां सीयला भर, सेवइं निवीत घर।
तुलाइए पुढीइ, भली तुलाइ उढीइ। अति ही मोटी, प्रलंब दोटी।
ओढि वेसइं, सीयाल हुई हसइं।

शरद ऋतु–

उन्हाला नउ भाई अनिलेइ वेश्वानर नइ अंगु कांई न जाणीइ।
किहाई हूंतउ, दिसि सप्रकास शरद ऋतु पहुतउ। फूल्या कास, अगस्ति ऊगउ। आदि।

५. वसत ऋतु–

विरहणी हसंतु, पुहतउ वसंतु। फूलइ वणराइ, नगर माहि न फिराइ।
मेल्हइ वैराग, खेलइ फाग। अति सूविसाल आंबानी डाल।
तिहा वाधहि हिंडोळा, रमइ नर भोळा। आदि।

६. ग्रीष्म ऋतु–

महा पित्र नउ आळउ, आव्यो उन्हाळउ। लूय वाजइ, कान पापडि दाझइ।
झाझूआं वलइं, हेमाचलना शिखर गळइं। निवाणे खुटइ नीर, पहिरइ आछा चीर।
एवडऊ ताप गाढउ, भावइ करवउं टाढउ। वाइ वाजइ प्रबल, उडइ धूलिना पटल।
सीयालई हुन्ति मोटी रात्र, ते नान्ही थई रात्रि। सूर्य आपण पइ तापइ, जगत्र संतापइ।
जे जीव थल चरइ, तेहि जलासय अनुसरइ।

७. कलिकाल वर्णन–

इणइ अवसर पिणी काळि, समइ समइ अनंत गुणि हाणि।
रस निरस्वाद, लोक स्तोक मरयाद। अविवेकु वासु, धर्मवंत नासु।
अतुच्छ मच्छर, करकस स्वर, तुच्छ धर्म रगु, गुरुजन प्रसंसा भंगु।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुकृत करणे प्रमादु, बहु मृषावादु । सांप्रति वर्तइ-इसउ कलिकालु, जिहां को नहीं कृपालु ।
दरसण उच्छृङ्खलु । आर्यजन स्वल्प, घणा कुविकल्प ।
बहु भाराक्रांत देश मंडल, पृथ्वी मंद फल । साधुलोक आंकुल, राजा तुच्छ बल । आदि २ ।

यह प्रति अपूर्ण प्रतीत होती है । किनारे में ग्रन्थ का नाम 'मुत्कलानुप्रास' लिखा है जो ऐसी रचना का सार्थक व प्राचीन नाम प्रतीत होता है ।

४-वर्णनात्मक बड़ी प्रति

जैसलमेर से आते समय बड़ोदा युनिवर्सिटी के गुजराती भाषा के प्राध्यापक डा० भोगीलाल सां सरा मेरे साथ बीकानेर आये । साहित्य-गोष्ठी के प्रसंग में जब ऐसी रचनाओं की चर्चा चली तो आपने भी ऐसी एक प्रति मिली बतलाई । मैंने उसे उनसे मंगवा कर प्रतिलिपि करवा ली । उपलब्ध प्रतियों में यह सबसे बड़ी है । इसके ४० पत्र हैं । फिर भी अपूर्ण है । लेख-विस्तार भय से इस ग्रन्थ के विशेष उद्धरण न दे कर कुछ वर्णन ही दिये जा रहे हैं—

१. अथ भाद्रपद मास, पूरइ विश्वनी आस । लोक नइ मनि थाइ उल्लास ।
जिह नइ आगमि वरसइ मेह, न लाभइ पाणीनो छेह । पुनर्नव थाइ देह ।
भला हुइ दही, परीषयां कोई कहे नवि सही । पृथ्वी रही गहगही ।
साचई कादम माचई, करसणि नाचइ । नीपजइ सातइ धानि, देखतां प्रधान ।
नासइ दुकाळ, भाद्रवे ढूंढइ सुगाळ । आदि ।

२. गंगा पाखइ जल नहीं, बंधु पाखइ बल नहीं ।
मित्र पाखइ हेज नहीं, रवि पाखइ तेज नहीं ।
पुत्री जन्म-

३. जउ पहिलउ बेटी जाई, माइ बाप काळ मुंहा थाइ ।
जसु घर बेटी आवी, पूठि लागि चिन्ता आवी ।
बेटी घर सम्महो पाउ चालइ, दरिद्र बाटि दिखाड़इ ।
जां हुई बालि, ताउं हुइ लालि पालि ।
हुई वडेरी, थइ अनेरा केरी । अवाटइ चालती, देह मरोड़इ हालती ।
कुल कलंक आणइ, अणहुंती कलि सामूहि ताणइ ।
आपणुं घर सोमइ, पिरयुं घर पोसइ । आपणु कुल ईखइ, पिरायुं भूखइ ।
घणइ न तूसइ, थोड़लइ अपमान रूसइ । न जाइ बेटी, अनरथ खांणि भेटी ।

५-महत्वपूर्ण अपूर्ण प्रति

उपर्युक्त प्रति के बाद जोधपुर के केशरियानाथ के भंडार का अवलोकन करते समय एक अपूर्ण प्रति प्राप्त हुई जो १७ वीं शताब्दी की लिखी हुई है । इसमें १५७ वर्णन पूरे और १५८ वां अधूरा रह गया है । कई वर्णन बड़े ही अच्छे हैं । अतः चार-पांच वर्णनों के देने का लोभ संवरण नहीं किया जा सकता—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१. कलिकाल—

सम्प्रति वर्त्तई कलिकाल, मह्रा कूड़ कपट काल।
बाड़ बबाड़ साक्षात् हलाहलि, सासु बहु परस्पर कलि।
गुरू शिष्य जाइ बाथ बलि, अन्याय कुरीति देश मंडलि।
राज कुळ कंधा खलि, राय रांणा वर्त्तइ छलि।
क्षत्रिय नासइं बीठइ वलि, भला माणस हुइं तांतलि।
पृथवी मंद फल, मंत्र सर्व निःफल, जड़ी मूळी रस विकल।
कुल स्त्री निरंगल, न्यायी राय तुच्छ दल। चरड बहुल, वाट पाडा तणा कलकल।
धर्मगुरु चपल। पापोपदेस कुसल।
मिथ्यात्व निश्चल, लोक माया बहुल, अल्प मंगल।
इणि कुकालि, अवसर्पिणी काली। अल्प क्षीर गाइ, निस्नेह माइ।
भक्ष भोज निरास्वाद, स्त्री तणी जाति अमर्याद।
रहस भेद, रसच्छेद। क्रूर संचना, गुरु बंचना।
आउखां स्तोक, निवाणिजा लोक। देव वातली, भक्ति पातली।
अल्प मृत्यु, पगि पगि अकृत्यु।
बाप बेटी तणा गरथ सातइं, आपणा छोरू कुक्षेत्रि घातइं।
पाप जउ, धर्मी खउ। साचउ अवगणियइ, झूठउ वखाणियइ।
गुरु शिष्य तणउ खमइ, बाप बेटा नमइ।
सासू पाटलइ, बहू खाटलइ। ए कलि तणा भाव।

२. विरहणी—

हार त्रोड़ती, वलय मोड़ती। आभरण भांजती, वस्त्र गांजती।
किंकणी कलाप छोड़ती, मस्तक फोड़ती। वक्षस्थल ताड़ती, कंचुउ फाड़ती।
केश कलाप रोलावती, पृथ्वी तलि लोटती।
आंसू करी कंचुक सींचती, डोळली दृष्टि मींचती। दीन वचन बोलती, सखीजन अपमानती।
थोड़ई पाणी माछळी जिम तालोचलि जाती, शोक विकल थाती।
क्षणि जोयइ, क्षणि रोयइ। क्षणि हसइ, क्षणि रूसइ।
क्षणि आक्रन्दइ, क्षणि निंदइ। क्षणि मूझइ, क्षणि बूझइ।
तेह तनु, सतापइ चंदणु। कमलनाल, पुण मेलइ झाल।
चन्द्रकांति ज्वलइ, पुष्प शय्या बलइ। हार भावइ अंगार, कदली हर, मानइ जमहर,
जे जल सीकर, ते उद्वेग कर। जउ शीतलोपचार, ते करइ विकार।
इणि परि प्रज्वलित, स्नेह पटल, विरहानल नीपजइ।

३. युद्ध वर्णन—

बिहु पखा वृहत् पुरुष सांचरिया, क्षेम मूड़ाविउ।
बिहु गमा मनद्ध-बद्ध नीपना, सुभटे जरहि जीणसाल लीधी।
मयगल, गुडिया, सुडादंडि मुहवडि धातिया।
पच वल्लह किमोर पाखरिया, जाति तुरंगम पमाणिया।
वीर पुरुष महासुभट प्रगुण नीपना, चक्रव्यूह, गरुडव्यूह तणी रचना नीपनी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आगेवाणी सींगड़िया तणी श्रेणी, पछेवाणी फारक तणी पंक्ति ।
ततो हस्ती घट सीत्कार करती, पाखरियानी श्रेणी हैखारव मेल्हती ।
पंच शब्द तणा निर्घोष जमला उच्छलइ, रण तूरी वाजइं ।
निसाण थाय गाजइं । बिहु गमे भाट पड़इं ।
बिहुं गमे सुभट तणा सिंघनाद हुवा लागा, सिल्ल, भल्ल, तीर, तोमर, नाराच प्रहरण पड़वा लागा
बिहुं पखा हाकि हाकि, हिणि,-हिणि, मारि-मारि ।
नाठउ-नाठउ, भागउ-भागउ । इणि परि सुभट शब्द नीपजावइ ।
गयण आछादिउ । सूर्य किरण रूंध्या ।
तेतळ समइ- फूटेवा लागा कपाळ मंडळ, भाजेवा लागा घनुर्मंडल ।
जाएवा लागा शिरखंड, पड़वा लागी खांडा तणी झड ।
वाजिवा लागी सुभटनी काट कड़ि, नाचेवा लागा धड़-कबंध ।
पाड़िवा लागा ध्वज चिंध, प्रहार जर्जर कुंजर पड़इं ।
सुनासणा तुरंगम तड़फड़इं, भाले भरड़ीता गजेन्द्र अरड़इ ।
रीरीया करता राउत हथियार हूलइं, घाइ घूमिया सुभट ढळइं ।
पड़िया पाइक न ऊससीयइं । हिव हाथियां आश्वासीयइं ।
मउडउ धाम उडपडेइं । रैवंत रड़वड़इं ।
पड़िया पंचायणनी परि हाकइ, रोस लगि मुंछ मुंछ फरकावइ ।
रथ चक्र चांपी ती- किरोड़ि कड़हड़इ ।
भाग्यवंत जयलक्ष्मी वरइं, आपणउं काज करइ ॥ ११४ ॥

४. प्रभात वर्णन –

प्रभात समउ हुउ, अन्धकार फीटउ ।
गाय तणा गाळा छूटा, तारागण विरल हुउ , चन्द्रमा विछाय थिउ ।
कूकडां तणी उळि लवइ, देव तणा बार ऊघड़िया, प्राभातिक तूर्य वाजियां ।
राज भवनि वैतालिक पढइ, विलोणा तणा झरड़का उपजइं, पथिक मागि थया ।
ब्राह्मण तणे घरि वेद ध्वनि विस्तरी, धार्मिक लोक प्रतिक्रमण पर हूया ॥ १४८ ॥

५. ऊनालो –

उष्ण काल पहुतउ जिसि दावानळ तणी ज्वाला तिसि लू वाइं ।
जिसिउ बावन्न पळ तणउ गोळउ धमिउ हुई तिसिउ आदित्य तपइ ।
जिसी भाड़ तणी बेलू, तिसि भूमिका धगधगइ ।
मस्तक तणउ प्रस्वेद पान्ही उतरइ, धर्मि जीव लोक गलगलइ, श्रीमंतना चउबारां झळहळइं ।
जलद्रा शरीरि लगाड़ीयइं, गुलाब तणा अभ्यंग कीजइ, बावन श्रीखंड वसीयइं ।
चउदिसि वींजण फिरइं, द्राक्षा आंबिली पान कीजइ ।
कलम शालि तणा साधउरा करवा कीजइं । आछा कापड़ा पहिरीयइं ।
लूआ हण्यां पाणी पीजइं । १५० । (फिर संस्कृत श्लोक हैं) ।

जिन पांचों प्रतियों का परिचय प्रस्तुत लेख में दिया गया है– सभी जैन रचनाएं हैं। इनके अतिरिक्त १५ वीं और १६ वीं शताब्दी की अन्य तीन ऐतिहासिक तुकान्त रचनाएं हमारे संग्रह में हैं जिनमें से सं० १४८२ लिखित तपागच्छ गुर्वावली 'भारतीय विद्या' में प्रकाशित हो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चुकी है और जिनसमुद्रसूरि और शांतिसागरसूरि संबंधित १६ वीं शताब्दी के वर्णन 'राजस्थानी' भाग २ में प्रकाशित हो चुके हैं।

ऐसी ही कतिपय वर्णनात्मक रचनाएं चारण कवियों की प्राप्त होती हैं जिनमें से खिड़िया जगा की 'रतन महेशदासोतरी वचनिका' एशियाटिक सोसायटी कलकत्ता से प्रकाशित है और 'खीची गंगेव नींबावतरो दोपहरो' और 'राजान राउतरो वात वणाव' राजस्थान पुरातत्व मंदिर से प्रकाशित हो रहे हैं। ये दोनों भी महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं।

राजस्थान में लोकवार्ताओं को कहने का ढंग भी बहुत छटादार, वर्णनात्मक, तुकान्त और निराला है। उसका वर्णनीय प्रसंग साकार हो उठता है। बात कहने वाला जहां जहां भी प्रसंग मिलता है उसका वर्णन बड़े ही विस्तार से प्रसंग के अनुकूल करके श्रोताओं की अपनी ओर ऐसा आकर्षित कर लेता है कि वे अन्य सारी बातें भूल कर बात सुनने के रस में निमग्न हो जाते हैं। श्रोता रातभर उसी रस में सराबोर रहता हुआ समय का अन्दाजा भूल जाता है कहानी-कार छोटी सी बात को इतनी लम्बी और छटादार बनाये जाता है कि जिससे कई दिनों तक वह बात चलती ही रहती है। शहरी वातावरण अब इसके अनुकूल नहीं रहने से राजस्थान में बातों के कहने की जो विशेष शैली थी, अब लुप्त होती जा रही है। रसिक व्यक्ति गांवों में आज भी इसका रसास्वाद कर सकते हैं। प्रस्तुत लेख द्वारा विस्मृति के गर्भ में विलीन हो जाने वाली इस वार्ता-शैली और बातों को चिरस्थायी बनाने के लिए ध्यान आकर्षित किया जाता है। गुजरात में लोक-साहित्य और वार्तादि के संग्रह का जैसा अच्छा प्रयत्न हुआ है, राजस्थान के साहित्य-प्रेमियों के लिए भी अनुकरणीय है।

प्रस्तुत लेख में जैसी वर्णनात्मक रचनाओं का परिचय दिया गया है-खोज करने पर और भी कई रचनाएं मिल जाने की पूर्ण संभावना है। जैसा कि पहले कहा गया है उपलब्ध प्रतियों में तीन महत्वपूर्ण प्रतियें अभी अपूर्ण रूप में उपलब्ध हुई हैं। उनकी पूर्ण प्रतियें भी अन्वेषणीय हैं।

ऐसी वर्णनात्मक रचनाओं के विविध नाम प्राप्त हुए हैं। वाग्विलास, सभाशृङ्गार, मुत्कलानुप्रास, वचनिका-ये पुराने नाम तो मिलते ही हैं। स्व० देसाई ने तुकान्त की विशेषता को लक्ष्य करते हुए इनकी संज्ञा 'पद्यानुकारी गद्य' शैली बतलाया है। यद्यपि १५ वीं शताब्दी से पहले की कोई ऐसी रचना लोक-भाषा में अभी तक प्राप्त नहीं है, पर पृथ्वीचन्द्र चरित्र में इस ग्रन्थ से पहले भी यह शैली प्रचलित रही होगी ऐसा प्रतीत होता है। १६ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक राजस्थान और गुजरात की भाषा एक जैसी ही थी अतः इन रचनाओं में से सभाशृङ्गार में गुजराती भाषा का पुट अधिक देखा जाता है। प्रथम शुद्ध राजस्थानी में है और अवशेष तीन अपूर्ण रचनाओं की भाषा दोनों प्रान्तों के लिये समान सी होने से इनका रचना काल १६ वीं शताब्दी ही होना विशेष संभव है।

—श्री अगरचन्द नाहटा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खीची गंगेव नींबावतरो

दो-पहरो

गंगेव खीची काग भड़ां किंवाड़,
बैरियां जड़ां उपाड़,
जिणकी सेल कहूं वणाय,
सुणियां मन प्रसन थाय.

वरखा रितु लागी,
विरहणी जागी,
आभा झरहरै,
वीजां आवास करै.

नदी ठेवां खावै,
समुद्र न समावै.

पहाडा पाखर पड़ी,
घटा ऊपड़ी.
मोर सोर मंडै,
इंद्र धार न खडै.

आभो गाजै,
सारंग वाजै.

द्वादस मेघ नै दुवो हुवो,
सू दुखियारीरी आंख हुवो.

झड़ लागो,
प्रथीरो दळद्र भागो.

दादुरा डहिडहै,
सावण आणवैरी सिध कहै.

इसो समइयो वण रह्यो छै,
वरखा मंडनै रही छै.
बिजळी झिलोमिल करनै रही छै,
वादळां झड़ लायो छै.

सेहरां-सेहरां वीज चमकनै रही छै.
जाणै कुळटा नायका घरसूं नीसर
अंग दिखाय दूसरै घर प्रवेस करै छै.

मोर कुहकै छै,
डेडरा डहकै छै.

भाखरांरा नाळा बोलनै रह्या छै.
चोटड़ियाळ डहकनै रही छै,
वनसपतीसूं वेलां लपटनै रही छै.
परभातरो पो'र छै.

गाज-आवाज हुयनै रही छै,
जाणै घटा घणै हरखसूं जमीसूं,
मिलण आयी छै.

इसै वखत समइयैमैं
गंगेव नींबावत बोलै छै,
मनरी उमंग खोलै छै.
सैलां-सिकारांरो दुवो हुवो छै,
भाई अमराव साहणियांनै हुकम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हुवो छै
तयारी कीजै छै.

मन-जाणिया हथियार-पोसाख
लीजै छै.

घोड़ा दही कटोळसूं संपड़ाइजै छै,
फेर उजळै पाणी नहाइजै छै.
हजार घोड़ा तयार कीजै छै,
चौकड़ा-लगाम दीजै छै.

सू घोड़ा कुण जातरा छै, कुण रंग भांतरा छै ?—अैराकी आरबी तुरकी खंधारी ताजी सिकारपुरी धारी काछी माळवी हबसानी पूरबी टांघण पहाड़ी चिन्हाई—और ही अनेक जातरा घोड़ा तयार कीजै छै.

कुमेत नीला समंदा मकड़ा सेली समंद, भूवरबोर सोनेरी कागड़ा गंगाजळ नुकरा केला महुवा घूमरा हरिया लीला गुलदार पंचकल्याण पवण गुरड़ संजाब संदली सीहा चकवा अबलख सिराजी.

फेर ही अनेक रगरा घोड़ा तयार कीजै छै.

साखत जीण काढ़ीजै छै.

तिके जीण किण भांतरा छै—गुजराती कसमीरी कसूरी मारवाड़ी दखणी मिरजाई भटनेरी लाहोरी हजार-मेखी घणा रंग-रंगरो वनात मुखमल कलाबूती सोनै रूपैरा वणिया जीण हाजर कीजै छै.

जीण मांडजै छै.
केसवाळी रंग-रंगरी गुंथजै छै.
अगाड़ी-पछाड़ी खोलजै छै.

रेसमरी बागडोरांसूं आण हाजर कीजै छै.·····किसा हेक घोड़ा छै ?

बे पख भला, ऊचा अलला,
कटोरा नखा, आरसी सारीखा.
तिअंगला गाळा, मुठिया बील फळा.
निमंसी नळा, गोडा नाळेर फळा.
उर ढाल अंसा, कूकड़ कंध तैसा.
आंख पाणी मोती तवा,
लिलाड़का बेठा नवां.

जळ अंजळ पीवै,
कनोती लोय दीवै.
मगर लादक अछी,
छोटी पड़छी.
पूठ बाथां न मावै,
पूछी चवर दावै.
फीचा धनख जैसी,
काछ नारंगी तैसी.

अैसा घोडे राव चाकरांरै हाथां में काढणा.

सू मोर ज्यूं तंडव करै छै,
निकुली ज्यूं अंग भांजै छै,
अन ज्यूं उल्हसै छै.
भागा काला मांकड़ां ज्यूं झांफां भरै छै.

निरत कारण ज्यूं नाचै छै,
नट ज्यूं उळटां खावै छै.
डोरमे थका अेकी-बेकी करै छै.
आंखका गोसा सिन्धके जैसा.
मनका गंगाजळ,
सुकलीणी ज्यूं छदां ऊजळ.

अैसा हजार घोड़े राव आण हाजर हूवा छै.

तठा उपरायंत गंगेव नींबावतका भाई-भतीजा उमराव हजूरी पोसाखां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करै छै. कसूमल केसरिया हरी सबज सपताळू सोसनिया नारंगिया सपेत.

जाणं तिजाराकी वाड़ी फूली छै ऊपर उणहीज वरणरा हथियार बांधजै छै.

तरवार कटारी ढाल छूरी तरगस बंदूक बरछी गिलोल गोफण चूकमार. और ही भांत भांतरा आवध सझियां थका चौक पधारै छै.

सू किण भांतरा छै—
काल्हीरो कळस,
सतीरो नाळेर,
तोरण आखा,
कुंवारी घड़ारा वींद,
गाहड़रा गाडा,
फौजारा लाडा,
काचा कुंभ ज्यूं काया जाणै,
परायी छठी जागै,
रिड़तो तेज, भूखियो लोह लियां रहै,
काछ-वाच निकळंक.

तठा उपरायंत गंगेव नींबावत बाहर पधारै छै. सू किण भांतरो छै ?

ऊगतो सूरज,
पावासररो हांस,
कुंवरांपत कुंवर,
जळहर जबाध भोगी भंवर;
कसतूरियो म्रिघ,
लांघियो सिंघ;
सीळ गंगेव,
दुरजोधन अहमेव;
जुजठळ ज्यूं साच,
दुरवासा वाच;
ग्यानरो गोरख,
सहदेव ज्यूं सारी बात समरथ;
अरजुन ज्यूं बाण,
करण ज्यूं दान-पाण;
वसीस आखडीरो निवाहणहार,
वैरियां विभाड़णहार,
पर भोम पंचायण,
घण दियण, जस लियण,
कळायरो मोर,
सूंधै भीनै गात,

केसरिया पौसाख कियां, पांच हथियारां बांधां आण, घोड़ै असवार हुवै छै.

नगारै इक डंको वागो छै,
मीर सिकारानै हुकम हुवो छै.

बाज, जुररा, कुही, बहरी, सिकरा, लगड़, चिपक, तुरमती साथ लीजै छै.

चीतेवाणानै हुकम हुवो छै.
चीता साथ लीजै छै,
घोड़ारी पूठ तखतां ऊपर बैठा छै.
आंख्यां आडी कूल्है छै.
सकळायतरा पटा, रूपैरी भंवर कड़ी, रेसमरो डोर.

तिके चीता कठारा छै ? मरोटरा, आधोरा, देरावररा, रोहरा, थटैरै पहाड़ारां, ईडररा डूंगरांरा, जाळोररा पहाडांरा, पावररा थळांरा, पारकररा विहडांरा. इसा चीता साथ लीजै छै.

....हतरांनै हुकम हुवै छै. कुतांरा डोर छूटै छै. लाहोरी ताजी लूच वाग गिलजा पहाड़ी. जिकांरी मूडहथ मोह नाळ, हाथ भर नस, वड़ै पान जिसा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कान, ताजणासेद पूंछ, नाहरसा पंजा, बाघसो आंख, पालळी लीक जाडं आंठूं. इण भांतरा कुता. बनातो पटा, रुपेरी भंवरकड़ी, रेसमी डोर, कानांमें रूपै सोनेरा वेढला, गळैमें निजरा ताइत. इण भांत सूं आरण हाजर हुवा छै.

इकां वेहलां रहकलां ऊपर बैसाणजै छै. सू इका वेहला रहकला किण भांतरा छै ? गुजराती, सुरती, खँभाइची, भुज-नगरी, हेसारी, उजीणरा, बणिया घणे सीसूरा, पीतल लोह दांतरा जड़िया, लाल सलहटीरा गदरा बिछाया थका, चांदणी ढालिया थकां आरण हाजर हुवा छै. वेहलियांरी फुरणी बाज रही छै. जग घूघरा बाज रह्या छै. सू वेहलिया किण भांतरा छै ? थेट काकरेचरा छै, सोरठरा छै, हालाररा छै, सुवालखरा छै, देस-देसरा इकरंग सपेत छै. जांहरो सपेती आगै बगला ही मगसा नजर आवै, मंहदी सुरंगिया बनातरा मोहरा लाले सुतरी नाथा. रेसमरी रास, सींगा पीतळरी खोळी. बनाती झूलां घातियां रहकलां इकां खड़सलां जूता छ. सू हालियां थकां घोड़ांरी माम पाड़ै. इसा बेहली जूता रहकला इका खड़सल आरण हाजर हुवा छ.

तठा उपरायंत भोइयांनै हुकमं हुवौ छै. भूजाईरा वासण तयार कर रातो नाडी चालज्यो. सू वासण तयार कीजै छ. देगां, चरू, कढाई, कुड़छी, खुरपा, डहोला, झरहर, चालणी, थाळ, कटोरा, प्याला. ढकणी, लोटा, पाला, बाजोट. और ही सब छकड़ां गाडां घात जै छै.

तठा उपरायंत मौदियांनै हुकम हुवौ छै. भूं जाई मारू सारी ही वसत सीधो मीठाण वेसवार षरब लेय राती-नाडी चालज्यो, म्हे सिकार रम उण नाडी आवां छा. सू मोदी भोई तो पाधरा नाडीरै मारग वहीर हुवा छै. आप रमणेर मारग भाखरांनै खुडारै मारग चालिया छै. घोड़ारा पोडांसूं जमी गूंज रही छ. खेहरो डोरो आकासनै जाय लागो छ. घूघरमाळ घोड़ांरी बाज रही छै. हींस कलल होफ हुयनै रही छै. वहलियांरा घूघरां जंगारो झमकार हुयनै रह्यो छै. वहलांरा वांस पइयांरो खडबडाट हुयनै रह्यो छै. होकारा हुयनै रह्या छै. नगारै इक डंको हुयनै रह्यो छ सहनायां में मलार राग हुयनै रह्यो छ. निसाण मुहडं आगै फरहरनै रह्या छै. नकीब, चोपदार नजर दौलत. सू सूरजरी किरणनै वरछियांरी अेकै किरण हुयनै रही छै. इसो समीयो वणनं रह्यो छै.

तठा उपरायंत ऊंठां चढियां रबारियां आरण मुजरो कियो छै. सू ऊंठ कुण-कुण दिसावररा छै ? काछी बोदला छपरी जालोरी वगरू बलोची सिववाडिया खाडालिया. और ही अनेक जात-भांतरा ऊंठ छै. सू साथरो घूमरो कियां थका रमणं सिर आरण खड़ा हुवा छै.

हमै तीतरां ऊपर बाज छूटं छै.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रवानकां ऊपर जुररा छूटै छै. तिलारां ऊपर वासा छूटै छै. लवां ऊपर सिकरा छूटै छै. बटेरां ऊपर तुरमती छूटै छै. बोवड़ां ऊपर चिपक छूटै छै. बुरजां ऊपर लगड़ छूटै छै. कुलंगा ऊपर कुही छूटै छै. इण भांत देसौत राजेसर सिकार खेले छै.

घोडा दौड रह्या छै. होकारा हंगामो हुय रह्यो छै. जितरै बीच थोहर झाडारा बिडा मांहां खरगोस उठिया छै. सू किण भांतरा छै? मोटा घेदा छै. तोबडिया छै. घणी लीलै जडी-बूंटीरा चरणहार, पांहरै पाणीरा पीवणहार. तिकां ऊपर कुनांरी डोर छूटी छै. बांठ-बोझा कूदै छै. धुचलो खाय रह्या छै. टुलीरो, गोफणरी, तीरांरी चोटां हुय रही छै. के घोडा आखडै छै. घोडांरा पगांसूं कांकरा-पथर उछळै छै.

इतरै बीच हिरणांरा डार आय नीसरै छै. तिके किण भांतरा हिरण छै? काळा वडा बेगड छै, मुहडांरै डारमें मेघ हुय रह्या छै. मांहे राग छै जिके कूद-उछळै छै, रीगटा हिरण छै. सु रुत आइ हिरणीनै घंचता फिरै छै. सबळो हिरण निबळै नै घेवै छै. इव डार करोलां मुहडै आगै आगा काढियो छै. तिकां ऊपर चीता छूटै छै. कुलफां दूर कीजै छै. तमासो बण रह्यो छै.

इसै समइयैमें भालुवां आगण अरज कीवी छै. भाखरांरा खुडां वेहडां मांहां सूवर नीचा उतरिया छै. राजानां देमोतां सूवरां सामी वाग लीवी छै. फडकडां फड़वडायां जावै छै. इसैमें सूवर नजरां पड़ै छै. सू सूवर किण भांतरा छै? भूरा, कवळा कैई अवलख छै. डार अेकै पासै छै. अेकल अेक तरफ छै सू अेकल किण भांतरो छै. जैरो बारहं आंगळ खग लीडीकट छै, कांधो-पूठ अेक सारखो, छै. गुळवाड़ गोहूं जव चिणांरो, जुवाररो चरणहार छै. मयमत छै. सू चर चर फरणियां आया छै माछुरांरा संताया. थोहरनै झाड़रा बिड़ां सुखसे छै घूड वाहै छै सू जड़ां समेत उखाड़ नाखै छै. इसा सुवरांरा मोरां ऊपरां राजानां घोड़ा लगाया छै. वरछियांरा धमोड़ा लाग रह्या छै. चूकमारांरी खाटखड़ लाग रही छै. कैई घोड़ा सुवरांरा तूंडांसूं उछळ परै पड़ै छै. तरवारां वहि रही छै. कटारी वहि रही छै. कैई सेल्ह तूटै छै. कैई आधो सलै छै. सुवर मारजै छै. ऊंटां ऊपर घातजै छै.

इसै समइयैमें धूप तपै छै. रानरा अमलांरो कुंमारियां देमौतां-राजानांनै तिल लागै छै. नद नाडी माम्ही वाग वाळी छै. सिकार सरब अेक ठोकर रहकलां ऊंटां ऊपर घातजै छै. होस माणग तळाव आया छै.

निको तळाव किण भांतरो छै. रानी वरडीरो. पांडरो नीर. पवनरो मारियो फीणा आछटनो थको झोला खाय रह्यो छै. लहरां लियै छै. अथग डाव छै. कड़ियां मुंवै पाणीमें पंटां पगांरा नख भाखै छै. दूधरे भोळावै बिलाव वागोजै छै. ऊपर कुंजां, सारसां गहकनै रही छै. डेडरा

डहकनै रह्या छै.टीटोड़ी टहकनै रहीछै. जळ-काग गुटकनै रह्या छै. मुरगाबी तिरनै रही छै. अढार भार वनस्पती झुकनै रही छै. तळावरै छेहड़ां कुंवळ फूलनै रह्या छै. हजार पांवड़ा ईस छै. आठसै पांवड़ा उपळै छै. इण भांतरो तळाव छै.

सू आडा नाळां भरियो छै, जाणै दूसरो मानसरोवर छै.तिण ऊपर घणा वड़ां पींपळां बोरबकायण नींब नाळेर आंबा आंबली सीसूं सरेस खेजड़ जाळ आसापालो खिजूर गूंदी लेसूड़ो केसूला खिरणी मौळसिरी फरवास रायसेण/ महुवा ढाक कुभरा कीकर टूला झुकनै रह्या छै. डाहळांसूं डाहळा अडनै रह्या छै. छायमैं सूरज नजर नावै छै.तावड़ैरी कुण चलावै? आछो सौ मेह आवै तौ पण छांट पुहचण न पावै छै.

इसी सांघणी वनसपती मिलनै रही छै.

जाणै दूसरी धरा छै.
दरखतां ऊपर मोर कुहक रह्या छै.
सुवा केळ करै छै.
तूती बोल रही छै.
लाल हाक मार रह्यो छै.

ऊपर बगला पावस बैठा छै, सू किसाहेक सोहै छै, जाणै कलाइण कागोळड़ नाखती आवै छै.

तिकांरी छांहड़ी आय राजानां-देमौतां पागड़ा काढिया छै.

आप-आपरा घोड़ानूं देसौत बाफतारी चादरांसूं पवन कर रह्याछै.

घोड़ा लोह चाब रह्या छै. जीणांरी साखां-जनाखां ऊंची नाखजै छै. तंग खोळा कीजै छै.

तठा उपरायंत पताखांसूं बादळा छौडजै छै. सू किण भांतरा बादळा छै? हळवदरा,मोरवीरा,अंजारा, भरवछर हालोररा छै. रूपैरी टूंटी सांकळी लागी छै. घणी सिलेहटी अटायणमें वींटिया थका, ऊपरा बेवड़ी-तेवड़ी झालरीमें गरकाब किया थका छै.

सू उण ही बादळांसूं घोड़ांरा लालिया छांटजे छै. फेरबादळा खंखोळ उणहीज तळावरै पाणीसूं छाण भरजै छै उणहीज वड़ां-पीपळांरी साखांसूं टांगजै छै.झौटा दीजै छै, पवन खुवाय पाणी ठंढो कीजै छै.

तठा उपरायंत जाजमां गिलमांरा विछावणा हुयनै रह्या छै. ऊपरा गदरा-चांदणी विछायजै छै. तै ऊपर सुजनी ढाळजै छै सू किण भांतरी छै? भड़ोछी वाफतैरी, घणी कलाबूत रेसमरं कार-चोभीरै कामरी, गुजरातरे कारीगररी कीवोछै. तकिया लगाजै छै.

तठा उपरायंत देसौत राजान आपरा टोळी मजलरा जुवान लियां विराजमान हुवा छै.कमरां खोलजै छै. वरछीरा झूला कीजे छै. सू वरछी कुण भांतरी छै. ताड़रा, बड़ पीतळरा भर तावूड़ा गजबेल दाणैरा फळ रामपुरैरा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ड़ियोड़ा, रूपैरा सौनेरा नकस छै. ोफलिया रूपैरा लागा छे. फळां ऊपर नातरा मुखमलरा चकारा लगायजै छै.

तठा उपरायंत तरगसांरा कुलावा छूटै छै. सू तरगस कुण भांतरा छै ? लाहोर कसूररी वणी ठावी, घणी वनातमें लपेटो थकी, घणै कलाबूतसूं गूंथी थकी, रूपैरी कुहरी फुलड़ी जीभी लागी थको, तिके ठावी साठ-साठ तीरासूं भरी थकी. तिके किण भांतरा तीर छे? गुजरातरी नीपनी सांठी, गाडे गाही, सात वार संचै मारी, लाल स्याह रंग, गजवेल दाणैरा पैगाम छै, ऊपर सोन्हैरी नकस छै, खुरसाणरा उतारिया, माठीरा तिलारिया, ऊपर रूपैरा सांबा छै, पीतळ तांबैरा छला छै, दांतरी चौकड़ी छै, तिलौररा पंखारा छं, दांतरा सुफाळा छै, सोन्हैरी हळ लिखी छै, नचमूठरा तीर छै. इसा तीरांसूं ठाठा भरिया थका. सू उणहीज बड़ां-पींपळांरा दरखतांसूं नांगळजै छै.

तठा उपरायंत कमाणां कुरमाणां मांहे मेलजं छै. तिके कमाणां किण भांतरी छै ? बारै वरस दरियावां मांहि जहाजां हेठे बंधी आइ चिलेवाइ हकारा करती गुण-भार-बंकी अढार-टंकी असली जादी पठाणरी बेटी ज्यूं तुहो-तुहो करती थकी, बलोचणी ज्यूं लचकार करतो थकी, इण भांतरी कमाणां उणहीज दरखतांरी साखांसूं नागळजै छै.

तठा उपरायंत ढालांरा अलीबंध खुलै छै. सू ढालां किण भांतरी छै. सिलहटी छै. सुध गैंडांरी आरणांरी छै. घणांरी मारी बधं छै. बाहरै महीनां संचै में रहै छै.-मोहर तोलैरो रोगान रंग लागो छै. तरवार कटारी वरछीरा दाव ही न लागै छै. सुवररी दांतरी लागै तो पण रड़क न ऊतरै. गोळी लागै तो उछळ पाछी पड़ै. सौनै-रूपैरा चांद-फूल, मुखमलरी गादी, सांबरा हथौसा, बोयदाररी डाबां कसा इण भांतरी ढालां सूं उणहीज दरखतांरी साखासूं नागळीजै छै.

तठा उपरायंत तरवारियांरा कमसारिया खुलै छै. सू तरवार्‌यां किण भांतरी छै ! सीरोहीरी नीपनी, वे आं अगला बाढ भेरिया थकां जनैब मगरेब पुड़तकाळ सेफ विलायती मुजरी बिरांणपुरी हबसानी फिरंगी. सू म्यान माहां काढ घासमें नांखजै तो पाणीरै भोळावै जनावर ठूग बाहै. बगतरमें वाही दोय टूक करै. चौरंगमें वाही थकी सीकसिरो चलणिया सार बाढै. लोहमें वाह्यां थकां आलछो ही न पड़ै. सू घणै मुखमल बनातरा म्यानां मांहे लपेटी थकी, घणो सौनै- रूपैमें जड़ी थकी, घणी बुलगाररै साज में लपेटी थको, उणहीज ढालांरा गड़गदांमें मेलजै छै.

तठा उपरायंत कटार्‌यांरा कमर बांधा छूटै छै. सू कटारी किण भांतरी छै? विराणपुररो, रामपुरारी, बूंदीरी, राजासाही, ओडारी, अढाई, भोगलीरी, कोताखानी, पाडाजीभी, घणै सोनैमें झकोळी थकी, नव नगां रांछांसूं भरी थकी,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उणहीज सेल्हां बाफतांरा कमरबंधांमें लपेटी थकी, उणहीज ढालांरी आंचामें मेलजै छै.

तठा उपरायंत पेटीरा कसा छूटै छै. सू पेटी कुण भांतरी छै? असल दाणांदार बोयदाररी छै. तैरी खसबोयरा लिया भंवरा गुंजार करै छै. बीस-बीस पांवड़ां खसबोयरा डोरा छूटै छै. जाणै गांधी हाट पसारी छै.

तठा उपरायंत वागांरा चिहरबंद छूटै छै. सू किण भांतरा वागा छै? सिरोसाप भंरव चोतार कसबो महमूदी फूलगार अध-रस सेला बाफता डोरिया मोमनी तनजेब सासाहिबी तरै-तरैरै कपड़ैरा वागा छै. सू उतार-उतार उणहीज दरखतांरी साखां ऊपर उरळा कीजै छै.

तठा उपरायंत चरणांरा गिरदाना मोकळा करजाजमां गिलमां ऊपर बैसजै छै. पाघां लपेटा उतार ढालांरा गड़गदामें राखजै छै. बाफतांरा सेलांरा रूमाल केसरिया छै सू माथां ऊपर राखजै छै. वीझणांसूं वायेरा लीजै छै. सू किण भांतरा वीझणां छै? लाहोररा कियोड़ा छै. रूपैरी डांडी जरीसूं मढी, टुकड़ीरी झालरी. सू वणी थकी खवास-पासेवाणांरै हाथ छै, फरास वडां फरासी पंखांसूं वायेरो घात रह्या छै. मातै हाथी ज्यूं हींड रह्या छै. तीन भांतरो पवन बाज रह्यो छै-सीतळ मंद सुगंध. गरमी मिटायजै छै.

• तठा उपरायंत राजानां मलूक कुंवरांरै साथ सारू कलालीरो हुकम हुवौ छै. तिजारो मंगायजै छै. तिको तिजारो किण भांतरो छै? तासणीरी बाडीरो नींपनो इकतीस ताडीरो, नाळेरसो मोटं खोपरा वढरो, गरीरै वळरो, हाथसूं छूट पड़ै तो काचरी सीसी ज्यूं किरचा-किरचा हुय जावै. पाणीमें घातियां थकां ढहि जाय. इण भांतरो तिजारो सू गोरो भूवरियां पुंहचांसूं दुजण साह्यां कटोरांमें भला जुवान मचकावै छै. बेवडी गळणीसूं खिची चाढ छाणजै छै. ऊजळा रूपोटांमें घात मुनहारां हुयनै रही छै.

तठा उपरायंत अमल मंगायजै छै. सू अमल किण भांतरो छै? थेट आगरा ही काळू केकीनरो नीपनो. भूरो थटाई अरोडी नहलिया भोजपुरावटी. सू आगराही अमलरी चकी बंवयां छूर्यांसूं मिरोवढ कीजै छै. केसरिया पोत रूमालांमें घातजै छै. अरोडी गाळजै छै भोजपुरीरा पला कीजै छै. मुनहार हुयनै रही छै. अमलांरा जमाव कीजै छै अमलांरा तंडल रोपजै छै. अमलांरी नीवां दीजै छै.

इसैमें भांगेसुर मंगायजै छै. सू किण भांत छै? केसरगी क्यारी दोलळी वासग-माथारी. थोहररा बिडारी भाखररा लुडारी, भूरै मोररी, काळं पानरी, आवूरा विहडांरी, भमरमार मिरघमाळ लरियाळ चिड़ियाळ चोटडियाळ. अेक पान अडगरियां पान अेक पान अहमदावाद. पान-पानरो रस लीजै छै तिण भांग सारू मसाला

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मंगायजै छै. जायफळ लांग इळायची मिरच विरहाळी अजूं नागकेसर भमरटंटी तज तमालपत्र तंबोल प्रत संथी. और ही मसाला मंगायजै छै. मिश्री कालपी गंगापाररी मंगाय कोरा घड़ांमें भिजोथजै छै.

तठा उपरायंत इलूरारी कूंडो तेजवळरो घोटो धोय तयार कीजै छै. भांगण बीण मोकळा पाणीसूं धोयजै छै. फेर कोरी हांडीमें रांधज छै. तठा पछै घोटजै छै. भला मोटियार होसनाक जुवान वणाव छ. बेवड़ा गळणांसूं मचकाय काढजै छै. इसी जाडी काढ़जै छै माथै टीको काढ़जै तो नीसरै, पवनरी मारी सींक ठाहरै. इण भांतरी भांग काढ तयार कीजै छै. कसूंबांनूं होसनाक पवन करै छै. सू रूपोटां में लियां खवास पासेवाण हाजर करै छै. मुनहारां हुवै छै. देसौत आरोगै छै. अमलां चाक हुयजै छै.

तठा उपरायंत जांगड़ियांनै हुकम हुवै छै. सू भजन ख्याल गावै छै. माता हाथी गजराज पटाभर ज्यूं झोला खावै छै. सहनायची सहनायां मांहे सारंग वणायो छै.

तठा उपरायंत सिरदारां देसौतां तळावमें झूलणरी हांस करै छै. लाल लांगीरी पोतां पहरजै छै. घड़नांवां वणायजै छै. सू लै तळावमें वड़जै छै. हासो-तमासो कर रह्या छै, मांथैरा जड़ा केसांरा छूटा छै. सू किसा नजर आवै जाणै काळा-वासग तिरै छै. जळ डोहि रह्या छै. जाणै रेवा-नदीनै हाथ डोहळ रह्या छै. इसौ समइयौ वणनै रह्यो छै. जिसैमें पाणीमें तिरता मुरगावी नजर आवै छै. तिकांरै सिकारै पगा बंदूकां गिलोलां मंगायजै छै. सू बंदूकां किण भांतरी छै. ? गगा-पाररी, सीहनंद-समियाणैकी लाहोररी करनाटकरी फिरंगरी थटारो. घणै सोनै-रूपैमें गरकाब कीवी थकी. नकसदार जाणै गोडियै नागण लांबी कीवी छै. दूसरो वीजरो सळाव सीसूं पीळियै दुधैरी लकड़ीरा कुंदा छै.रूपैरी तारांरा कोकड़ी सीरम सपेतरा बंध छै. बोयदाररी डाबां छै. कसूमल सूतरी लपेटी जामकी छै. रूपैरी बनातरी मुखमलरी कुंदारे पीदी वण रही छ. सुइया सांकळी रूपैरा चमकनै रह्या छै. सात-सात बिलंदारी लांबी खोळी मेण कपड़रीसूं बाहर काढजै छ. जाणै बादळ मांह वीज नीसरी, आकासरी, कना तीजरै तमासै मारू पातळी कामणी पोसाख कर नीसरी, इण भांतरी बंदूकां मोटयार तिरता-तिरता लेय उण घड़नांवां आया छै.

गिलोलां किण भांतरी छै ? घण सींग लकड़ीरी जोड़ी, घणी पय सरेसरी पचायी, कमाणरै घाटरी, दांतरां मोगरां लागां थकां घणी सोनैरी हळरी लिखी जंगाळी रंगरी, नवे चढ़ावरी तांत, रेसमैरो मेदान गूंथियां थकां. राजानां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देसौतांरै हाथां दीजै छै. कुंभारी कमायोड़ी, हथाळीरा मारिया, धुईरा पचाया, नींबुवै घाटरा. इण भांतरा गिलोला हाथ दीजै छै.

उणहीज बंदूकां गिलोलांसूं मुरगाव्यांनै चोटां कीजै छै. तमासो हुयनै रह्यो छै. सिकार मुरगाबी अेकठी कर तळावसूं बाहर पधारजै छै. लीली पोतां दूर कीजै छै. चरणा पहरजै छै. सू किण भांतरा चरणा छै? इलायचैरा मिसरूरा गुलबदनरां मालनेरीरा बाफतांरा, चाळीस चाळीस हाथांरा छै. गिरिया डोबरे समा नाडा छै. सू चरणा पहर जोड़ी पगां घातजै छै. सू जोड़ी किण भांतरी छै? लाहौररी पिसोरी घणै वनात मुखमलरी लपेटी थकी, घणै कलाबूतसूं गूंथी थको, पैहरजै छै.

तठा उपरायंत पाछलै पोहररी ढळती छायारी विसायत कीजै छै. देसौत सिरदार जाजलमां पधारै छै. केस सुंवारै छै. मोगरैरी वेल केवड़ैरे तेलसूं केस सुथरो कीजै छै. दांतरा छलांरा चंदणरा चखड़ीरा कांगसियांसू केस सुंवारजै छै. केसांरां जूड़ा बांधजै छै. ऊपरा मखहूलरा डोरा बांधजै छै.

तठा उपरायंत गोठ सारू बाकरा मगायजै छै. रबारियांनै हुकम हुवै छै. परगना मांहां बाकरा दही ले आवो. सू रबारी ऊंठां आवै छै. किण भांतरा रबारी छै?

डीघा लांबा जुवान दीसता राजान,

बांकी मूंछां, राता नैण,

सासी डाढी, मोटा वैण,

जाडा पुंहचा लांबा हाथ,

भूखं सिंघनै घातं बाथ,

इण भांतरां रबारी ऊंठांनै झालै छै. सू ऊठ किण भांतरा छै? थापवी तळीरा, सुपवी नळीरा, नाळैरा गोडांरा, बीलफळ इरकीरा, हथाळियै ईडररा, ससा सेरी बगलांरा, घाट बाजोटरा, बायमे कांधैरा, कसतूरिया पटांरा, कोरवे कानरा, टामकसै माथैरा, लोकवे नाकरा, तजियै होठरा, कवाडियां दांतां उधरै पीडरा, परघळां आसणांरा, कांगरै थूबरा, मोटै पूठैरा, छोटै पींडांरा, झामरै पूंछरा, भुवरियै रूंरा, चोळमै रंगरा, लांघियै सीह ज्यूं लंकां चढिया थका, भागा गाडा ज्यूं बठठाठ करता थका, वेस्या ज्यूं झाला करता थका, मातैहाथी ज्यूं हुंकारा करता थका. इसा ऊंठ भेकजै छै. हाथ फेरजै छै. पीतळरा गीरवांण रूपैरा कड़ा छै. ता मांहे मोहरा बोलचं मोहरा घातजै छै. लूबां कवडाळा वळैवड़ा घातजे छै. लाल सिलेहटीरां पड़ेछयां गाद्यां घातजै छै. ऊपरां पलाण मेलजै छै. सू किण भांतरा पलाण छै. सीसूरै काठरा, घणै लोह पीतळसूं जड़िया थका, रूपैरी फूलड़ी लागी छै. दांतरै कामसूं वणिया थका. वनातरा मढिया औ कुपीतळरा वाजणा पागड़ा, कड़ी कुहटं गाढी ओकढ़ा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सांतरा,पटाडांरा चोलुवा बणायां थकां, कागा कसणा कोयां थकां, चढ खड़िया छै.

गांव-गांव मांहां दहीरा कळस मेल्हजै छै. अेवड़ां मांहां बाकरा उठायजै छै.सू किण भांतरा बाकरा छै. रातड़ियै रिणारा, उजळां थळांरा,घणी गांगुवण हींगवणरा चरणहार, घणै काचर तूंबैरा चरणहार, गुवार चिड़ी-मोठरा खावणहार,भाहरै सादरा, कड़कती नळीरा, कबाड़िया दांतांरा, कमरसूंवा ऊचा, चिलकता मोरांरा, माडरै खेतरा, मादळियां पेटांरा, बालखासी बोकड़ा, खोड़ै खील्हैरीरा चरिया फुरणियांरो बैसणहार, कूभटे-कंकेड़ैरा सुरड़णहार,आयबेरा चरणहार. सो उहां ऊठां ऊपर मसकांरी पर दोय-दोय बांधजै छै. चलायां आया छै. राजानांसू आय मुजरो कियो छै.

बाकरांनूं वरको करणरै पगां अलवळिया मोट्यारांनू हुकम कीजै छै. सू असीलां सीरोहियां लेनै ऊठिया छै. मलकती वीखां भरै छै.जाणै पावासररो हंस मोती चुगण चालियो छै.दोय दोय बाकरांरी सिल्हाड़नै ठरका हुवै छै. तरवारांरा छणकार हुयनै रह्या छै. चौरंगांरी खाटखड़ हुयनै रही छै.कटोरां मांहे फूल लोजै छै. बाकरा होसनाकां वसू कीजै छै. देसौत रवां धोय हाथ ऊजळा कर विसायतां ऊपर विराजमान हुआ छै.

तठा उपरायंत हुकांरी होंस कीजै छै. चाकरांनै हुकम हुवौ छै. हुका तयार कीजै छै.किण भांतरा हुका छै? सोनैरा, रूपैरा, विदरी, खांखोळ ठाढा पाणीसूं भरजै छै. नींचै सुथरा विछायजै छै. ऊपर हुका मेल्हजै छै. नमचा सरद कीजै छै.

सू नमचा किण भांतरा छै? वीटीवा, चौगानिया, घणै वनातरा लपेटिया, सालूरा लपेटिया, बोयदाररा मढिया,चैतरा, कलाबूतरै कामरा,सोनै-रूपैरै बळांरा,रूपैरा कुलाबा लागा थका, सोनैरी टूटी, रूपैरी चिलम, चिलम-पोस छै.

तमाकू वणायजै छै. सू किण भांतरो तमाकू छै? सूरत नीपनो,तांबैरै रंगरो, जाडै पानरो,करड़ी डांवळीरो,सू इण भांतरो तमाकू.सू चिलमां भरजै छै. ऊपरां थोहररा आकरा कोयलांरा चिलमिया मेल्हजै छै. जाणै सहिजादैरा ताइत, बभूत लगायोड़ा जोगीसा छै. तिणारी होंस माणजै छै. मधरो-मधरो खांचजै छै.घरराटा हुयनै रह्या छै जाणै आभो मधरो गाजै छै.धुंवैरो डोरो लाग रह्यो छै.सू जाणै आसाढरी खाली ओमां वहै छै.

तठा उपरायंत खसबोय मंगायजै छै, सू अतर किण भांतरो छै? गुलाबरो चनणरो फितनरो वुररो खसरो करणैरो, सू सीसी खुली छै. सीकां भर-भर काढजै छै,लगायजै छै,मुनहारां कीजै छै.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तठा उपरायंत पुराणां अगररो चिकायो सूंधो मंगायजै छै. सीसी खुलै छै. मोतीपुड़ैरी सीपरा प्यालां मैं घात हाजर कीजै छै. सूधो बगलां लगायजै छै.

तठा उपरायंत केसर मंगायजै छै. सू केसर किण भांतरी छै? अेराकरी किसटवाडरी, कासमीरी, जाडो पांखड़ीरी बटवीं डांडीरी. सू केसर चंदणरा सूकड़ासूं जेलळमेररा ओरीसां मैं होसनाक जुवान घसै छै, ऊजळ रूपोटां में उतारजै छै. देसौतांरैं मुंहडै आगै राखजै छै. तिणरा तिलक कीजै छै. आड़ा काढजै छै.

तठा उपरायंत बाकरा उणहीज दरखतासूं टांगणा कीजै छै. बाकरा खुल्है छै. जाणै रूईरी बरकी वौपारी खोली छै. मांस उतार उतार पासे राखजै छै. तरवाररा पटदळां माहिसूं कटार्‌यां मोहासूं छुरी काढजै छै. मांस छुन-छुन पासे कीजै छै. मोरां पसवाड़ां पींडारो मांस देगचामें घातजै छै. हडोईरा मांस पासे चरुवामें घातजै छै.सीरा होसनाक सुधारै छै. दुयजै छै. गरम पाणीसूं धोयजै छै.चीर-चीर देगचांमें घातजै छै. ओझरा धोय-धोय मांहे मसालां मारियो मांस घात दवगर कीजै छै. फूल आंतां अवल धोयजै छै. ऊपरा दूसरी आंतांरी सांटां गूंथजै छै. मसाला चरायजै छै. रजवो दहीरो दीजै छै.

तठा उपरायंत सुवर खोलजै छै. साटां उतारजै छै. सू कुण भांतरा दीसै छै? जाणै रंगरेजरी हाट खुली छै. जुदो देगचांमें वणायजै छै.

तठा उपरायंत हिरण खुलै छै. सू जाणै धोबीरै घर कपड़ा मोकळा किया छै. मांस उतार उतार दुकड़ियांमें घातजै छै. मिरच धाणा सूठ लूण हळदी वेसवार दीजै छै. दहीरो रजवो दीजै छै. लकड़री कठौती मैं सुदवक राखजै छै.

तठा उपरायंत खरगोस होसनाक वणावै छै. मछळांद मिटायजै छै. नान्हो छन देगचांमें घातजै छै. मांहै वेसवार हळद धाणा सूंठ मिरच जाइफळ तज लांग छै. सींधो लूण दही साथ दीजै घातजै छै. तिलोर तीतर करचानक मुरगाबी होसनाक वणावै छै. पोटा चीरजै छै. पेटाळजो चीरजै छै. मुहडैमें हींग भरजै छै. पेटमें जीरो भरजै छै. पांखां समेत देगचामें बाफजै छै.

तठा उपरायंत तीतररो मांस सिला ऊपर वांट पलीधो कीजै छै. दूसरो मांस न्यारो-न्यारो वणायजै छै, घणा मसाला दीजै छै. लवांरो मांस होसनाक सुधारै छै. बकरांरा फीफर गरम पाणीसू धोयजै छै. ललाई मिटायजे छै. पासे देगचांमें रांधजै छै. घणो घी वेसवारां मसालांसूं वणायजै छै. सीकां पासै वणै छै. आडा डोरा घीरा दीजै छै. मांस रमतैरी खसबोय पूठने रही छै. त्यांरी खसबोय लेवणनूं तेतीस कोड़ देवतागण गंध्रव होसां खाय रह्या छै. भांत-भांतरो मांस वणायजै छै. गेदैरा मांडा

करजै छै. तैमें घणो नान्हो छुनियो मांस मंदी आंच कढाईमें तळजै छै. बेसबार मसाला घात उहां मांडामें घातजै छै. तठा पछै मांडा गूंथ समोसा वणाय तळजै छै.

तठा उपरायंत सीरो-पूड़ी वणै छै. सोहिनै सारू देवजीमि जोयजै छै. बिरंजै सारू चोखा मंगायजै छै, पुलाव सारू कमोद बीणाजै छै. काठां गोहुवांरो आटो मंगायजै छै. सू नाळेर-गरा गोळवां रोटा वणायजै छै. मूंगांरी पातळी दाळ घणा मसालांसूं कीजै छै. तुवररी दाल छूटां चावळांरै पगां देगचांमें कीजै छै. छूटा चावळ रांधणरै पगां वासमती मंगायजै छै. पातळा रोटा जुदा ही वण रह्या छै. ठाम-ठाम देगचा-चरू चढ रह्या छै. मूंग जुदाहीज देगचेमें सीझै छै.

सू मूंग किण भांतरा छै ? मगरैरा नीपना, भरतरै खेतरा, हरियै रंगरा, चुंवळां जेवड़ा, इण भांतरा मूंग हाथांसूं रळकायजै छै. चुण-बीण कांकरा काढजै छै. सू मूंग होसनाक वणावै छै.

अनेक भांतरा छतीस भोजन वणै छै. निजारैरै पाणीसूं आटो गूंदजै छै. तैरा रोटा करजै छै. रोटा भोर पीड़ी कीजै छै. तठा पछै कढाहीमें तळजै छै. फेर भोर कूट छाण मांहे बूरो घातजै छै. घात चूरमो कुतवी वणायजै छै.

तठा पछै सिखरणरै पगां दही बांधो थो तैरी गळणी खुलै छै. मांहे बूरो घात अधोतररै रूमालसूं छाणजै छै. मसालां मांहे लांग इळायची मिरच घातजै छै. इण भांतरो सिखरण कर माटकी भरीजै छै.

हडोई ऊपर चीलकां कागला झड़ाफड़ करनै रह्या छै.तिका कागलानूं मलूकजादा कुंवर गिलोलांरी चोटां कर रह्या छै.

इणभांत तमासो करतां पाछलो चौघड़ियो आय रह्यो छै अमलांरो वखत हुवो छै. तद खिजमतगारांनै हुकम हुवो छै– सताबी सूं हर-संकरो तयार कीजै. सू हरसंकररैरी तयारी कीजै छै. सू हरसंकरो किण भांतरो छै. भांगेसुर घोटियारी पींडी घणी मसालां समेतरी आणजै छै. गळिया अमल में भांग गाळजै छै. फेर दारूसूं उलटाय काढजै छै,रूमालसूं तिवारा छाणजै छै. तयार कर पीतळरा कळस भरीजै छै. मिरदारां आगै आण मेलजै छै. ऊजळा रूपोटांमें घात मुनहारांसूं सारा साथनै पायजै छै.

सू किया-अेक सरदार जुवान छै ? पाकां पाकां वरियामांनूं, अजरायलांनूं, खींवरांनूं, डाणहुलां डाकियांनूं, करड़यंतांनूं, लोह घड़ां लाह पर डाहलांनूं, लोली देता, कटारी उगराइ खाता, पचासां बोळावियां आधे आध बाढ उतरियां. जियांरा पांच-पांच हजार दाम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाटा-बंधाईरा पाटैदार खाय चुका छै. पांच-पांच सै हाथ कोरी पाटांनै लागी छै. इण भांतरा रजपूतांनै अमल सिरदार आपरा हाथां करावै छै. घणै चोजसूं मन लियां मनहारां कीजै छै. दिल हाथ लीजं छै, अमलां गहतंत हुवा छै.मातै हाथीज्यूं झोटा खाय रह्या छै. फुरणी वाज रही छै.कोसा लाल चिरमी हुवा छै. आंख्यां छिटक रही छै. मधरै-मधरै हुक्कांसूं तमाखू खायजै छै. गल्हां कीजै छै.

तठा उपरायंत सूळांगरियां हौसनाकांनै हुकम हुवै छै–जाजमां कनारै सूळां तयार करो, सू हिरणांरा मगरं पसवाड़ा पींड़ांसूं मांस उतारजै छै, छूर्‌यांसूं छुणजं छै. सू छुरी किण भांतरी छै ? पेसकवज चकचकी रूमी विलायती म्यानां मांहां काढजे छै. तिकांरा दस्ता किण भांतरा छै ? मोहरैरा गुरड़ोदगाररा संगरेसमरा माहीदांतरा रूपैरा सीपरा जड़िया तरै-तरैरां दसतांरीं भांत तिकां छुर्‌यांसूं मांम छुनजे छै. मसाला वेसवार लूण चरायजे छै. दहीरो रजबो दीजै छै. तरगसां मांहां सीकां काढजै छै. बेवड़ां ठीहां चाढजै छै. बीच खीसरी भरती दीजै छै.सू तसु वीढ सीकां ऊपर चाढजं छै. आड हाथ डोरा घीरा दीजै छै,इण भांत सूळां वणं छै.वडी देवगिरी थाळीमें उतारजै छै.

तठा उपरायंत देसौत फेरांसारा फिर आया छै.हाथ पग मिटीसूं उजळा कीजै छै. कुरळा कीजै छै. सिभ्या–वांदणरो वखत हुवो छै, वनाती आसण विछै छै. पीतलरा भरतरा धूपिया आगै आण मेलजै छै. गूगळ बतीसं मसालै सहित खिवै छै. खसबोई महक रही छै. देई-देवता खसबोय ले रह्या छै.बनातरी गऊ-मुखीमें हाथ घातियां आपरै इष्टरो ध्यान-सुमिरण कर परवारिया छै. जाजमां आय विराजै छै.

तठा उपरायंत मसालां हुई छै. दुसाखा हुवा छै. मसालचियां आण मुजरो कियो छै. नजर दौलत छड़ीदार कर रह्या छै. अमरावां सिरदारां खिजमतगारां सारां ही आण जुहार-मुजरो कियो छै. सारा ही मुंहडै आगै विराजमान हुवा छै.

तठा उपरायंत दारूरा घड़ा मगायजै छै. सू दारू किण भांतरो छै?अैराकरो वैराक संदलीरो कंदली फूलरो अतरबाती बभैधुंवाधोर तिवारारो काढियो,बोदी बाड़में नाखियां जग उठै. बापरो पियो बेटो छिकै.असवाररो पियो प्यादो छिकं. राजा पीवै परजा छिकै. इण भांतरो पहलड़ो तोडेरो धातो, सू दारू केसरिया गुलाबियारां दाव दीजं छै. मुजरा कीजै छ. मूनहारां हुवे छै. मतवाळा हुयजै छै. उपरा उण भातरां सूळांरो थाळ वीचमें लाया छै. मोछण-ठुंगार हुय रह्यो छै. चोळबोळां हुयजै छै.

तठा उपरायंत हवलदारां अरज

कीवी छै – भुजाई तयार हुयी छै. आप फुरमायो छै – पांतोटा नाखो, बाजवट थाळ मंगावो. पांतोटा नाखिया छै, आगै बाजवट मेलिया छे. त्यां ऊपरै रुपैरा पीतळरा थाळ जळसूं खंखोळिया मेलिया छै. सिरदार पांतोटां आय बैठा छै. रहड़वां घातिया देगचा चरू आणजै छै. परीसारारो हुकम हुवो छै. सारै साथने सरब वसतरो परीसारो हुवै छै. पांच-पांच दस-दस इकलाळिया दांइदा भेळा बैठा छै. मुनहारां हुय रही छै. घणी फीनसताई चोज लियां आरोगजै छै. दारूरा दाव वीच-वीच लीजै छै. गोळियांरी खाटखड़ लागनै रही छै. मुसालांरो चानणो वणनै रह्यो छै, जाणै सरदरी पुरणवांसी खुली छै.

फेर हुकम हुवै छै. महताबांरो चांदणो हुवै. सू महिताबां पचास सव सांवठी ही लागी छै. जाणै जेठरो दो - पहरो खुलियो छै. इण भांतरै चांदणै में जीमणारो होंस माणजै छै. दारूसूं मतवाळा सिरदार लाहरता बोलै छै.

इण भांतसूं आरोग परवारिया छै. थाळ बारियां उठाया छै. हाथांरी चीकणाई उतारणरै पगां मूंगांरा थाळ मंगायजै छै. तिण मांहे हाथ मारजै छै. मसळ चीकणाई उतारजै छै.

तठा उपरायंत पाला भारा चळू करणरै पगां मंगायजै छै. चळ कीजै छै. कुरला कीजै छै. हाथां लोहणनूं रूमाल हाजर हुवा छै. हाथ पूंछजै छै.

इतरैमें तंबोळी बीड़ा आण हाजर किया छै. तिके पान किण भांतरा छै. मघी दखणी सोडैरी बाड़ीरा नीपता. तिकांरी बीड़ी बर्भ छै. मांहे कपूर चूनो काथो सोपारी घात बीड़ी सिरदारांनै दीजै छै. खुस वखत हुवै छै.

कवीस्वर आसीस दियै छै-अखै अन - दाता ! ध्रुव - मेर ज्यूं अटळ, चंद सूर पवन पाणी ज्यूं जुगे-जुग राज करंता

जुजठळ-वाळा जाग ज्यू,
अन घ्रत छिलै अपार ।
दिल घाई आसीस दे,
कवि जंपै जै - कार ॥
दस कूप समो वापी,
दस वापी समो सर ।
दसां सर - वरां समी किन्या,
अन - दान विसेखत ॥

इण भांतरी अनेक आसीस दियै छै. अैसो गहरै साद कविराव बोलै छै जाणै नगारै डंको हुवो कना भेर घाव हुवो. इण भांत कवराव आसीस देवै छै.

तठा उपरायंत अरगजो मंगायजै छै. सू अरगजो किण भांतरो छै ? चोवै चदणरा मुठिया गुलावरै पाणीसूं रगडीजै छै. मांहे कपूर कसतूरी घातजै छै. केसररो रंग दीजै छै. सूंधै चमेलीरै

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेलवणी दीजै छै. इण भांतरे अरगजो रूपेरा रूपोटां मांहे धात आण हाजर कोजै छै. अरगजो लगायजै छै.

तठा उपरायंत माळा फूलांरी छाबां आण हाजर कीजं छै. सू फूल कुण भांतरा छै? हजारा नौरंग तुररो मेहदी किलंगो सोनजुही इसकपेचो खेरी कोयल मालती चांदणी मुखमल चरगस हवास गुलअनार दाऊदी केवड़ो. और ही अनेक भांतरा फूलांरी माळा किलंगी छड़ी सेहरा गूंथिया छै. सू सारै साथनै बकसजै छै. फूलांरा चोसरा वालजै छै. छड़ी हाथांमें विराज रही छै.

तठा उपरायंत कवरावांनै नवाजस हुवे छै. घोड़ा ऊठ माळा कड़ा सिर-पांव सिरमा वकसीजै छै.

तठा उपरायंत ओळगुवां वाजदारांनै इनाम दीजै छै. मान्नीनै मोहताद दीजै छै. सारांहीरी आस-उमेद वर आणजै छै.

इत्तरैमें सात घड़ी वाजी छै. आठवींरो अमल छै. सिरदारां-रजपूतां अरज करायी छै—असवार हुयजै, साथ सारो अमलां गाढो सदोरो छै. तरां आप उठिया छै, मातै गजराज ज्यूं हींडता थका खवास-पासवाणांरै हाथ ऊपर हाथ दियां घूमता थका घोड़ै पधारै छै. साहणी घोड़ो आण हाजर कियो छै. पागड़ै पग दियो छै. असवार हुवा छै. नगारै-भेर घाव हुवा छै. सादियाणा वाजै छै. जाणै गाभां गाजै छै तुरी करनाळ रणसींगो वाज रह्या छै. सहनाय मांहे खंभायची हुय रही छै. साथ सारो अमलांसूं लल्हरतो थको वहै छै. वधाईदार आगै वधाइयां छै. सू वधाई आण दीवी छै.

तठा उपरायंत कामणी हरख मण उबटणो करै छै. पीठी सिनान करै छै. असबो लगायजै छै. सीस गुथायजै छै. बाळ-बाळ मोती सारजै छै.

हाम काम लोयनी आंभेरी बीज.
भादुवैरी आकासरी परी. मोतियां सरा.

कस्यांरो भूंबखो. पूनमरै चंदसो मुख.
थाको हंस. असील वंस.
बे पख सुध असी मुध.

सू आभरण पहरै छै. जरकसी साढी, अतलसी चरणो, केसरी अंगिया, घणै विराणपुरैरी कोर पटै लागी थकां. सीस ऊपर हीरारो सीस-फूल बणायजै छै. मोतियांरी मांग भरजे छै. ललाड़ ऊपर अरधचंद्र विराज रह्यो छै. केसर सी खोळां कीजे छै. हींगळूरी वंदी दीजै छै. वांका लोयणामें अणियाळो ठास सजै छै. जड़ावरी लड़ी दांवणी झूंटणा झूंबरा अलोक वण रह्या छै. मोतियांरो हार चौक पंच-लड़ी विराज रह्या छै. जड़ावरा बाजूबंध कांकण रतन-चौक आरसी बींटी विराज रही छै. वळै चूड़ो सोनैरी बंगड़ीदार विराजै छै. जाणै काळी घटामें वीज चमकै छै. कट मेखळा जड़ाव री सोहे छै. सोनैरी पायल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पग-पान पोलरी प्रणखट पगां बिराजै छै. आभूखण अैसा विराजमान हुवा छै जाणै मेर - गिर दोळी नखत - माळ विराज रही छै.

हाम काम लोचणी उलाळी आकास जावै.

चावळरो चौथो हैंसो खावै.

तंबोल विना खाधां आहारा विकार थावै.

माडी मोडो कटारीरी पड़चळी ममावै.

उतररो वाव वाजै दखणनै मुळै.
चोवा रोवा जेतो बीचसूं भाज जावै.
इसी - इसी खोडस बरसांरी मुगधा मध्या प्रोढा रूपरो निध्यान.
जाका मलूक हाथ - पांव.
जंघा कदळीको थ्रभ.
बांह चंपारी डाळ.
सिंघ सी कमर.
कुच नारंगी.
नख लाल मलोला.
ग्रीवा मोर सी. बोली कोकल सी.
अधर प्रवाळी. दांत दाड़मी-कुळी.
नाक सुवारी चांच.
नाथरा मोती जाणै सुक्र ब्रिहसपत नारखा दीपै छै. जाणै लाल कंवळरी सुसबोय लेवण सेत भवर आया छै.
अध सा नेत्र. मीन जैसा चपळ.
भूंह जाणै इंद्र-धनख छै.
मूख पून्यूं रै चंद ज्यूं सौळहै कळा संपूरण छै.
पेट पींपळरो पान छै.
पासा माखणरी लोथ छै.

नितंब कटोरा सा छै.

नाभी-मंडळ गुलाबरो फूल सो छै.

साख्यातरो पदमणी.

कना रंभा सी. सरगरी उरवसी.

अैसी कामणी पोसाखां कर मोहला मांहे मैणवतीरी पील चोसां च्यारां खुणां जगाय पान चावै छै. चांदणीरा विछावणा खुल रह्या छै. ऊपर बनातरी कलाबूती चांदणी रूपैरी चोभांसूं खड़ी की छै.

सोनारो पिलंग कसणां कसियो छै. सो कैसोहेक सोभायमान दीसै छै? जाणै खीर-समुद्ररा झाग छै. ओसीसा गींडवा कैसा विराजै छै? जाणै सीगीमल काछबा समुद्रमें केळ करै छै. इण भांत कामणी पोसाख विसायत कियां विराजै छै. जिसैमें असवारी आण उतरी छै. सारो साथ मुजरो-जुहार कर घरांनै पधारै छै. घोड़ा पायगा लगायजै छै. गंगेव नींबावत भीतर पधारै छै. खमा-खमा हुय रही छै. आण ढोलियै विराजमान हुवा छै. मुंहडै आगै पातरां पोसाख कर साज बाज लियां खड़ी छै. हुकम हुवो छै. राग-रंग हुवै छै. छह राग, तीस रागणी. मूरतवंत खड़ा हुवा छै. सात सुर तीन ग्रामरो भेद वणियो छै. भाव दिखावै छै. फेर दारूरी मुनहार राज-लोक करै छै.

तठा उपरायंत सारो राज-लोक मुजरो कर बोहड़ै छै. जिणरो वाखो नै

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सू हजूर रहै छै. सुख कीजै छै, रस लीजै छै. केसरिया दुपटा ओढ सुखसूं पौढजै छै. परभात हुवौ छै. अमलांरी बायड़सूं आंख खुली छै. दरबार पधारै छै. साथ सारो मुजरै आवै छै. मुजरो लीजै छै. अमल कीजै छै. गोठ मजलस अमलांरा बखाण हुयनै रह्या छै. फेर ही कोई राजवी माणगर हुवै सू इण भांत ऐस माणज्यो.

नर सुर नाग न घट्टियां,
काळै केहरियांह ।
जळ पूरिय पखाण ज्यूं
गल्हां ऊबरियांह ।
भलियूं भलां, नरांह
लांबीयूं लांबां नरां ।
मुळवा मुवां पछांह
वातां रहिसी वोच उत ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रामदास वेरावतरी आखडीरी वात

अथ राव रामदास वेरावतरी आखडीरी वात लिखते।

गांव दुधोड हुवो राव श्री रिडमलजी रे पुत्र हुवा. वेराजी रे पुत्र रामदासजी हुवा. गांव दुधोड़रे खेड़े थापना कीनी. वडो एक आखाड़सिध रजपुत हुवो. विरदधारी रजपुत हुवो. रामदास वेरावतने उगणीस विरुद हुवा. तिके विरदांरा नांव—

१. प्रथम पाखरीयां विना रहणो नहीं.
२. दुजो सबलां उथांपण
३. तीजो निबलां थांपण.
४. चोथो जाचक जण तरवर.
५. पांचमो परनारी सहोदर.
३. छठो चरु सुगाळ.
७. सातमो सुखी.
८. आठमो सरणाई सोहड.
९. नवमो विरद प्रणभंग.
१०. दसमो पंथरी बोर.
११. इग्यारमो वेरी बकारने मारे.
१२. बारमो पराइ लुगाइ माता समान.
१३. तेरमो अगंलीयां गंजण.
१४. चवदमो छतीस आवध ढावण.
१५ पनरमो आखाड़ सिध.
१६. सोलमो गजघटा भांजण.
१७. सतरमो आसेसरमने.
१८. अठारेमो मनोहर.
१९. उगणीसमो लाखां परछभा पंचायण.

उगणीस विरद कथा. हिवे चोरासी आखडी कहे छे–

१. च्यार लुगाइ उपरंत परणयारी आखडी.
२. रुपा सोनारा थाळ विना जीमणरी आखडी.
३. पोतळरो में जोमणरी आखडी.
४. मलयुद्ध कीयां विना रहवारी. आखडी.
५. तलवार पकडवारी आखडी.
६. जेठीमधु विना दांतण करवारी आखडी.
७. खांडो खुरसाणरो सेल सेर पनरेरो बाधणो, नहीं तो बीजो बांधवारी आखडी.
८. छतीस आवध चालतां सेर बीसरो आहार करने चालणो, नहीं तो आखडो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९. दिनमें पोहर सुवणो, उपरंत आखडी.

१०. रातरे पोर एक सुवणो उपरंत आखडी.

११. बाजरी भुंजाइमें वापरवारी आखडी.

१२. गोव भुंजाइ सगला साथने हुवा विना जोमणरी आखडो.

१३. सकर विना भुंजाइ करवारी आखडो.

१४. पाछलो रात हल उछरतां भुंजाइ कीयां विना रहवारी आखडी.

१५. होके कीयां विना रहवारी आखडी.

१६. सगला साथने अमल कसुंबो कीना विना रहवारी आखडी.

१७. कटारी बांधवारी आखडो.

१८. साप सापणी भेला पकडवारी आखडी.

१९. लुगाईरे नांवे वसा आभडवारी आखडी.

२०. सरसे घोड़े चढवारी आखडी.

२१. काछी घोड़े चढवारी आखडो.

२२. पालची चढवारी आखडी.

२३. कपूर विना पान चाबवारी आखडो.

२४. लुगाइसुं रातमें एक बार भोग करणो, उपरंत करवारी आखडी.

२५. किसतुरी विना रहवारी आखडी.

२६. फटा कपडा सींवणरी आखडी.

२७. साथने वल हुवा विनां जीमणरी आखडी.

२८. वावड़ीरो पांणी पोवणरी आखडी.

२९. वेहती नदीरा पांणी पीवणरी आखडी.

३०. भूखारो मुंहडो देखणरी आखडी.

३१. दूधको बोलणरी आखडी.

३२. मारग हालतां टलवारी आखडी.

३३. अऊतरो धन लेवारी आखडी.

३४. खटकनसे माल लेवारी आखडी.

३५. गांव फिलसो देवारी आखडी.

३६. सीव मांहसुं बलद गांवमें लावारी आखडी.

३७. विखे विमांण गांव छांडवारी आखडी.

३८. काम पडीयां वगतर टोप पेरवारी आखडी.

३९. केसरीया वागा विना पेरवारी आखडी.

४०. दांतरा चुडा विना वडारण राखणरो आखडी.

४१. घुडवेल वेसवारी आखडी.

४२. गांयारी घासमारी लेवारी आखडी.

४३. चोर दीठां मेलणरी आखडी.

४४. कांमरे माथे रजपूत निकले तिणरो मुडो देखणरी आखडी.

४५. रजपूतरो रोजगार राखणरो आखडी.

४६. सरणे आयां काढ देणरी आखडी

४७. रजपूतरो मुकातो लेणरी आखडी.

४८. चोहटे घोडो नखुरी करावणरी आखडी.

४९. पिणघट ऊभा रेहणरो आखडी.

५०. सोमवार विना खिजमत करावणरी आखडी.

५१. बारे वरस तांइ बेटो कंवारो राखणी उपरंत राखवारी आखडी.

५२. तुरकने बेटी देणरी आखडी.

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

५३. बेर वाढ विना वाढीया रहवारी आखडी.

५४. कूड बोलणरी आखडी.

५५. चडधां ऊभां जुत पिहरणरी आखडी.

५६. सांढोयां दीठां मेलवारी आखड़ी,

५७. ढोल वाजीयां ऊभा रेणरी आखडी.

५८. सातसे वेरी माथे राखीयां विना रहवारी आखडी.

५९. वांसे खेद दीठां जायगासु खिसवारी आखडी.

६०. दोनां दलां विचे पग चतारदारी आखडी.

६१. रोला में निकलवारी आखडी.

६२. भांजे तिण लारे जावारी आखडी.

६३. आगलाने विना वकरीयां लोह करवारी आखडी.

६४. लोहडा विना मारवारी आखडी.

६५. एक घाव विना लोह करवारा आखडी.

६६. माल खाय जाय तिणने मारीयां विना रेहणेरी आखडी.

६७. धोला केल दीठां जीवणरी आखडी.

६८. पोतारां मुढो दीठां जीवणरी आखडी.

६९. धाडो आणीयां वासी राखणरी आखडी.

७०. मेवासीयांरा गांव मारीयां विना रहवारी आखडी.

७१. देसरा धणीने काम पडे तरे ऊभा रेणरी आखडी.

७२. सूरजरो मुंढो दीठा विना जीमणरी आखडी.

७३. मुंहडासुं किणने गाल काढणरी आखडी.

७४. चारण भाटने विना काम विदोखणरी आखडी.

७५. लुगाइने विना खुंन मारवारी आखडी.

७६. मोज देने पाछी लेणरी आखडी.

७७. जीमतां भाणे मांहे कालो नीकले तो अेटो मेलणरी आखडी.

७८. रुपीयांरो व्याज लेवारी आखडी.

७९. धन सचवारी आखडी.

८०. तमाखु पीवणरो आखडी.

८१. जुवा रमणरो आखडी.

८२. विना चुप हसवारी आखडी.

८३. निबलाने मारणरी आखडी.

८४. आपसुं चढतो हुवे तिणसुं लडवारी आखडी.

इतरी आखडी रामदास वेरावत आखाढ सिध रजपुत सुरवीर दातार तिण इसडी आखडी पाली गांव दुधोड़रा दरवार आगे सिला१उगणीस गज लांवी छे, आठ गज चवडी छे, तिण ऊपर रामदासजी बेसता.तिकी सिला पडी छे. तिण ऊपरे रजपुत वेसे तिको इसडी आखडी पाले, तिको इज वेसे नहीं तो तलाक छे. गांवरो धणी पाटवीने छे. और लोक नचंत बेठो व्यापारी नचित वेसो देसोतने तलाख छे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवे मीयां बुढण जालोर राज करे, पांच हजारी रो मनसोवो छे, साथ सरांजाम वीजो घणे छे. अमल धरती में निपट करड़ो छे. वडो बढेरो करण-हार छे. तिणरै सांढीयां हजार सात छे. तिको गांव देवु रहे छे. एक समे मीयां बुढण महेचांरे परणीयो छे, तिको उणरो नाम बाइ लाडु छे. उणसुं मीयां बुढण चोपड रमे छे. सो बाइ लाडु रे ड़ांण पड़े नहीं, तरे बाइ पासो वावती कयो पासा तोने रामदास वेरावतरी आण छे. पोबारा पडीया तरे लाडुबाइरी जीत हुई।

तरे मीयां बुढण पुछीयो-रामदास वेरावत कुण छे? कठे रहे छे? तरे महेची कयो- रामदास वेरावत माहरे भाइ छे, बडो रजपुत छे, तिणने चोरासी आखडी छे, उगणीस विरद छे, बडो सतधारी रजपुत छे, माहा सूरवीर छे, वडो आखाडसिंघ रजपुत छ.

तरे मीयां बुढण कयो-अैसा तुमारा भाइ हे तो हमारी सांढीयां लेवेगा? तरे महेची कयो- हमारा भाइ ऐसा ही हे सो तुमारी सांढीयां लेवेगा. मींयां कयो-खुब हम भी देखेंगे। हमारी सांढीयां लेवेगा तो बडो रजपुत विरद धारी जाणेंगे. तिण ऊपर महेची कयो- तुमारी सांढीयां ले जाय ता तुम रजपुत जाणजो.

तरे मीयां बुढण कयो-हमारी सांढीयां लेवेगा तरे हम तुमसे मुंह बोलेंगे. तरे महेची कयो-मीयांजी हमारा भाइ सांढीयां लेवेगा.

चोपड़ रमतां इसा सामाचार मीयां रे महेची रे हुवा. तरे महेची चारण घर रो बुलायने रामदास जी रे कने मेलीयो ने कयो, इसो तरे- विरदा-यने कहेजो बाइ लाडुरे ने मीयां बुढणरे चोपड़ रमंता इसीं बतलावण हुइ छे, सो जाणसुं राज मोने मोहरे कांचली दीनो अमर कांचली दीवी. ए करसुं मारो बोल ऊमर आंणजो. इसी तरे कागद लिख मेलियो, चारण साथे. सो कागद वांचने रामदास जी तिणहीज वीरीयां हेरु मेलिया, अने कयो अनतो सांढीयां लीयां वसां. चारण ने घोड़ो सिरपाव दे ने सीख दोनी पधारो बाइने जुहार कहेजो,

अबे पाछासुं दुधोडसु तीनसे असवारां सुं रामदासजी चढीया. असवारां पुरी सिले करने चढीया ए कांम प्यालारो पीवणहार छे कालीरो कलस छे, जाता पवन सुं लडे, जीव ऊपर उठा फिरे, तिमणे पग चांतरे नहीं, पुंठ फेरे नहीं. इण भांतरा असवार चढीया तिके जायने गांव देवुसुं सांढीयां लीवी. पछे रवारी ने कयो-सात हजार सांढीयां तिण घणी ताती सांढ हुवे तिण ऊपरे चढने मीयां बुढण ने जायने कहजो रामदास वेरा-वत सांढीयां लीवी. गांव दुधोड़रो धणी लाडुबाइरो भाइ तिण सांढीयां लीवी. रवारी आयने कयो मीयांने वेगा चढो. तरे मीयांने समाचार हुवा तरे मीयां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फोजरो घमसांण करने रामदासजी ऊपर चढीयां. रामदासजी ने आखडो छे, खेह दीठां खिसणो नही. सांढ पिण एक व्याइ सो सांढ ऊभी छोडने जांणरी आखडी. तरे तोडीयाने पखालने सांड ऊपरे घाल लियो ने आगी खडीया. इतरे खेह उडतो दीठी, तरे रामदासजी ऊभा रया. इतरे मीयां राइका बाहदर दोय आण पोहचा. तरे इका बोलीया अबे खडे रहो, कहां जावोगे. तरे रामदासजी सोले असवारांसुं ऊभा रया. बाजा सारा साथने सांख दीवी. कयो सांढीयां ले जावो. आप रामदासजी ऊभा रया. इतरे इका आण पोहता. तरे रामदासजा वकारीया मीयां भलां आया, स्यावास थांने. अवे वाहो. तरे इका बहादरां कयो रामदास तुम वाहो. तरे रामदासजी बोलिया सिरदारां इण इकाने मां पेहली लोह करो मती. तरे रामदासजी कयो तिको कबुल कीयो. इतरे इको घोडा हजार पांचसुं चढीयो आयो. हाथ में सांग मण एकरी लीयां थकां आंण पोहतो. सो एकण कांनी हजार पांच फोज, एकण कानी एक इको इसो प्राक्रमी पोरस छे. सावंतरूपी छे. इसा इका प्रोहता तरे रामदासजी बोलीया इका बाह करो. थांहरो धन लीधो छे, सो पेहली तुं वाह. तरे इको मण दोयरी सांग वाही. सो सांग रामदासजी ढालसुं प्रोझाटसुं टाळ दीधी. पछे रामदासजी बरछी फेरने बुडीरी दीधी इकारे छातीमें. सो सास जातो रयो. तरे बीजा इकारे ने रामदासजीरे वतलावण हुइ. सो इको सिले ठोय करने आयो छे. सो रामदासजी आवतारे बरछी वाही. सो इको घोडो फुटने बरछी जाती थकी धरतीमे रुपी. दोइ इका मारने रामदासजी आधा खडीया. पाछासुं मीयांरी असवारी आइ. फोज हजार पांच सात लारे छे. सो मीयां इकां देखने इका कुने आया. आगे देखे तो इकारे लोह कोइ नहीं ने भात समांन ऊभा छे. बरछीसुं पोया छे. इसी तरे मीयां वुढण लारासुं देखने फोजने कयो इण रजपूतसुं कोइ हाथ जोडने लडेगा. तब साथरी तो सांरारी इका देखने निरासां हुइ. रामदासजी ने किण ही आसंग्या नही. तरे मीयां पाछा वालीया. रामदासजी सांढीयां ले ने दुधोड़ आया. इणाने तो आखडो छे, घाडो बासी राखणो नही. सांढीयां रजपुतांने वेंच दीनी, चारण भाट खटवनांने वेंच दीनी. देतां देतां सुरज आथमाण लागो. रावळा में रसोडो तयार हुवा. इतरे चाकरां आंणने कयो रसोडे पधारो. रामदासजी पुछीयो सांढीयां लारे कितरीक छे, तरे रजपुतां प्रधांनां कयो सांढीयां हजार दोय रही छे. तरे रामदासजी ओडांने बुलायने कयो सांढीयां ल्यो अने तलाव खोदो. तरे सांढीयां ओडांने दीनी. पछे सारा साथसुं रसोडे पधारीया. सांढीयांरा भावरो दुहो.

संवत पनरेसे चोपने,
आंणी भोक दरक।
तलाव खणायो वेरा तणे,
जांणे लोक खलक॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बात - मियां बुढण पाछो जालोर आयो. बीबी महेचीसुं मिलियो, महेची समाचार पुछीयो, मीयांजो हमारा भाइरा हाथ दीठा. मीयांजी बोलिया अब तुमारा भाइ कनासुं सांढीयां मंगाय दो. तब महैची बोली मीयांजी कछु भोला हो ? उणने आखडी छे, घाडो आंणीयो वासी राखणो नहीं सांढीयां तुरत वेच दीनी, उणहीव वेलां. इसो सुणने मीयां सांढीयांरी आसा छोडी. पछे रामदासजी वरस २५ (?) में हुवा तरे पातसाहरी फोजसुं लडने कांम आया ।

।। इति उगणीस विरुदवारी रामदास वेरावतरी चोरासी आखडी तिके संपूर्ण ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजान राउतरो वात – वणाव

परमेसर प्रणमूं प्रथम देवां सिरहर देव ।
सारदा गुणपति समरि सत-गुरचो करि सेव ।।१।।
दिग्रौ सेत वरदान तू परमेसरि प्रसताव ।
राजानांरी रस-कथा विधि कहि वात वणाव ।।२।।

अथ वात

ॐकार महादेव परमातमा परम सिव परम सकति अचळेसर अचळ आसण कियौ. तिण थांनकरी ठौड़ नंदीगिर हेमाचळरौ बेटौ दूसरौ मेर गिर अढार गिररौ राजा आबू गिरंद कहीजै. तिणरै बैसणै ऊपरि ईसवररा अवतार महाराजा राजेसर राज करै. तिण राजेसर राजारै महारांणी महामाया पटराणी तिणरा पेटरौ नीपनौ कुंअर गुर पाटपति कुंअर श्री राजान कुंअर-पदौ भोगवै. कामदेवरी मूरति नव कोटी धुरधररा पति नरेस अनेक विरद विराजमान ।

अथ काव्य

भाले भाग्य-कला मुखे ससिकला लक्ष्मी-कला नेत्रयोः ।
दाने देव कला भुजे जय - कला जुद्धे प्रतिज्ञा - कला ।।
भोगे कोक-कला बले गुण-कला चिंतामणी सा कला ।
काव्ये कीर्ति-कला तव प्रतिदिनं क्षोणीपते राजते ।।

वात

खट-त्रीस वंस राजकुळी सिरोमणि सुरज वंसी राजान मारवाड़िरा नव कोटरी ठकुराई जळाबोळ राज-पदवी भोगवै. राज-पाट सिंघासण छत्र डंड माथै सेत चामर ढुळावीजै छै. सेत वानां सेत नीसाण सेत झंझा विराजमान हुआ छै. तिण राजांन राजाउतरा वात वणाव वखाणीजै छै ।

तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति तिण राजांनरी राजवट च्यार ठिकाणै

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विराजमान दीसै छै. पांच कोट पटै किया छै. राजथान नंदीगिर सिवपुरी मंडोवर अजमेर जाळिंधर सारीखा पाइतख तवणीज छ. गदाल सहर गढ कोट बाजार पौळि पगार बाग वावड़ी बगीचा कूत्रा सरवरांरी वड़ां पींपळारी छिबि सहररी पाखती विराजि नै रही छै. पाखती अरटांरी झींगड़ि चींगरड़ि पांड़ नै रही छै. ढहारौ खटाकौ लागिनै रहिग्रौ छै. पाखती नीळ वझि नै रही छै।

तठां उपरांति करि नै राजान सिलामति गढ कोट चौफेर कांगुरा लागा थका विराजै छै. जाणे आकास लोक गिलणनूं दांत दिया छै. ऊंचो निजरि करि जोइजै तौ माथारौ मुगट खड़हड़ै. तिण कोटरी खाही ऊंडी ब्रह नागब्रही सारीखी. जळ छैल पाताळरो जड़ांसूं लागि नै रही छै. तिण गढ माहे वावड़ी कूत्रा तळाव जळ बहळ धान घ्रित तेल लूण खड़ इधण अमल कपड़ौ घणो अपार संचौ किग्रौ छै. कोट भुरजांरा कोसीस नै धमळहर धमळागिर पहाड़ ज्यौं वादळांरा कीरण सारीखा ऊजळा सीकोट सौं निजरि आवै छै. नगररा घर कोट बराबरि ऊंचा विराजि नै रहिग्रा छै।

तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति नगर मांहे ऊंचा देव सिव जैनरा देहरा मढ विराजि नै रहिग्रा छे. तांहरा डंड-कळस धजा पताखा आसमानसूं वातां करै छै. देहरा मांहे कथा कीरतन नाठक पड़िन रहिग्रा छै. धूप-दीप कीजै छे. आरती उतारीजै छै. केसरि-चंदण चरचीजै छै. अगरउ खेबीजै छे. पंच सबदा वाजि रहिग्रा छै. झालरियां झणकार हुइ नै रहिग्रा छै।

तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति देवळांरी पाखती धरमसाळा दानसाळा मंडीजै छै. मांहे जोगेसर पवनरा साझणहार त्रिकुटीरा चडावणहार धूम्र पानरा करणहार उरधबाहू ठाढेसरी दिगंबर सेतंबर निरंजनी आकास-मुनी।

दूहौ

ब्राह्मण सेतंबर वळे, जोगी जंगम जाणि।
दान सन्यासी सोफिया, खट दरसण वाखाणि।।

गोदड़ कानफाड़ जोगी जंगम सोफी संन्यासी अविधूत पंचागनिरा झूलणहार अलमसत फकीर जिके संसारनूं भागा थका फिरै. जड़भरत अतीत सम-रसरा छाकिग्रा राम-रस प्यालैरा पीग्रणहार दया-धरमरा पाळणहार करम-जाळरा भोड़णहार तापस अस्टांग जोगरा साझणहार सांत-रस मांहे गळताण होइ नै रहिग्रा छै।

तठा उपरांत करि राजान सलामति तिण सहर मांहे च्यार वरण, च्यार आश्रम, अढारै वरण, खट दरसण, परम-ग्यान-पुरायण धरम धरमरा पाळणहार दया-धरमरा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राखणहार देह-साझनारा करणहार बैठा तप करै छै. अनेक सत्रूकार सत धरमरा राखणहार खैराइत्तारा करणहार धजबंधी कोड़ीधज लाखेसरी दौलतिवंत चौरंग लिखमीरा लाडिला लोक बड़ा वापारी वाहवारिया सौदागर वहराम संद साहूकार घणा सुख चैनसूं वसै छै।

तठा उपरांत करि राजान सिलामति तिण सहिर मांहे छत्रीस पवन जाति रहै छै. तिण सहिर मांहे बाजार चौहटा मंडिया छै. सोना रूपा जवहर जड़ाव कपड़ा पट-कूल रेसम पसमरा बाब भांति भांति विसाईजै छै।

तठा उपरांति करि नै सराफ बजाज जोंहरी दलाल भांति भांतिरा बाब भांति भांतिरा पदारथ भांति भांतिरी अमोलिक वसतांसूं मोलावीजै छै. हटवाड़ैरी भीड़ हुइ नै रही छै. चौहटै मांहे रग तंबोलरो कीच मचि नै रहिओ छै।

तठा उपरांति करि नै भोगिआ भंमर लंजा छयल हुसनाक जुवान निजरबाज वाजार मांहै ऊभा जोहां खाए छै. चोहटै मांहै नगर-नायिका वेस्या लाख लाखरी लहण-हार सोलै सिणगार ठवियां थकां पूलांरा चौसरा पैहरियां थकां टोय अणियालां काजळ ठांसियां थकां वांका नैणांरी झाक नांखती पायलैरै ठमकैसूं घूघरैरे घमकैसूं विछीयांरै छमकैसूं रमझोळ करती अगूठा मोड़ती नखरा करती बाजारि चाली जाए छै. निजरांरा झड़ाका लागां थकां जुवानां छयल्लांरा मन गरेद बाज करै छै. भांति भांतिरी वेस, रसाळ, भांति भांतिरा खेल मंडि नै रहिया छै. भांति भांतिरा तमासा लागि नै रहिआ छै. इण भांतिरा मारू सहर मंडोवर सिवपुरी बिराजमान हूआ छै. कनां इंदपुरी-सी निजरि आवै छै।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति इण भांतरा सिद्ध खेत गिरंद ऊपरै राज पदवी राजसरा सुख कुंअरपदौ भोगवीजै छै. तिण राजान राजकुमार मारूनूं ४ ठौड़रा नाळेर आया छै. एकलंग चित्रौड़ गढ़रा धणीरा. लुद्रपुर पाटणरा, घाट सहररा, पुंगल नगररा डोला आइ पुहकर ऊपर उतरिया छै. अढ़ार दोष रहित गोधूळिक साहो सोभाड़ियो छ।

तठा उपरांत करि नै राजांन कुमाररो जांन घणै आडंबरसूं हाथी घाड़ा वहिल सुखासण रथ पायकरा वणाव कियां थकां बघेल जांनियांरे साथ लियां घणैं मोती जड़ाव जरकसीसूं लड़ालंब हुआ छै. घणैं सोंधे घणी केसरि अगरचैसूं गरकाब कियां थकां घोड़ां रजपूतांरै घूमरैसूं आइ तोरण बांदिओ छै. तठै आगै बखांणी तिण भांतिरी रायजादी गोरंगीआं सोलसिणगार ठवियां वाळ वाळ मोती सारियां तोरण कळस वदावै छै. मोतियै बधावै छै. प्रांखै छै।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तठा उपरांति करि नें राजान सिलामति नीला आला वंस केलि खंभ सूंना गलिआ थका कांचनारा कळसांरी वेह करि नें चौंरी पधराया छै. हथळेवो जोड़ि छेहड़ा बांधिया छै. सु जांणै मन बांधिया छै. जिके वेद सूरति ब्राह्मण छै सु अरणो अगनि लगाड़ि होम करै छै. घणौ गो-घृत नै कपूररी आहूति दीजै छै. वेद ध्वनि कीजै छै. दूलह नें दूलहनी सेहरा बांधिआ पूरव साहमा बेसाणीआ छै. सेहरा दीजे छै. चार फेरा फेरीजै छै. वीमाह कीजै छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति अनेक राग रंग वधाई वांटीजै छै. राय अंगण धोलहरे गेहणीं घणां मंगलाचार गीत नाद खंभाइची गावै छै. छत्रीस वाजां पंच सबदा वाजै छै. तांहरा नांम तंती १ वीणा २ किंनरी ३ तंबूरौ ४ नीसांण ५ एतो पांच सबदा आगै छत्रीस वाजांरा नाम कहै छै. ढोल ६ दमामा ७ भेरि ८ भूंगलि ९ नफेरि १० मदन भेरि ११ सुरणाई १२ झांझ १३ मंजोरा १४ मादल १५ श्रीमंडल १६ डफ १७ ऊड़क १७ रंग तंग १९ मुहचंग २० ताल २१ कसाल २२ तंबूर २३ मुरली २४ रिणतूर २५ संख २६ ढोलक २७ राय गिड़ गड़ी २८ रवाज २९ रावण हथो ३० पूंगी ३१ अलगचौ ३२ झालरि ३३ पिनांक ३४ बरघू ३५ सारंगी ३६ करनाल ३६ इण भांतिसूं छत्रीस वाजा वाजि रहिआ छै. अनेक मंगलाचार हुइ रहिआ छै. अनेक दांन सनमांन दीजै छै. अनेक रंग वधामणां कीजै छै. मोतिअें चौक पूरीजै छै. वीमाह पूरो कियौ छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति वीमाहरै समागम प्रथम दूलह दूलहणी मिलणरौ कोड रंग-रळी वधांमण कीजै छै. रंग महलें धवळहरें पधरावीजै छै. छेहडेरी राति गांठि छूटी छै. सु जाणें मनरी गांठि छूटी छै. राजांन कुमार घणें हरखसूं आणंदसूं उछाहसूं नवल रंग, नवल नेह, नवल नारि, नवल नाह प्रथम समागम सुख सेझरी वात उहां हीज जांणी पिण बीजौ उण सुख उण वातां कुण जांणै. दूलह नें दूलहणीरी जोड़ी देखि देखि नें लोक वार - वार वखांणै छै. कहै छै गंगाजी मांहै ऊंड़ै जल पैसि तपस्या करि ईश्वर गवरिजा पूजिया छै. वळे हेमाळै गळिआं कासी करवत लिआं अंगरी असत्री अंगरो भरतार पाईजै छै. सु यां हेलमा तपायो छै।

तठा उपरांति करिनै राजांन सिलामति पनरह दिन तांई जान राखि घणी मनहारि करि भांतिगारी भगति जुगति महिमानी करि सतरह भ्रख भोजनरा वणाव कीजै छै. दोइ भांतिरा अंन १ वायौ २ अड़क, तीन भांतिरा मांस १ जळजीव. २ थळजीव, ३ आकास उड़ण जीव, पांच भांतिरा सालणा १ तरकारी. २ मूलकंद, ३ डाल कूंपल, ४ पान-पत्र ५ फूल-फळी, पंड छालि, भांति भांति गोरस १ दूध, २ दही, ३ मिठाई, ४ लूण, ५ तेल, ६ हींग,७ वेसवार, ८ चरकाई. इण भांतिरा सत्तर भ्रख-भोजन कहीजै अढारमो ठंढो पांणी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कवित्त

दुविधि अंन पल त्रिधा साग पंच मांस धारण ।
गो-रस जुग विधि गिणित मिष्ट गति ए कवि चारण ।।
लूंण तेल साख हींग सात दस भोजन भत्तं ।
तिण्य अनंत गति रचै मान कुण गिणै कवित्तं ।।
संजोग एक अनेक सुचि षट रस षट विधि नेत सुचि ।
सुह विधि रसोइ समुझै भता सुपह अरोगै अन्न रुचि ।।१।।

तठां उपरांति करि नै राजान सिलामति भांति भांतिरा भोजन जाति जातिरा मांस जाति जातिरा पकवांन जिलेबी, लाडू, खाजा, मोतीचूर, सीरो, पूरी, साबूणी खेरां, पंचामृत ।

दूहा

मीठा मोळा रस मिलै, खाटा खारा जांणि ।
कडुआ दान कसाइला, ए षट रस वाखाण ।।

भांति भांतिरा पकवान घणैं सुरैं घीरा झारिअल मुहडै मांहै मेलियां गलि जावै मुंहडामें मेलियां छाती ठाढ़ी हुवै ।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति भांति भांतिरा अबरस, सिखरण, आंबा, नींबू, सूरण, आदा. भांति भांतिरा आचार अथांणां. भांति भांतिरी तरकारी. गोरस. मीठा मोळा खारा खाटा कडुआ कसाइला भांति भांतिरा षट रस सबाद लीजै छै. ऊपर कपूर वासिया गंगोदकरा चळू कीजै छै ।

तठा उपरांति राजान सिलामति घणां घोड़ा हाथी सुखासण रथ पायक जवहर हीरा मोती माणक सोना रूपा दइजें दीजै छै. घणां दास दासी दे नैं घरां सांमा ओझणा पधरावीजै छै. घरतीरो इंदु होअे तिण भांति जग छेल कर नैं घणैं सोनैं रूपैंरी मेह होइ नैं तूठौ छे. कवेसरां गुणी जणां मंगत जणांनु घणा दान दे कोड पसाउ, लाख पसाउ, करि हाथी करह केकांणरा महा पसाउ करि जसरा जांगी घुराइ नै वलियौ. आगैं नीली झांप लीआं बधाईदार दोड़िआ छै. नगर मांहै ओछव वधावीजै छै. मंगल गावीजै छै. गळिआं गळिआं फूल विखरीजै छै ।

तठा उपरांति राजांन सिलामति तोरण वांधीजै छै. घणां गज डंबर पेसारा करि मंडोवर महलें पधराया छै. सुभ दिन सुभ घड़ी सुभ मुहरत सुभ वार सुभ लगन सुभ वेळा मांहि आंणि पाट सिंघासण विराजमान किया छै. माथा ऊपर सेत छत्र विराजै छै. सेत चमर ढुळै छै ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तठा उपरांति राजांन सिलामति तिण राजांन कुंअर राजाउत मारू ठाकररें च्यार पटरांणी छै. नाम सिणगार सुंदरी १, सोभाग सुंदरी २, सरूप सुंदरी ३, मदन सुंदरी ४. साख्यात देवांगनां पदमणी विचित्र सुलखणी चोसठ कलारी जाणणहार विनैनी करणहार लिखमी पारवती गंगा सरसतीरो अवतार बारह आभूषन विराजमान हुआ छै. आठे पोहर सोळ सिणगार किआ रहै छै. किण भांतरा आभूषण किण भांतरा सिंणगार ।

काव्यं

लज्जा मान कटाक्ष लोचन कला अल्प स्थितो जल्पनी ।
रति भय अभया सु प्रेम रसा गय हंस बुल्लाइन ।।
धैर्य च सुचक्षमा सुचित्त हरखं गुह्य स्थलं शोभनं ।
सील ग्यान सुनीति नित्य तन सा षट् दूण आभूषणं ।।१।।

राजांन कुमार सोळै सिणगार विराजमान हुआ छै. सु प्रथम मरदरा सोळै सिणगार तिके किण भांतिरा कहीजै ।

काव्यं

क्षौरं मंजन चारु-चीर तिलकं गत्रं सुगंधार्च्चनं ।
कर्णे कुंडल मुद्रिका च मुकुट पादौपि चर्मोचनं ।।
हस्ते खड्ग पटंबरं कटि छुरी विद्या विनेा मुखं ।
तांबूलं मति सीलवंत चतुरं शृंगारक षोडस ।।२।।

वीजा स्त्रीरा सोळै सिणगार तिके किण भांतरा कहीजै छै ।

काव्यं

आदौ मंजन चारु-चीर तिलकं नेत्रांजनं कुंडलं ।
नासा मौक्तिक पुष्प-हार कुरलं भृंकार कुन्तूपरं ।।
अंगे चंदन लेपनं कुच मणी क्षुद्रावली घंटिका ।
तांबूलं कर कंकणं चतुरता शृंगारकं षोडशः ।।३।।

इण भांतिरा सोळै सिणगार किआं थकां रहै छै ।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामती तांह अतेउरी आगै ४ बडारणां सहेलिआं रहै छै. १ अनंगमंजरी, २ मदनमंजरी, ३ तनमंजरी, ४ पटुमंजरी. तांह बडारणां सहेलिआं आगै ४ पात्रां सिणगारणी खवास्यां रहै छै. १ गुणमाला, २ फूलमाला ३ विजैमाला. ४ दीपमाला. तिकां सिंगारणी खवास्यां आगै ४ विलासनी दासी रहै छै.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केतकी १, चंपकली २, रामकली ३, कामकली ४. त्यां दासिआं आगै सोळै सोळै छोकरी खिजमतदार रहै छै. इण भांतिरा चार राजलोकरा च्यार महलां आगै ४ नाजर खोजा रहै छै. मोहनराइ १, वसंतराइ २, सामरग ३, रामरग ४. महलांरी दोढ़ीरी जाबतां राखै छै।

तठा उपरांति राजांन सिलामति रितिराज वसंत वैसाख मासरा मंगलाचार विमांहरा सुख विलास करतां सरद रित आई छै. आसोज मास आइ संप्रापति हूअै छै. इतरौ गढ़ कोठ चोहटा नगर वीमाहरा मगलाच्यार दान प्रथम प्रस्ताव रा वात वणाव विचार गढ़ कोट नगर वीमाह वात वणावरो प्रथम परिछेद पूरौ हुओ छै।

*

तठा उपरांति राजांन सिलामति षट रितरा वखांण कीजै छै. प्रथम सरद रिति वखाणीजै छै. आसोज लागै छै. पितर पख पूजीजै छै. धरतीरौ मैल कादमजल पखाळ निरमळौ कियौ छै. सरोवरांरा जळ निरमळ हूआ छै. कमल पौइणी फूलि रहिआ छै. सरगरा देवांनें पितरांनूं मात-लोक प्यारो लागै छै. कामधेनु गायां छै सु धरतीरो पाको औषधीरा रस चरै छै. दूधांरा सवाद अमृत सरिखा लागै छै. सु कढ़ीरा बड़िआंरा गाटक लीजै छै. पंचामृतरा सवाद लीजै छै।

तठा उपरांति करि नै नवरात होम ज्याग हुई नै रहिया छै. नव दुरगारा नौरतां दसराहौ पूजीजै छै. दसराहैरा वणाव भांति भांतिरा सिणगारोज छै, छत्र डड सिघासण घोड़ा हाथी दरबाररा वणाव गहमह हुइ नें रहिआ छै. वाही आळ काढ़ीजै छै. भैंसा ऊपरे तरवारियांरा वाड त्रूटि नें रहिया छै. खाजरू नीझोड़ीजै छै. जिके दिगपाल रजपूत सामंत अजांनबाह ठाकुर अड़ाबोड़ दरबारे आइ खड़ा रहिआ छै. दरबार दुलीचा बिछाइजै छै. विछात वणि नें रही छै. दरबार वणियौ छै. हाथी घोड़ा फेरीजै छै. महोलां मुजरा कीजै छै।

तठा उपरांति राजांन सिलामति सरद रितरै समेरी पूनिमरौ चद्रमा सौळै कळा लियां संपूरण निरमळी रैणारौ उजळी चांदणीरै किरण करि नें हसनूं हंसणी देखे नहीं नें हंसणी हंस देखै नहीं छै. मिलि सकता नही छै. तारां बार बार माहो माहै बोलि बोलि नें वेरह गमावता छै. त्रण चांदणीरी सपेतो करि नें महादेव नदी धमळ ढूंढता फिरै छै सो लाभता नहीं छै. इंद्र एरावति जोतां फिरै छै. इण भांतिरी सरद रितरी सपेती चांदणीरी सोभा विराज नै रही छै. रास मंडलरा महोछव मांडीजै छै. राग रंगरा समाज ताइफा लागी नें रहिआ छै।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति उवै चतुरंगी रायजादी स्त्रीयांरौ झुंबिखो मोतीआंरी लड़ी हुवै तिणी भांतिरी ऊजळी गोरंगीआं ऊजळै गाति ऊजळै बावनै चंदनरी खोळि कियां ऊजळा मोतियांरा ग्रहणा पैहरियां ऊजळा वागांरा वणाव कियां ऊजळा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूलांरा चोसर घातियां हाथें ऊजळा पूलांरा गेंद उछालती थकी ऊजळी सखीयांरै साथै सहेलियांरी टोळी सो रास-मडल रमणरै ओछाह चांदणोरी रातिरी चली जाइ छै. ऊजळा वणाव कियां ऊजळी चांदणी मिलि गई छै. सु आगली सखीआंनूं जावती लखै नहीं छै, लखाव नहीं पड़तौ छै. तिणि सोंधेरै डोरै लगी जाए छै. ऊजळी ठकुराणी ऊजळा ठाकुर प्रीतमसूं जाइ जाइ मिलै छै. इण भांति सरद चांदणी रंग विलास मांणीजै छै।

तठा उपरांति देव जागिआ छै. काती मासरा वरत महोछव कीजै छै. घरि घरि दीपमाळिकारा वणाव हुइ नै रहिया छै. जूआ खेलि मंडि नै रहिया छै. दीवाली पूजीजै छै. चितरांम कीजै छै. भांति भांतिरा अनद वट कीजै छै. गाइखा खरेर मांडीजै छै. कुल संक्रातिरा दिन बराबर हूआ छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति हेमंत रितरो वणाव कीजै छै. हेमत रित लागी पछिरो वाउ फिरियौ. उतराधो वाउ वाजियौ. हेमंतरा बरफ ऊपड़िआ टाढ़ौ टमकियौ प्राळौ पड़ण लागौ. जिके धरतीरा धणी पताळ वासी भुयंगनें धणरा धणी दौलतवंत ओ बिहूं एकै वग हूंता सु धरतीरो पुड़ भेद नें विमरै पैठा. उठे रहण लागा।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति उणि हेमंत रित मांहै बालीमूंध सुहव गोरी गयां तनांरो रस छातीरो रस अधरांरो सवाद अमृत सरिखौ लागै छै. सु तो सरगांरा सुखासों पणि अधिक सुख जांणीजै छै।

दोहा

सरगे सुरा न बकरा, ना बाजंती बीण ।
नां कांमणि मेमत्तिआं, भूरा डळा अफीण ।।१।।

तठा उपरांति करि नें जिके बारै बारै वरसरी कांमणी तेरा चउदां वरसां मांहें पनरा सौलै मांहें मुगधा मध्या प्रौढ़ा बीमां पचीसां वरस मांही जिके कुदी जुवांनी कांमरी कंदली कांमरी कली रंगरी बूंटी जीवनरी जड़ी इण भांतिरी कांमणी त्यांरा उरस्थल पाकी नारंगीयां सारीखी अंणहार पाके वरन कोमल कठोर कुच अंसूं भीड़िआं थकां रहै. उवै कांमणी घणै त्रिसनागर कस्तूरी अंबर अंतर सांधेसूं गरकाब हुई थकी उवां राजांरा मलूकजादांरा मन राखती थकी लोट पोट हुइ रही छै. घणै मंगाय पांन तांबोलरा रस लीजै छै. उजळी सपेत बिछाइत ऊपरैं ऊजळै वणाव कियां ऊजळी रुसनाई लाग रही छै. इण भांतिसूं हेमंत रित मांहै रातरा सुख विलास मांणीजै छै. हमें ससिर रितरा वणाव कीजै छै।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तठा उपरांति राजांन सिलामति कर कें हेमाचळरा पहाड़रा टूकां ऊपरें ऊजळा बरफरा टूक बधण लागा. वड़ाई दिन लघुता पाई, इहां नदियांरा जळ जंमि ठंठ हूआ. नदी खीण पड़ी घटी।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति जिण भांत लैणांयत दीठां दैणांयत घटै तिम तिणि भांति दिन दिन निसि दीठें सूरजरौ तेज घटण लागौ नें सूरजरौ तेज घटियौ राति मोटी होण लागी. वड़ाई पाई. दिन लघुता पाई. तिणि ओछौ हुअ लागौ जिमि कोई भलौ भूंडै बराबर कीजै तरां घटतौ जावै. भूंडौ भलै बराबर कीजें वधतौ जाए. तिण भांति राति बराबर हुई छै. सूरजजी ठंढिरा मारीआ उतर पंथ छोड़ी नें दक्षिण सामां वहण लागा।

तठा उपरांति राजांन सिलामति उण रित मांहै सूरजजी पणि मकर संक्रात भेळा हुआ छै. ठंढिरा दबाया आपरै महले आया छै नें आकासनूं पंण राति छोड़ै नहीं. सूखरा पयोधर वधै तिण भांति आंबा दिन दिन वधण लागा. विरहणी कामणीआंरा मुखां कमळ कांमरी दाहसूं बळीआ छै. तिण भांति दाहे बाळिआ छै. कमळ पोइणी वनसपती वणराइ बळी नै रही छै. अगनी जळ सारीखी ठंढी लागै छै. जळ आग दाह सरीखौ लागै छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति तिण ससिर रितरी माह मासरी रातिरौ प्राळौ पड़ै छै. उतराधरौ पवन ऊतांमळौ टीयां खाइ नें रहीयौ छै. तिणि रित मांहै छोह ढालिआं ऊड़ा भोहरां मांहैं ऊंडा तहखाना मांहै खेर कोइलांरो मकालां जगाड़ीजै छै. तपन तापणारा सुख लीजै छै. उणि भांतिरी गरम ठौड़ मांहै ऊची सोड़ तलाई सेझवट तकिया घणू ऊजळा गरकाब गदरा परांनैरूसूं भरिआ थका घणूं ऊजळी गरकाब बिछात कीजै छै. पीलचोसां अढ़ारदानीआंरी रुसनाई लागि रही छै. तेज पुंज आसप(ब) आरोगीजै छै. प्यार कर नें सौंस दे दे नें प्याला दीजै छै. घणां लौंग पान बीड़ारा रस लीजै छै.

तठां उपरांति करि नें राजांन सिलामति घणी कसतूरी क्रिसनागर साख जबाद चोआ चंबेली अन्तर अम्बर भांति भांतिरा तेळ सुगंध सांधैसूं गरकाब हुआ थका ऊवे राजांन आलोजां आलीगारा नाह उल अलबेलिआंरा पदमणीआंरा रमण मांणै छै. तिण भांति गलबाखड़ीआं घातियां थकां बालौ जोबन मांणीजै छै. इण भांति सुख बोल करि रात पाछी नाखीजै छै. परभाति बुलगारांरा गदरा पाथरीजै छै. घणीं चवेली तेलरी मड़दन कीजै छै. हमांमैं गरम पांणीसूं नाहीजै छै. अंगोछी कीजै छै. वागांरा बणाव कीजै छै. सांधाखानैसूं आंणी सांधा हाजर कीजै छै. भांति भांतिरा साधा लगाड़ीजै छै. सभा मजलस कीजै छै. इण भांति सिसिर वणाव बखांणीजै छै सु कहीजै छै।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति हमैं आगै वसंत रितरा वणाव वखाणीजै छै. दखिण दिसा मलयाचल पहाड़रौ पवंन वाजिऔ छै. सीत मंद सुगंध गति पवंन मतवाळा मैंगळ ज्यां परिमल झोला खावतौ वहै छै. अढ़ार भार वनसपती मकरंद फूलादिरा रस मांणतौ थकौ वहै छै. अंबर मोरीजै छै. कूंपळां फूटीजै छै. वणराइ मंजरी छै. वासावली फूटि रही छै. केसू फूलि रहिया छै. रितिराज प्रगटीओ छै. वसंत आयौ छै. भमर मधुकर झंकार करी रहिया छै. मधुरी वाणीरा सुर करि कोकिला बोलि रही छै. बाग बागीचां दरखत गुल कारी झिलि फूल रहो छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति जिके छोगाला छयल छबोला जुआंन हूसनांइक फूलांरा छोगा नाखीआं थकां फूलांरा चोसर पेहरीआं थकां अगरचें मरगचें केसरिऐ कचमैंले वागै कीऐं घणैं चोऐ अंतर फूलेल गळा मांहि भीनां थकां घणैं अंबीर नै गुलाल मांहै गरकाब हुआ थका झोली भरिआं थकां दिसि दिसि छूटि रही छै. घणैं अंबीर नें गुलाल मांहै गरकाब हुआ थका अंबीर गुलाल उडि रहिआ छै. दिस दिस केसरिआं पिचकारी छूटि रही छै. आकास ऊपरै अंबीर नै गुलालरी अंबरै डंबरी लागि रही छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति सारीखा साथरी टोळियां कियां थकां झूल गैतूल पड़ि नै रहीआ छै. केसरिआ वणाव कीआं थकां आगै वखांणी तिण भांतिरी नाइका पात्रांरा ढूल चलीआ जायै छै. डफ चंग मुह चंग बाजि नें रहिआ छै. वीणा नाल मृदंग बाजि रहिआ छै. वांसली वाजि रही छै. ढोलकां बाजि रही छै. फाग गाइजै छै. फाग खेलीजै छै. नाचीजै छै. हास विणोद कीजै छै. हास रस हुइ नै रहीयौ छै. फागोटांरा मुख सवाद लीजै छै. घरि घरि वसंत राग हुलरावीजै छै. कामदेवरी दुहाई देतां फिरै छै. पंचम राग गाईजै छै. वसंतरा वणाव हुइ नें रहीआ छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति होलिका प्रब पूजिजै छै. आगै बखांणिया तिण भांतिरा अमल माणीजै छै. हमैं ग्रीषम रितरा वणाव कीजै छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति इतरा मां ग्रीषम रित आई छै. सो किण भांतरी वखांणीजै छै. नैरत दिसारौ ऊनौं पवन वाजियौ छै. उन्हालसी प्रगटीऔ छै. जेठ मास लागौ छै. सूरिज व्रख संक्राति आयौ छै. सु जांणीजै छै. सूरिज व्रखां नें दरखतांरा ओलो ताकै छै. तो बीजां लोकांरी कौंण बात. सूरजजी उतराध सामां वहै छै. सु जांणीजै छै. हेमाचलरौ सरणो लिऔ छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति ग्रीषम रित मांहै पवन पावक समान वाजियौ छै. प्रथी अप नें वायू अकास च्यारि तत पांचमै अगनी तेज तत भेळा मिल नै

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रहीआ छै. प्रिथीरा लोक विहंगम पंखी छै. सुर तरवरां रूंखारा औला ताकै छै. तरवरांरा पांन झड़िआ छै. सु जांणै वस्त्र विनां नागा डिगंबरां सारीखा नजर आवै छै. निवांणारा पाणी नीठिआ छै. पोइणो वलि नै रही छै ओछै जळ माछळा तड़फड़ी रहीआ छै. गजराज सूका सरोवर ढूढ़ता फिरै छै. सादूला केसरीसिंह ज्वालानल अगनीसूं बळतां थकां वीझा वनरा हाथिआंरी पेटरी छाया सूता विसराम करै छै. भुयंग सर्प नीसरीआ छै. सो लू नें तावड़ेरी बळता थकां द्रौड़ि द्रौंड़ि नें हाथीआंरै सीतल सूंडाला मांहै पेसि पेसि रहीआ छै. इण भांतरा सबळ जीव तिके निबळ हुइ नें रहीआ छै।

हमैं तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति ग्रीषम रित मांहे जिके राजानां ठाकुरनां सुख जेठ मांहै कहीआ तिके सुख सुर जेठ कहतां इन्द्ररी ठकुराई पिण नहीं ऊआं राजांरा सुख कहीजै छै. जो उण बगीचां मांहै हमामार महल छोह पंक ढालीआ घर तहखांना वणाया छै. झरोखा, जालिए, छाणिअें पवनरी हवा पड़ि नै रही छै. औ महल केसर गुलाबसूं छांटीजै छै. मांहे जळ गुलाबसूं चहबचा भरीआ छै. घणां मलयागर चंदण, केसर, कपूर, घणां गुलाब नें सुरा बरफरा पांणीसूं घसीजै छै. अंगे लेपन लगावीजै छै. अंगे खोळ कीजै छै. वीझणैं वाउ ढोलिआ छै।

तठां उपरांति करि नें राजांन सिलामति उवां हमामां महलां बाहरि बागबगीचांरा रसता लागा छै. चोकीए विछाइत वणी छै. पाखती जळ कूल छूटि नै रही छै. बागें रसतांरा चोहबाचा भरिआ छै. खजानां भरीआ छै. चलत नळांरा फुहारा छूटि नै रहीया छै. क्यारे गुलकारी, रंग रंगरी बूंटी, फुलादरी सबजी लागि नै रही छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति उण बागाइत मांहै ग्रीषम रितरा विलाइती वालेरा खस खानां, ऊंची ठौड़रा बंगळा, रावटी वाळा बंधरा ठांसारा गूंथिआ भांति भांति खसखानां वणाया छै, घणैं सीतल पांणीसूं सींचिआ थका वीझणां वाइआंयांसूं हींफा खाइ रहीआ छै. तठै विलाइतरी गूंथी चटाई अमोलक विछाइ रही छै. तिण ऊपरि बैठा छत्रीस रोग हरे ऊपरे ढोलिआ गिलमांरी विछाति बाणि नें रही छै. सेझां ऊपरै घणां फूल कपूर पाथरीजै छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति किण भांतिरा सरबत छांणीजै छै. घणै बेदानै, दाड़िम कुलीरा रस लोजै छै. सो घणी कालपी मिसरीरा भेळसूं घणीं एलची नै मिरचांरै भेळ बौह लागै थकै ऊजळा कपूर वासी गगोदक पांणीसूं ऊजळै गळणैं झोळि झोळि झारीजै छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति इकत्रीसमी तारारा पुराणा पोसत. मंडवाईरा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नीपनां, आगै बखांणिआं तिण भांतिरा, तजारी तूंज, घणीं कासमीरी केसर, घणी ऊजळी मिसरीरै भेळि कपूर वासीअै पांणीरी कल्हारी झारीजै छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति तजारैरी बाड़ीरी नीपनी, नीली घणूं पाकी, पुरांणी, आगै बखांणी तिण भांतिरी भांगि घणीं एलची, मिरचां, पांन, जावत्रीरै मेळसूं पाखांणरी कूंडीआं सरबंगरा घोटासूं ऊजळा प्राचांरी धमोड़ी घणैं ऊजळै मिसरीरै भेळ ऊजळा गरणांसूं झारीछै छै. ऊजळां प्राचांरी खवस्यां ऊजळा रूपोटां लीआं हाजरि खड़ी मिसरी, अफींणसूं अरोगाड़ीजै छै. कनाथां पड़दा तांणींजै छै. चोहबचा मांहै जल केलरा रंग तरंग मांणीजै छै. कुंअर पदौ भोगवीजै छै. चौमासो लागौ छै. दूसरौ असाढ़ आइ संप्रापति हूओ छै. तठा आगै वरसात रितरा वणाव कीजै छै, सो आगै बखांणीजै छै।

दोहा

सरद हेम नें सिसर रित, रिति वसंत ग्रीषम्म ।
वरषां दांन बखाणि तूं, ए षट रित ओपम्म ।।

इति श्री षट रितिरै वात वणावरौ दूसरो प्रस्ताव पूरो हूओ ।

※

हमैं तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति एकाणि प्रस्ताव महाराजा श्री राजेसररा परमांणा आबू गढ़रा मंडावरि आया छै. अजमेर थांणैरो हुकम हुयो छै. महाराजा कुआर श्री राजान राजाउत मारू मंडोअरसूं अजमेर पधारिआ छै. फौज बंधीरा बणाव कीजै छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति अतरा मांहै पातसाह महमद मुसतफाखांनरा चार दूत विचरिआ हूंता त्यां हकीकत राजांनरा पातसाह आगै पोहचाई. सत्तर खांन बहत्तर उमरावी बांण खड़ा छै. पातसाह श्री राजांन कुअर राजाउत वात पूछै छै. राजांन कुअर किसाएक रजपूत छै. दूत हकीकत कहै छै. जु राजांन कुअर उठती वहीरो जुवांन आनजांनबाहू राजहंस लीलंग छै. भेदग छै. तिसा ही वागांरा वणाव, तिसाही मूछांरा मरट, तिसा ही भुजांरा आंमला, तिसा ही पोरसरा गाढ़, तिसा ही कामवटरा अंग, तिसा ही रजपूतवटरा आचार देख नें महाराजा राजेसर अजमेररै थांणै राखैआ छै. हसम हुकम सौंपीआ छै. हजरित सूं मालिम छै। राजांन कुअर बत्रीस लक्षणौ छै. तिके कहै छै. सत १, सल २, गुण ३, रूप ४, विद्या ५, तप ६, अलप अहारी ७, वडोचित उदार ८, तेज ९, धनकर १०, दोलवंत ११ सकलनाइक १२, दयावत १३, विचखण १४, दाता १५, बुधिवंत १६, प्रमाणिक १७, जस १८, उदिम १९, लाज २०, धीरज २१, राज सनमान २२, सूर २३, साहसी २४, बलवंत २५, भोगी २६, जोगी २७, भुजायण २८, भाग्यवान २९, चतुर ३०, ग्यानी ३१, देवभगत ३२, पर उपगारी ३३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कवित्त

सत्त सील गुण रूप विद्या तप अलप आहारी ।
धन उदार जस तेज चतुर नाइक उपगारी ।।
बुद्धिवंत बलवंत राज सनमान विचखण ।
भोग जोग गुर भगत भाग परमांण भुजायंण ।।
जस लाभ धीरज साहस धरण दया ग्यांन उद्यम करण ।
रिणि सूर दांन राजांनरा विधि बत्रीस लखण वरण ।।१।।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति फेर पातसाहजी हुकम कीयौ. हकीकत त कहै छै. कवले जिहांनिआं पातसाह सिलामति राजांन कुमार षट भाषा निवास छै. वदै विद्यारौ जाणहार छै।

दोहा

सुर आसुर अरु नाग नर, पसु पंखीकी वांण ।
जोदानां जाणै सुपह, सो षट भाष सुजांण ।।१।।

काव्यं

ब्रह्म ज्ञान रसायणं सुर धुनं वेदं तथा जोतिषं ।
व्याकरणं च धनुर्धरं जलतरं मंत्राक्षरं वैदक ।।
कोकैनटिक वाजवाह नरसे संबोधनां चातुरी ।
विद्या नाम चतुर्दस प्रतिदिनं कुर्वंति नो मंगलं ।।१।।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति तोसरै हुकम दूत अरज कीधी जु राजांन राजेसररो तपतेज परमेसर परब्रह्म, अजनम, निरजण, निराकार, संसार तरोमणि, संसार साधार, ईस्वररा अवतार. हिंदू महाराजाधिराज श्री राजांन राजावत मारू अैरावत सूरजवंसी इण भांतिरौ छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति इणि भांतसूं राजांनरी वात सुण नैं अजमेररै थांणैरी हकीकत सांभल नै आदि वैर उगराहनूं असुरांण तुरकांणरा दल राजांन ऊपरै विदा हूआ सो किण भांतरा कहीज छै. रहमांण रहीम अलाह परवर दगार, पीरां पिकंबरांरी औलाद, चौवीस अवलीआंरी करामात, अवलीए आसतीक वले जिहांनिआं हजरति पातिसाह मुहमद मुसतफाखांनरा उमराउ हुसन हुसेनखां लीखांन सारीखा गोरी, पठांण, सैद, मुगल, उजबका मुसलमान आकीनदार, त्रीस पारारा पढ़णहार, पांच बखत निवाजरा करणहार, सुद्ध कलमेरा पढ़णहार, पेसता,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आरबी, पारसीरा बोलणहार, आउखी ढाढी राखाणहार, बालि बाधि कोडोरा मारणहार, अवली मूंठीरा तीरंदाज, असली जादा, कोल बोलरा राखणहार, गाजी बहादर ताजक नीलक तार, जरबाफ वादले, आसावरी, विलाइती, हजारी कपड़ेरा पहरणहार, देस देसरा, जाति जातिरा, मीरजादा भेळा हूआ छै. माही मुरातवा समेत पोहकर अजमेररा थाणां ऊपरै विदा हूआ छै. आवाज फूट नें रही छै।

तठा उपरांत करि नें राजांन सिलामति पातिसाहरा दळ बादळ मागर थाट ऊपड़िआ छै. बीस लाख असवार पाखरीआ लोहमीवाड़ किआं बगतर, हाथल, टोप, झिलमें, चिलकतां ऊपरें पूरी सिलहा किआं, गरकाब हूआ थका छत्रीस आउध डाबिया रहै छै।

कवित्त

सर सीगणि छुरि कुंत सांग गेडीहल मोगर ।
गोळी गोफण संख गुरज मूसळ घण तोमर ।।
प्रासी चक्र खड़ग्ग गदा चाबक नें फरसौ ।
कुहकबांण बदूक ढाल कट्टार खपटसौ ।।
सेलह त्रिसूल सांठो धको वली वंसहड़ि कड़ि लगण ।
भूकंत चहुलि सूळो चटक दंडायुध छत्रीस रणि ।।१।।

इण भांति छत्रीस आयुध डाबिआं, नव हाथां जोध खेपांन तुरक, अवला पाघड़ांरा जमरांणेरी जमात सारीखा निजरि आवे छै. जाणें कलिपत कालरी समद उलटीआ छै. तिण भांतिरी समंद व्यूह सेन्यां कीआं चाली आवे छै. कांही जळजात सेन्या कीधी छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति अठीना सका बंधी हिंदू भाजणी परत राजावत राजांन मारू गुरडव्यूह, ग्रिधव्यूह, चक्रव्यूह, सेना रची छै. बिहूँ फोजांरी घड़स चालो जावै. हसमरी धसम पड़ी नें रही छै. सूरजि रथ खांचि नें रहीआ छै. गयणा गरज डंबर छायो छै. मूरिज पीळै पांन सरिखौ निजर आवै छै. मुरचांरा मुकामला मंडाया छै. अणीमेत्र हूआ छै. रायजादारा भाला भलकि नें रहीया छै. तबल बंधा मीरजादा बाकां बहादरावां नें तारा तवल बाजि नें रहीआ छै. भेर घाव लिनें रह्यौ छै. नोबतरा टकोरा लागै छै. नौबति भींगड़ि पड़ी नें रही छै. भेर, नफेर, करनाल भभक नें रह्यौ छै. सुरणायांरी कहक पड़ि नै रही छै. वडो राग सिधुड़ो वागि नें रहीआ छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति किलकिला नाळि छूटी सु गोळांरी आगा- जमूं धरती धमकि नें रही छै.जबर जंग नाळ्यांरा निहा उपड़ि नें रहीआ छै. गज नाळ्यां

सुतर नाल्यां, जंबूरा नाल्यां, रामचंगी हथ नाल्यांरा चणणाट वाजे छै. आकास छायौ छै. सु जांणै तारा छूटै छै. कुहक वांणरी कहक पड़ि नें रही छै. आतस आराबा हवा-यांरौ मारको पड़ि नें रहियौ छै. अधार घोर हुइ नें रहीओ छै. इणि भांतिरौ ओसर मंडि नै रहीयौ छै. रौद्र रस प्रगटीओ छै ।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति पचास टांक चिलेरोखा अणहाणी कबाणरा घोकार वाजि नै रहिआ छै. ओंगडा भलोड़ांरा बूम पड़िआ छै. सत्रांये मेंहरौ जोरि सोक वाजै तिण भांति पंखांरो रुग वाजि नें रही छै. केवर दुवासू कोरं पंखारै फूट फूट नीसरै छै. तीरां गोळीआं रै मारक पड़तै जिनावर पांख समारण न पावै छै. आकास ऊड़त पंखी पड़ै छै ।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति असवारांरी वाग ऊपाड़ी किलकिला ज्यों ऊपाड़ि ऊपाड़ि हेमरां नांखीजै छै. झूसणां ऊपरै बरछी चमकि नैं रही छै. रामण गांजा सेलारा धमोड़ा पड़ि नैं रहीआ छ. सरकूंत आर पार हूआ छै. बगतरांरा तजा फोड़ फोड़ पूठी परा अणीआला अणी सीसरै छै. सु जाणां धीवर पूठै जाल मांहे मछा मूंह काढ़ीआ छै ।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति जिके सूर सामंत रावताला छै. सु हाथीआंरा कूंभथळा दांतूसलां पाउ दे दे नें घाउ वाहै छै. भंडा नीसांण पाड़ै छै. पातिसाहरा गूडर गाहीजै छै. गजटला गाहीजै छै. वीरा रस ऊपनौ छै. वीरा रस मातौ छै. वीर हाक वाजि नें रही छै. नाराजोआंरी भांट पड़ि नै रही छै. वगतरां ऊरां तरवारीआंरा वाड त्रूटि नै रहीआ छै. जाणों बादळा माहै वीजड़िआंरा सिला ऊपड़िआ पाखरां ऊपरै सारधांरा फूलधारां वाजी सु ठणणणाण जाणैं परभातरी भालर ठंणकी, नरबगतर विधंस हुआ. कनां वह भायामी रांति वाही. तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति फ़ैतकारी गहकि नें रही छै. भयानक रस मातौ छै. भयानक रस हुइ नैं रहियौ छै ।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति राजांन राजाउत मारूरा सामंत राइजादा एक पाखर, लाख पाखर, अणीरा भमर जांहरा पग मेर माथै मंडीआ छै. एकूकै रावता लैर हाथि हजार हजार मीरजादा पड़ीआ छै. आगलै कवेसरें कहिओ ।

दोहा

सुर असुरा इण आहुड़ै, आही एक अवक्क ।
पिड़ि जितरा हींदू पड़ै तेता सहस तुरक्क ।।

मेछांण कटि घांस हुआ छै. चालीस कोस रिण साथरै पंजा हजार पड़िआ छै. करकारी वाड़ि हुइ नें रही छै. विणजारांरी वालद पड़ै तिण भांति घोड़ां भड़ां हाथीआंरा गरा पड़ीआ छै. वसंतरा केसू फूलै तिण भांत घणां घायांसूं धाया थका

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डोलिग्रां, झोलिग्रां ऊपड़िग्रा छै. जिके ग्रवसांण सुध खत्री छै तांहरो ग्ररोगी धिखै छै. जिके सतवंती छै तिके सांमरै साथ बळण चालीग्रा छै. तिके सती ग्रंगनि सनान करि नै सरग भोगरा सुख मांणै छै. पूठै करण रस कीजै छै. जगवासी लोग छै त्यांनां करण रस ऊपनौं छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति राजान राजावत ग्रैरावरै रिणखेत हाथी ग्रायौ छै. रिण जीत नगारा धुबै छै. फतैरा सैवानां वागा छै. जस जैतरा डंका वाजिग्रा छै. कुसल खेम ग्राणंदरा वधाइदा दौड़िग्रा छै. घरां साम्हां फौजांरां घड़ूस चालीग्रा छै. ग्रावै छै सु किण भांत वखांणीजै छै. पातसाह देरा हसंम रखत तखलूग्रां हूंता सु ग्रांणि थाणैं दाखलि कीग्रा छै. ग्रजमेररा थाणांरी जमीत कीजै छै. घरि घरि मंगळाचार ग्राणंद वधामणां कीजै छै. घणां माल निजराति उवारीजै छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति तिणि प्रस्तावि, राजानरै सिकारनो ग्रसवारी हुइ छै. नौबत टकोरा पड़ि नैं रहिग्रा छै. बाहरि डेरा कीग्रा छै. ग्रसपका खड़ी हुई छै. तंबू, समीग्रांणां, सिराइचा, रावटी, वाडि समेत करणाटी, गूडर तांणीग्रा छै. दळ वादळ लागि नैं रहिग्रा छै. रजपूतांरा थाट मोगर मिळै छै. महोला लीजै छै.

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति हुजार तोपची खंधार, शब्द भेदी ग्रागबर जागरा जाळणहार, ग्राकास उड़ता पंखी पाड़ै. इण भांतिरा नाळ गोळी दारू जामगी साज-बाज किग्रां थकां, मुंहडा ग्रागलि सजि नैं ऊभा छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति फौज बंधीरौ वणाउ कीजै छै. फौजां ग्रागै ग्रातस चालै छै जबरजंग नाळि, किलकिला नाळि, जंबूरनाळ, गजनाळ, हथनाळ, सुतर नाळ, कुहकवांण, राम चंगी कई भांति भांतिरा ग्राराबा रहडूए घाती ग्रावै छै.

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति हाथी सज कीग्रां वहै छै. सु किसड़ा वखांणीजै छै. थेट सिंघलदीप ग्रनोप देसरा नीपनां, वेधगरतांह, भद्र जातीग्रां, हाथी-ग्रांरां कुंभाथळा भांजिग्रां सवामण मोती ग्रांमळ प्रमाण नीसरै. ग्रढ़ार भार बनसपती सूं ग्रोघसतां थकां हमला खाई नै रहिग्रा छै. उरै गजराज रेवा नदीरै कांठै द्रह ऊपरै पांचसै हाथीर हूलकै लीग्रां मोड़ी खर करि नैं रहिग्रा छै पांणीरी छोळांरा झकोळा खावता थका गज कीला करि नैं रहीग्रा छै।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति कपोलांरै मदगंध करि नैं भौरांरा झोर पड़ नैं रहीग्रा छै. भौरांनूं वैठा सासहे नहीं, सूंडीर वरां बलाका खाइ नै रहीग्रा छै. तठै कालवूत हसतणीरै फरस करि नैं छिबितरी खाड मांहै पड़ै छै. पछै लोह सांकळरा प्रास

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाखि नैं तिके हाथी पकड़ीजै छै. इणी भांतिरा सींघली गजराज वेसास नैं आंणीआ छै. तांहनूं घणां मलीवा, वेसवार, मोगर दे दे नैं पाटि आंणी नैं सभाया छै. तांह गजराजां नूं सार जड़ीआं जंजीरां लोह लंगरां लगाड़ि नै खभू ठाणांसूं छोड़ीआ छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति वडा जूह गयंदा गजराजांनूं गड़ां चरखीआं मारि, पोतारि, नीठ बसांणीआ छै. रुमाल फेर झाड़ीजै छै. आंमळा तेलरो बोह दे नैं काळा जूह कीआ छै. गजराजांरा भाल कपोळ सूंडाहळ घणै लाल सिंदूरसूं चरचिआ छै. जाणैं साख्यात गुणेशजी प्रसन्न हूआ छै. कनां इंद्र धनुष फाबिऔ छै. तला जोड़ पटा झरत कपोलांरा दांण छूटि नै रहीआ छै. तांह गजराजांरा मद छरित बारेह मास ऊतरै नहीं छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति पाखती सेत चमर विराजिआ छै. जाणै मेरगिरसूं गंगाजी धारा चली छै तांह गजराजांरा ऊजळा दांतूसल वंगड़ीआंसूं जड़िआ छै. जाणै घटा बीच बगलांरी जोड़ी वडी दीसै छै. देवळरो घटावळि जेम घंटा ठणक नैं रही छै. जांणै घणा वूठा पावस डेडरा डहक नैं रहीआ छै गजराजांरा डील रेसमी नाड़ीसूं भीड नैं जटा-जूट कीआ छै. जरबाफ वणावटरी झूलांसूं ढांकिआ छै. सार पाखरसिरी झालरी लोहनी कोठी ऊपरैं सनाह करि नैं गरकाब कीआ छै. गजराजां ऊपरां गजढालां ढळकि नै रही छै. जांणै पहाड़ां ऊपरैं खजूर कल आंबारी मंजर ढळकि नैं रही छै. गजां ऊपरैं धजां, नेजा, चीधां फरकि नै रही छै. जांणै हेमाचलरै टूकां माथै कसू फूल नै रहीआ छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति उआं गजराजां आगै गड़ां चरखी दारू आरावा छूटि नै रहीआ छै. जांणै धूंधळै पहाड़ पाखती रोझी लाग रहा छै. मदि वहतां मतवाळा ज्यों पग नीठ भरै छै. गड़ांरा तोड़णहार, दरवाजांरा फोड़णहार, दळांरा मोड़णहार, दळांरा पगार, फोजांरा सिणगार, इण भांति गजराज सिणगार पाखरीआ छै. पीलवांण कूंभाथळां माथै पगारा आंगूठा चलावै छै. गजवाग खैंचे छै. धता धता करै छै. नाग जो छछोहा जांणै बादळांरा लगस पवन जोरसूं चालीआ जाअै छै. इण भांतसूं गजराज मुंहडा आगै ही डुलै छै. डोहां करता हमलाखाना वहै छै. इण भांतिरा हाथिआंरा हलका साज वाज सहित साजंति वणाव नैं राखीआ छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति अजमेर थाणैरो मुकाम किऔ छै. सुखासण पालखी चोडाल रथ पाइक बणि नै रहीआ छै. कटकांरा खूर पडि नै रहीआ छै. हाथी लड़ावीजै छै. पाइक सिरंम साझै छै. फूलहाथा फेरीजै छै. भांति भांतिरा तमासा लाग नै रहीआ छै।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति चौमासारी छावणी हुई छै. आगम रित आवी छै. आसाढ़ धूधलाओ छै. उतराधरी घटा काली कांठलि ऊपडी छै. आड़ंगरी गुडलि मांहे ऊंडो गाजीओ छै. बगला पावस बैठा छै. पंखीआं माला स मारिया छै. पावस पडि नै रहीआ छै. परनाळ खाळ पहाड़ खड़कीआ छै. चात्रग मोर बोलि नै रहीआ छै ।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति आगै कवेसर गंगेव नींबाउतरो बेपारो बखांणीओ छै. तिणरी उकति आंणी छै. तिण मांहे कवेसुर कहै छै. वात वणावरो पण भेळ कियो छै. पण उण कवेसर रो उकति बराबर नहीं. हमें बरखा रित मांहे श्रावण नैं भाद्रवैरी सांध बरखा रित मंडी. दह बीजां झड़ लायो डाळ डाळ अंबर चमकिओ छै. सेहरां पाखर पड़ी भाखरांरा माल हरोआ. पांणा एकनाळ भरिआ. चोटोआळी डहकि नै रहीआ छै. परभातरै पहररी गाज आवाज हुइ नै रहा छै. राजा नै सिकाररी उमंग मनमां आंणी छै. हुसनाकां तरकसांसूं मंण कपड़रां खोळी उतारि लीधो छै. कबाणां चाक कीज छै. हिजार अैराकीआं आरबीआं उजबकीआं तुरकीआं ताजीआं पलाण मंडीजै छै. तिके किण भांतरा अैराको, आरबी, तुरको, उजबकी, ताजी जिके लंकी पाररा उतारिआ आंजणिआं आंखीआंरा मूंडीकाट अैराको वाउ मूठ पकड़ता डाल भागा मांकड़ ज्यों डांण मांडता आडो आंकुलाटां उभळतां असील विलाती जाहरा सरीर आरीज्यां ऊजळा झांखं मुखमजी पसमरा, कलोसो कांनरा, झूठमो द्रेठरा, वूकड़ा कंधरा, लोह में बंधरा, तोछड़ी पूंठरा, चोवडी, वूबरा, चांमरो पूंछरा, निमसो नलीरा, वाटके नख्खरा, धावणो द्रोड़रा, मूडा स्रिघ ज्यौं कूदता, नट ज्यों नाचता, कुळचता, अकुळणो नैण ज्यौं ऊछाछळां, आपरी छाआंसूं डरपता, बाज पंखी ज्यों ऊड़ाण झांपतां, जांणै सूरजरा रथ असमानरै फैर लागि नैं रहीआ छै. प्रिसण ज्यों मुख बांको कीआ थकां कना अणमिलीआं जारसूं छिनाळ मुख बांको करि रही, वूंभारा चाक ज्यों कूडे फिरि रहीआ छै. ढाळ सरोखा चौड़ा, उर ज्यारा आंठुआंरा टलासूं हाथी धको खाइ सकै नहीं. माणसरा कमल ज्यों नासा फूल रही छै. नासारा फरड़का वाजि नैं रहीआ छै. बेपख सूध जिके सालहोतरमां वखाणिया तिहड़ा इण भांतिरा तेजी. घरारा खूदणहार खुरताळांरा अधखुरांसूं धरती धमकि नैं रही छै. तांह अैराकीआं. आरबीआं, उजबकीआं, तुरकीआं, ताजीआ पूठ पलांण मंडीआ छै. सो किण भांतिरा पलांण जिके समंकरी नीपनी मोरबो पलाणी, दामण चमकती, पिड़ामारी लगामी आरसी आलीआंरी छालीआ पाखरां घातिआं पलांण लगांण जीण साकति साझ-वाझ-लूंब-झूंब करि नैं श्रामणरी त्रोजणी ज्यों पांडवे सिणगार पाखर घाति चोकि आंणि हाजर कीआ छै. राजांन राजावत मारू किसो एक जी जिसो एक खत्री धरमरी चौवीस आखड़ा वहै. कुंण कुंण आखडी कहै छै. दानरें दातार, झूझारें झूझार, परभोमि पंचायण सै देसहाथी, काछ वाच निकलंक, परनार सहोदर, आवती जावतोरी मूठि पूठि जोआ नही.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

टपारी वसुत राखै नहीं. झलफलीआ झांसि मुडीआ मेर, पुलीआं पखत साररा, पाचरा लोहरी गांठि, विरदारौ भारो, घाट छराड, थाका सतरौ विसराम करड़दंत, कामरौ कोट नेठाह धरधोर, वहतौ काळ, ढहीओ काहर, तोरणरा आखा, अगनि फूल, सतीरौ नाळेर, काळीरौ बेहड़ो, रुळाआरौं जोड़, रांकांरौ मालवो, कुंआरो घड़ारौ बींद, पांचसै भड़ां भाइयां भांत्रीजां लिआं हजार असवारांरी ढाळ किआं, भूखाआं लोह लिआं, काळै बरछिआंरै चूंग किआं, चड़तै सूररौ सिकार चाड़वौ छै. भेर घाउ वळिओ छै, होकारै होकारो होइ नै रहिओ छै. लाल बरछी थकी नै रही छ. पगेज बराबर चालता घोड़ांरा हाठुआं उपरि अध लोहाआंरा झाग तजारेरी वाड़ीरी भांति विराज नैं रहिआ छै. फौज बराबर चालतां आकास उरै सेहरा डंबर हुइ नै रहिआ छै।

तठा उपरांत करि नै राजांन सिलामति सिकार पाखती जिनावर चालिआ जाआं छै। सेत सूआ, सबज सूआ, सारों, मैनां, कोइल, तोतुर, कागा-उआ, सेत काग, सेत कबूतर, उडण गिरहवाज, लख जातिरा पंखी, भांति भांतिरी झीणी भाषा बोलता, पढता कठपिंजरै घातिआ वहै छै।

तठा उपरांत करि नै राजांन सिलामति बाज, कुहो, सिकरा, सींचांणा, जुररा, तुमती, हुसनाकां सारवानांरा हाथां ऊपरांसूं सगगाट करता छूटै छै. वाइ पखरा जोरसूं नीला घास धरतीसूं लपट नैं रहिआ छै. आसमानरै फेर जितरा जिनावर चिड़ी, कमेड़ी, झाट मांही आवै छै. तितरा झपटांसूं मारिआ जाआं छै।

तठा ऊपरांत करि नै राजांन सिलामति बड़ा सिकारी सिघळी, सादूळ, पटाळा, केहरी नवहथां, कठोरीआं, रीछीआ, तेलिआ, तीदूला, लकोरिआ, बघेरिआ, चीतरा, भांति भांतिरा, जाति जातिरा, नाहर सांकळे जड़िआ रहहुआं गाडे बैठा, कसता, कणणता, बूंबाड़ करतां वहै छै।

तठा उपरांत करि नै राजांन सिलामति कावली कूतरा, लाहोरी कूतरा, विलाती कूतरा, लोलमी, लालमी जीभरा, वळिमें पूंछरा, लापड़ कानरा, दाड़मी दतरा, सिघरा हथरा, केहरी कंधरा, झांफरै रोमरा, के विना रोमरा, इण भांतरा कूतरा, चीतरा, मुखमळो, रेसमी, मुखांरा वणाआ, सांकळीआं जडिआ, वेहलां पालखिआं ऊपरे बैठा वहै छै।

तठा उपरांत करि नै राजांन सिलामति सिकारी ठौड़ पहाड़ांरी पाखती वनारा झंगार मिळि नैं रहिआ छै. जांणै घणां दिनांरा विछड़ी मीत मिळे तिण भांतिरा रूंख मिळि नै रहिआ छै. रूंखांरा झुंड महादेवरी जटा ज्यूं जुड़ि नै रहिआ छै. रूंखांरा जूट जुवान मल्ल जुटै तिण भांतिरा जुडि नै रहिआ छै. रूंखांरा जूट रामचदरी वानरी सेन्या ज्यों रीछांरी जमात सा निजरे आवै छै. तिण भांति दीसै छै. इण भांतरा वनझंगरा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मांहि हरिण, सूअर, सांबर, रोज, खरगोस, गैंडा खग, भांति भांतिरा जानवर वनभ्रंगरा मांहि चरै छै. सिकाररी हौंक बाजि नै रही छै।

तठा उपरांत करि नै राजांन सिलामति मांखिरा उकासिम्रा सूअर भाखरांरा मोढ़ा फाड़ फांड़ नै निकळिम्रा छै. सूम्ररें राते खून किम्रो छै. सरे गुलवाड़ि विधासिया छै. त्यां सूरांरै मोरै म्रेराकी, म्रारबी, उजबकी, तुरकी, ताजी लगाड़ीजै छै. सतपुड़ा पहाड़ां मांहै दराजा बदूकांरा खललाट पड़मादा पड़ि नै रहिम्रा छै. ग्रीध पंखांरा सरांरी सोक वाजि नै रहिम्रा छै. सेलांरा धमोड़ा पड़ै छै. सेलांरा फळ सूरांरै मोरै भांजि भांजि रहिम्रा छै. सूरांरै मोरै भूखा बाज ज्यों म्रसवार नै घोड़ो म्राफलि रहिम्रा छै. सूम्ररांरो सिकार मांणीजै छै. एकल ढाहीजै छै. रहड़ मंगाइजै छै. रहड़ घाति घाति नैं चलता कीजै छै. इति फौज बंधी मसलत भारथ जुध सिकाररो तीसरो प्रस्ताव पूरो हुवो।

दोहा

फौजबंधी मिसलत जुध, भारथ हूंदो भाव ।
राजन बात बणावरी, ए त्रीजो प्रस्ताव ॥

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति रातो छाके ते वारु पिम्रा तासीम्रा त्रिखावंत हूम्रा. बेपारहरैरी हांस तरस माणणनूं हजार म्रसवारां तलवारे माथेनूं वाग वाळी छै. सो किण भांति तलाव जांणे दूसरो मानसरोवर रातासी एके रडिरं माथै पांडरी नीर पवनरी मारिम्रो कराड़ै फींण म्राछटतो ठेपां खाइ नैं रहिम्रा छै. कही म्रांसमां पेठां पगांरा नख म्रांखै, दूधरै भौळै बिलाव म्रांसै पानिरै फेर केलिरै गिरदवाइ मांहे सारसांरा टोला भींगोर करि नै रहिम्रा छै. मांहे सूम्रा कोइल मोर बपैया बोलि नें रहिम्रा छै. म्राडा डहकि नें रहिम्रा छै. बतकां बकोर करिनै रहिम्रा छै. डेडरा डहक नें रहिम्रा छै. हस कोला करि नें रहिम्रा छै. कमल पर फूल नें रहिम्रा छै. पोइणी थरकि नै रहिम्रा छै. भवर गुंजारव करि नैं रहिम्रा छै. पालिरै फेर गरदवाइ उपरि वड़ नै पीपल साख मेल हुइ नं रहिम्रा छै. ऊपरि वड़ा नैं पीपरांरी घटा बधिजिनें रही छै. नैं तलाव नें ते छायारी हांस तरस माणणनूं हजार म्रसवारांसूं राज नें म्राइ पागड़ा छाडिया छै. होलि में जिहाजां पाथरीजै छै. पंच रंग बादळ होइ तिण भांति राग रंगरी बिछाइत चांदणी कीजै छै. भांति-भांतिरा हुलीचा गिलमां ढाळीजै छै. फूलवाड़ीरो वणाव वणि नै रहिम्रो छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति मुखमली जरबाफती, मखतूल, रेसमरो कलाबतू जरकस लपेटिम्रा लूंबा समेत गादी तकिम्रा बिराजमान कीजै छै।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तठा उपरांति करि नैं राजान सिलामति बरछियांरी चकारी उतरिम्रो छै सो किण भांतिरी बरछी जिके पांच पांच, सात सात ताकड़िम्रांरा मणगांजा सेल उबा वरिम्रां मांरा हाथारा, सेलारै टेकिया सुवरिम्रां मैं सेलांरासूं उतारि नैं उम्रां हीज बडा नैं पोपलारीम्रां साखासूं नागळिम्रा छै ।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति कबाणांरी चकारी उतरै छै, सो किण भांतिगी कबांणा थेट विलाती, सींगरी सिगणीं, तूंजो हलका, अठारै टांक चिलैरी खाम्रणहार, मुलातांण उतपति, कुरबाण रहति, बारै बारै वरस दरिम्रावा माहे जेहाजां हेठो चलो म्रावी, चिलैरी तांणी, हुँकार करती, बड़ै पठाणरी बेटी ज्यूं तूहीर करतो, इण भांतिरी कबाणांरी चकारी उतरै छै सु उम्रांहीज बड़ां नैं पीपलांरीम्रा साखासूं नागलीजै छै ।

तठा उपरांति करि नैं राजान सिलामति म्रतरा माहै ढाला म्रलीबंध छूटै छै, सु किण भांतिरी ढालां सुध गैंडी मणांरी मारी बधै, सुहूरतोली रग लागै. तीर, तरवार, कटारी, बरछीरी बाबी नहीं, सूम्ररी बालरडी लागै तो खरड़कनै ऊतरै. गोळी लागै तो उम्रठ नैं पाछी पड़ै. सोनहीरी फूला नकसी फूलां मुखमलरी गादी घातिया, सांबरा हथवासां, कुलगांरी ढाबा सहित ऊम्रांस राजानांरा हाथांरी उम्रांहीज बड़ा नैं पीपलारीम्रा साखासूं नागळिम्रा ।

तठा उपरांति करि नैं राजान सिलामति म्रतरा मांहै तरकसांरा कुहटाऊ बीड़िया छै. सो किण भांतिरा तरकस कंधील, जिके मुखमली ठाठी, प्रतिकाली सकलात, मैंण कपड़री खोळीसूं काढ़ी, कलाबूत नोसरी साठो, गिरमरी नीपनी, कांबड़े गजबलरा भल, कांकँवर म्रीध पर पंखारै दांतरै वढ़ारै घणै पंचरग पाट मांहै झिम्झकिम्रां थकां घणैं मुखमल नैं घणैं दांतमा गरकाब कीम्रां थकां, उवां राजावांरी कडिम्रारां उवांहीज वड़ां पीपलांरी साखासूं नागळीजैं छै ।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति म्रतरा मांहै तरवारियांरा करमसार छूटै छै. तरवारियांरा साज खुलै छै. सु किण भांतरी तरवार थेट सिरोहीरी, सांतरी, दाणांदार, मिम्रांन घातियां बिम्रागुले बाढ़े झेरिम्रां-मिम्रांनसूं काढि नै घास में नाखी हुम्रै तो पांणोरै भोळै जिनावर ठूंक मारै. छछोंही बाल नागणो चिलकै जाणैं काळोरी जीभ हाल्लै, तिण भांतिरो म्रांबेर, जेसलमेर, सांगानेर, महेवारी म्रोजणी हुवै तिण भांतिरी. घणैं मुखमल नैं घणी सोनै रूपै मांहै गरकाब करी थकी, इण भांतरी तरवार, घणै ककडे गोनीअै सांबरमां लपेटी थकी तहनाळ, मुंहनाळ, कड़ी, कुरसी समेत नकसी मंठि उम्रां राजानांरै हाथरी उम्रां हीज वड़ां नैं पीपलांरी साखांसूं नागळीजै छै ।

तठा उपरांति करि नैं राजान सिलामति कटारी किण भांतिरी कुनारबंधी, कुनारगामी,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जमदाढ़ सोनहरी नकसी जड़ाव सांतरी, घणाँ मुखमल नें घणों कतीफे मांहै गरकाव कीधी थकी, उआं राजानांरी कड़ियांरी इण भांतिरी कटारी ओड़ी वटवै समेत ए जदा पगांसूं लपेट नें उआंहीज ढाळांरी आंचांमां राखीजै छै ।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति अतरा मांहै वागांरा चिहुरबंध छूटै छै. सो किण भांतिरा वागां श्री साफ, भैरव चौतार हजारी, गंगाजळ खासा वामता इण भांति वागांरा चिहुरबंध छूटै छै. कडिआं लोळ लीजै छै, वीजणाँ वाउ ढोळीजै छै, घांड़ां वाउठा कीजे छै. अंराकी टहलावीज, चौरंगा सोगठांरी खाट खड़ पड़ि नें रह्यो छै. वे पहरौ घमहमि नें रहिओ छै. गजेसरां, राइजादां, आलीजां जुवानां, मलूकां, कुअरांग साथनूं कल्हारीरौ होफो फिरै छै. हुकम हुओ छै कल्हारी. हो ठाकुरे कल्हारी. सो किण भांतिरी कल्हारी तेलगारो वाडीरो कमल, इकत्रीसमी तारंरौ तजारौ, कोपरारै दलिगरीरै वढ़ि हाथां छूटो, पांणीमां पड़ै तौ गळि नै जावै घणां भीमसैनी कपूर वासीआ पांणीसूं केहरी कल्हारी खासां दोवड़ां छांणीजै छै. ऊजळा रूपोटा उलटाजै छै. ऊजळा खवास पासेवान हाजिर लोआं खड़ा छै ।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति इतरा मांहेरा इतनांरा साथनां अमल कराड़ीजे छे. काळौ कंदलीवाढ़ीजै छै. भूरो मेवाती आरोड़ा अमल आगराई मिसरी आंहि फीण अनै वासग नागरै मुंहड़ेरा झाग हुअै तिण भांतिरौ नेस सींघोड़ा भंज कियां. आमिरी वढ़ कीआं थकां, पांच पांच, दस दस सेर देवगिरिआं थाळिआंमां घातिआं थका फिरीजै छै. जो किणी ठाकुररी हांस तरस हुअै छे तिणनूं अमल आरोगाडीजै छै ।

तठा उपरांति करि नें राजान सिलामति धूंधळौतजारौ, बांधलौतजारौ, पांच पांच सेर, दस दस सेर कोरा कूंडामां घातीआं थकां सांबरा आंचारा जुवान मचकावै छ. पवनरी मारी सिकडीजै नहीं. आं लारै अगरि आवै. आंगूठार अगरि आयां निलाडरौ निलक लै. इण भांतिरौ धधळोतजारौ, बांधळौतजारौ सो किणनूंजी पाकां पाकां वरीआंमां जोधारां करड़दता, अजराइलां खोबरां डाणां दूलाडा कीआं लोह घरड़ां लोहानां लोळी लेनां काटरै ऊगरै है करतां पचासे बोलीए. आठे आठे अढेरणि खेतरै विषै पड़ि पडि ऊपडिआ. जाहरां पांच पांच हजार बाम पाटा बेंधे खाधा तांह रजपूतांनूं अमल कराडीजै छै. अमलांरी नीमां दूणी दीजै छै. अमलांरौ तंडल रोपीजै छै. अमलांरा जमाव कोजै छै ।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति केसरिये वागे नंदा चंदा जुआंन माहिल वाडिआंरौ साथ ऊपडिआं घटांरा चुवता पटांरा खासीआं बांहारा बोलता कहारां राजांन राजावदरै वेपारै रै वासतै ढाकरा मगाडीजै छै. ओटी ऊंठे चाडीजै छै. सो किण भांतिरा ऊंठ, किण भांतिरा हांण, किण भांतिरा डांण, किण भांतिरा पलांण नै किण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भांतिरा बखांण. जिके पंचाळी वहीरा, वालमी नहीरा, वाटली तळीरा, घाटमी नळीरा, जाडा गोड़ारा, छोटा पींडारा, घटवाजटरा, ससा सेरिम्रां बगलांरा, चाकमै ईडररा, भांवरै पूंछरा, वलिमे रूम्ररा, नवहथी भोकरा, बाथिमें कंधरा, छत्रधारी माथैरा कोरिमै कानरा, साइमै वांनरा, तजिमा होठांरा, कसतूरिम्रां पटांरा, भमण मथा सांलीम्रै सिंह ज्यों सारसें करता सींघोड़ा सा, कूंटा काढिम्रां, भूखे मयंद ज्यों हूंकार करता. मद वहता, हाथी ज्यों जोहां खातां, भाद्रवैरी गाज ज्यों म्रावाज करतां, साठीकरै भमण ज्यूं चसळका करता, भागै गाडै ज्यों बठठाट करता, म्रागले भाग नाखतां खोटहड़ीम्रैरा गोम्रंरा झूठै कूम्रैरा कळसिमां कपोळांरा, कमाल धड़े चड़ीम्रा, कड़े बाथमां थेट म्राडेवळे सारीखां गिरवरां पहाड़ांरा, भंगरां बनसपती सोमरा, पाखड़ा प्रतकाळो सकळात में उकू लपेटिम्रां थकां; पींतळरा पागड़ा, कळीभार भोळ घातिम्रां थकां, घणीं पीतळ नै घणी दांत मांहे गरकाब हुम्रा थका, रेसमी पटाटां, सांबरा उकटां, तगे म्रंग भीड़िम्रां थकां. इण भांतिरा सौ ऊठा ऊपर सौ पलाणां मंडिम्रा छै. घड़िम्रा जोजनरा जावणहार, धरतीरा करवत जांणै जळरा जेहाज डूंघाजमाज छोडिम्रा छै. ऊठीम्रै चड़ि वाग उठाई छै. म्रोठी जाए एवड़ि पहुंता छै. बाकरा पकड़ीजै छै. सो किण भांतिरा बाकरा जिके कड़कती सांधरा, बड़कती नळीरा, भाहूरे सांदरा, मांदळिए पेटरा, माडि बोर काचररा, बरडणहार, घणैं कूंभट नैं वावळीरी टीसीम्रांरा म्राड़णहार, सिखिरिरा मालणहार, फिरणीम्रंरा बैसणहार, बालखसी बोकड़ा, बिसे बोकड़ा, खोरडे खील हुरीरा चारीम्रोडा, सो ऊठा बिसे बोकड़ा मसकांरो भांतिसों लिड़ाइ नें घातिम्रा छै. म्रोठीए चड़ि नें वाग उपाड़िया छे. म्रोठिए म्रांणि राजांनसूं मुजरा गुदराया छै. खाजरू म्राए हाजर हुम्रा छे. रावतालानूं कहिम्रो छै. ठाकरे खाजरूम्रां नें ठरका करो. तिके रावताल। घणीं केसर नैं घणैं कसनागर म्रन्तर सांथे मांहे गरकाब हुम्रा थका. उम्रां सीरोहीम्रां खाजरू वोभोड़ीजै छे. बाकरा फूलधारा मुहे निखाळीजै छै. बाकरा उधेड़ीजै छै. तांह खाजरूम्रां उधेड़िम्रांरो कासूएक बखांण वजाजरौ हाट बास्तेरा थांनरूरी बरकी, पींजी अैरूरा गोटा, गुजरातीं कागळरा पाठ, इण भांतिरा खाजरू नीसरिया छै. भीतर बाड़िम्रां हुसनाकांनूं सूळांरौ हुकम हुम्रौ छ. तिके सूळा कीजै छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति बाकरां नें सूम्ररांरै सांटरा सूळा जोळा जोळा हुम्रै छे. सो किण भांतिरा सूळा पेटिमांरा खालिमार, म्रंतर वेढिम्रांरा ऊपर चेढ़रा, कालिजैरा, पेटालिजैरा, इण भांतिरा सूम्ररां बाकरांरा सूळा रजबेंरा मारिया घणैं सुरहै घोरा भारिम्रा, म्राडीम्रां, पोटळिम्रां ऊपरि भरराट करि नै रहिम्रा छै. सातमैं पाताळ वासंग नागरै माथै टपूकड़ा खाइ नें रहिम्रा छै. त्यांरी सौरभरी वास्तै तेत्रीस कोड़ि देवता सरगसूं हेलूस नं उतरै देवांसुरांरा विवाण हिलोरव खाइ नै रहिम्रा छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति राजांन राजावतरै बेपारह वास्तै भांगि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मंगाड़ीजै छै. तिका किण भांतिरी भांग सुध काकापुरणि वासिग नाग मावेरी नीपनी, सिधरी गुफा मांहे नीपनी, पोहररै बिड़ैरा, भाखररै खुड़ैरी, सूम'री पांख, परड़री पांख, रोज मारि, रिष मारि, भमर मारि, लटिम्राळी, बापरी खाधी बेटैनां म्रावै, काकैरी खाधी भत्रीजैनां म्रावै. ग्रसवाररी खाधी प्यादो छकै, इण भांतिरी भांग मंगाड़ीजै छै. मकराणैरै पखाणरै कूंडे घातीम्रां, माल कांगणींरा गोटासूं वांटीजै छै, सांबरा प्राचारां जुवांन घोटै छै।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति मेलवणी जोळी जोळी मंगाड़ीजै छै. सो किण भांतिरी मेलवणी लंवग, डोडा, जायफळ जावंत्री, नागकेसर, तज, तमाल पत्र, सींगी, मुहुरा, धतूरो, भूटटी, एकखांन, वहुमवाबावी खांन, हाथां छूटो रायागण मैं पड़ै तो सात सात टुकड़ा होइ जावै इण भांतिरी ग्रमोलो काढ़ीजै छै. इण भांतिरी मेलवणी जोळी जोळी मंगाड़ीजै छै. कसूंभैरी वास्तै मिसरी कोरा माटा मंगळीजै छै. कसूंबो खासा पटोळा छाणीजै छै. कसूंबो ऊजळा रूपोटा उळजै छै. कसूंबो ऊबोम्रां किलगिणिम्रां वारीजै छै. कसूंबो राता म्रोछाड़ा म्रोछाड़ीजै छै. कसूंबै मैं हुसनाक पवन हांकै छै. कसूंबैरी पाणिणो महिमी छै।

तठा उप'ांति करि नै राजांन सिलामति गोळी, चूरण, म्रासण, कबळ, कुटी, नागासिणी, बिरंच, मुफर, तांबेसर, कामेसर, मदन कामेसर, जिता मारिम्रा म्रोखध फेरीजै छै. जांह ठाकुरारै हांस तरस हुम्रै छै ताहनूं कपूर वासिम्री पांणी ऊजळा रूपोटा भालिम्रां उजळा खवास पासेवांन हाजर लिम्रां ऊभा छै. इण भांतरा म्रोखद उम्रां राजांनरा साथनूं म्रारोगाड़ीजै छै. कितराइक तो राजांन कपूरतररा लोचन किम्रां गिड़भागै मेघ ज्यों विराजमान हुइ नै रहिम्रा छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति म्राटा मैदारी फांटां म्राणीजै छै. सिवपुरीरा देवजीर चोखा, चांवळ, कपूर सारीखा ऊजळा वीणीजै छै. नागरचालरा नीपनां गोहूँ, बजर कठकाठिम्रां मूंछारा. त्रांबारी सिलाक हुम्रै तिण भांतिरा, बारां बारां बरसांरा डाउडांरा कान वींधीजै. इण भांतिरा पांच पांच मण, दस दस मण गेहूं, चावळ म्राडिम्रां जाजमां घातिम्रां रोळीजै छै. कांकरा काढीजै छै. धूंए म्रंबर धूधळिम्रो छै. सुरीराउतें जीहीं जरै छै. जांगडिम्रांरी जोड़ी म्राडिम्रांर बांज भालिम्रां थकां हूकळिनै रही छै. वडा दांतरा सिरदारांरा खंभाइची मांहे दूहा गाईजै छै. जस जांगड़ा गवाडीजै छै. ढाढिमांरो जोडी गजराज पटाभर ज्यों भाकड़ी खाइ नैं रही छै, इमिरितोरा भोला दे नैं रही छै जाणै सातम सरगी सुहागण हमामरै भरोखै भापां खाइ नै रही नैं च्यार टांक चावळ खाम्रै तो सरोर म्रहार-त्रिकार थाए. गीत, संगीत, तालबंध, म्रदंग, वीणा, सारंगो, तबूरारा साज लागि नैं रहिम्रा छै. इण भांतिरी म्राखाड़ै रंभा पात्र निरत कारणी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोळै सिणगार कियां थकां कानरा झांझर वाजि नै रहिआ छै. श्रीमंडल राग कलावंत धमंड राग जमावि नै रहिआ छै. छै राग नै छत्रीस रागणी आलापीज रहिआ छै. तां राजानां मुंहडा आगि पंडित, मिश्रा, जोतसी, चारण, भाट बैठा छै. छभा मंडि नै रहिआ छै. कवेसुर कवित्त, गीत, छंद, दोहा, गाथा, वात कथी नै रहिआ छै।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति राजांन राजावत घणां अमलां किआं थकां आगै वखाणियां तिण भांतिरो दारू पिआं छकीआ उछकिआ साथसूं लांगीरी पोत किआं झालणानां पेठा छै. दरिआव मांहे घड़ नावां बांधी छै उणि होदरी हवा उवां घड़नावां ऊपरै सूरती तंबाकू आरोगीजै छै. गुमांनरा कुरळा कीजै छै. घणीं वासावळीरो वाह लागि नै रहिओ छ. भीर वांट वांट नै पांणी उछाळीजै छै. होकारै होंकारो हुइ नै रहिओ छै. पांणी मांहे वासावळीरो डोरो फूटि नै रहिओ छै।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति झलरंमि खेलि नै बारै पधारिआ छै. कपड़ा पहरीजै छै. वणाव कीजै छै हिलमी जेहाज पाथरीजै छै. बिछाइत गादी तकिआ फेर विराजमान कीजै छै. बेवड़ी, त्रेवड़ी, चौवड़ी पांत्यां जुडी छै. सूआर, पड़िहार आडां डोआं, लांबां कुडछां, झालिआं थकां कछि नै रहीआ छै. चरू रहडूए घाति घाति घींसीजै छै. आडाआं डांगरां घातिआं चरू रठठाविजै छै तांह चरवांरा निहाव्यासूं पहाड़े पड़ि सादानें रहिआ छै. देवगरी थाळं सोनै रूपेरा, सिरदारांरा मुहडा आगै मेलीजै छै. घणा मालवा पुरी काठा घहूंदा बटीजै छै. घणा केसयां मांस रजवैरा भीनां थका उधमीजै छै. घणां जोजरा रोटा, ऊजळा देवजीर जादूरा फूल हूवै तिण भांतिरा चावळ परूसीजै छै. मसकारै मुंहडै घो नामीजै छै. अतरा मांहे सोहितै नै मांसरा चरू ऊतरिया छै. सोळा सोहिता धांधुसो पुलाव चकताळो जळचर मांस, थळचर मांस, उडणां पंखिआंरा मांस, भांति भांतिरा जुदा जुदा समार समार नै वणाया छै. प्याला मांहि परूसीजै छै. हाजर कीजै छै।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति दारूरी तूंगा लागीसूं ओछाछिआ घणैं ठंढै पाणीसूं छांटि छांटि नै वडांरी साखांसूं नागळी थकी जूलं छं. पवनरो हवासूं टिप्पा खाइ नं रही छै. कोरी गागर मांहे घाति घाति ठारीजै छै. बतकां भरीजै छं. ऊजळा खवास पासेवांन करा बीड़ा झालियां हाजर खड़ा ऊभा छं. अतरा मांहे दारू आय हाजर हुओ छै।

तठा उपरांति करि नं राजांन सिसामति दारूरो पाणींगो मंडियो छै. सो किण भांतिरो दारू. उलटैरो पलटं. पलटैरो अैराक, अैराकरो वैराक, वैराकरो संदलो, संदलोरो, कंदली कंदलीरो कहर, कहररो जहर, जहररो कटाव, कटावरो नेस, नेसरो जेस, जेसरो मोद, मोदरो कमोद, कमोदरो हूल. घाहि लागै तो नांहि जागै, मुंहडै मैं मेल्हियां छातो लोह पड़ै चिगती भाठीरो तेज पूंज आसप अरोगीजं छं. घणां जडाव नैं चिणींरा प्याला फिर नैं रहिआ छं. इण भांतिरो दारू पांणिगो मंडिओ छै. उणि भांतिरो मांस उणि भांतिरो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुहिती, उणि भांतिरा झररतां सूळांरो निकुल कीजै छै. साथ आरोगै छै. गोठि बडै रस आई छै. अरोगि नै चळू कोजै छ ऊपरा कपूर, पांन, बीड़ा, सोपारी, केसरि, तांबां, लौंग, डोडा, काथा, चूना, सजुगम, मुखवास, मुंहछण दीजै छै. सु कितरो एक साथ तौ गिड भागा मेघरो नांई झांख मारिश्रां कबूतर सा लोचनां घूमि नै रहिश्रा छै. सु कितरा एक तौ राजांन उछक छाक छकतां बकतां थडता घूमता पड़ता घोड़ा आया छै. घोड़ा आइ हाजर हुआ छै ।

तठा उपरांति करिनै राजांन सिलामति अतरा मांहे बधाईदार ग्रोड़िश्रा छै. आगल महलांरां वणाव हुई नै रहिश्रा छै. सु कहै छै. ममांणी पाखांणारा महल सात खणां आमास चुणिश्रा थका, माळिश्रा, गोख, झरोखा, जाळी, बंगळा, कवबड़ी, असमानसूं लागि रही छै. श्रौ जाळिश्रां चिगां ढलि नै रह्यो छं. कोडो चूनां कलारो छोह बंध आरीसौ झळकं तिण भांतिरौ लागै छै. आरीसंरा महल वणि नै रहिश्रा छै. धमलहरं कोरणो वणी छं. कछ पाचमी नै होंगल तबाकां ऊपर सोनैरी कळस ईडां झळकि नै रहिश्रा छं. सांझ समै रंग रंगरा बादळ दीसै छै. तिण भांतिरा महल आधोफेरे लागि नै रहिश्रा छं. केसरी कुम कुमें महल छटावीजै छै. गुलाबरा छिड़काव हुवै छै. खस खान गुलाब छटावीजै छं. अगर उखेवीजै छै ।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति जिके रायजादी राज कुंआर छै. त्यांरी खवास्यां देहीरी आरांस करै छै. घणां अगर, अरगजा, सूंधारी पीठी ऊगट मंजणां कीजै छै. जळ गुलाबसूं चिहुर टपकिश्रा छै. किण भांतिरा. जांणै मखतूलसूं मोतिश्रांरी लड तूटी अंगोछा धूपणां कीजै छै. खावास्यां फूल दे दे नैं चोटी गूंथै छै. फूलमांसू पाटा घूटी घूटी पाड़ै छै ।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति नख सिख सूधो सिणगार वखाणीजे छं. वासिगां सारीखी पहपवेण ऊपरि सीसफूल मोतिश्रांरो वणाव वणि नै रहिश्रौ छै. पूनिम-चंद सो मुख सोळै कला संपूरण विराजिश्रो छै. तिलक बीच बिंदो झिख नै रही छं. कबांण ज्यां बांकी भ्राहां भमर विलसी बिराज नै रहिश्रा छै. म्रिघ नैणां त्रिखा भळकां ज्यौ जळवालिश्रां टोए अणिआलोका जळ ठांसियौ छै सूं आसी नासिका बीच बेसर वणी, उजळै पांणी नरमदा मोती प्रोया सूं लटकि नै रहिश्रा छै, बिचै लाल मणी झलक नै रही छै. वसंत कोकिला सारीखी मधुरी वाणी बोलै. कनां जांणै पड़दं वीण वाजै छै. दाड़िम कुली सा दांतां मांही सोनांरी मेखां चमक नं रही छै. लाल प्रवालीसा अधरा रंगि लागि नै रहिश्रौ छं पाकै अंब भोर चीटला ज्यौं हिड़की ऊपर चिबुक वणि नं रही छं. आरीसा सारीखा कपोलां जाणं सोनारा तबक विराजिश्रा छै. केसरिश्रा अलिकावलि काळा नाग ज्यौं चिटुला ज्यौं चिलक नै रही छं. चंदर थपेड़ा ज्यौं काने कुंडल झखि नै रही छै.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गावड़ जाणें खरादी खराद उतारो छै. कमल नाळसी बांहां लाल चूड़ी वणिग्रो छै. विचै सोवन चूड़ी विराज रही छै. बाजूबंध झावी मखतूलसूं लटक रहिग्रा छै. लाल कमलसा हसत कमल जावक मेंहदीरै रंग लागा थकां. चोळा फळी सी आंगुळी. गोरै प्रांचै प्रांचीग्रां वणि रही छै. छाप मूंदड़ी नवग्रही जड़ाव वणियो छै. उरस्थल कूंभाथ सारीखो गजमोतीरो हार विराजियो छै. जाणें मेरगिररा टूकां बीच गंगारी धारा धसी छै. नारंगी अणहार, सोपारी सा कठोर कुच वाटला तीखा कांचू वीच विराजिग्रा छै. अंगिग्रां ऊपरै फूलांरा चौसर पहरिग्रां लांधणिग्रां सिंघरी कटी लंक धड़े चड़ रहिग्रो छै. पान सारीखो पेट पातलो अम्रित सी नाभी कुंडली माहि पांणी पीतां ढळकतो दीसै छै. जाणें काचरो सीसी मांहै गुलाब ढळकतो दीसै छै. पेटरी त्रवली जांणें कामरा महलरी पाहुड़ी वणी छै. कर ले मापीजै तिण भांतिरै भमर लक ऊपरि कटि मेखळा वणि नै रही छै. सुराही गळारै घाटि सभासलं पींडी झीणें गिरीग्रै ऊपरि वाजणी पायलरा घूघरा रमझोळ झणकिग्रा जाणें कळहंसरा बच्चा बकोर करि रहिग्रा छै. पगरी राती पींडी खालिमी कूतरारी जीभ सारिखी, लाल कमल चरण जावक महिदी रंगसूं विराज रहिग्रा छै. पग अंगुळी राइवेलिरी कळी हीरा सा नख आरीसा ज्यों झांखि रहिग्रा छै. ऊपरै अणोटपोल पावटां विछग्रांरो वणाव वणि नै रहिग्रो छै।

तठा तपरांत करि नै राजान सिलामत चदाव्दनरी देहरी नरमाई गुलाब-फूल, तिल-फूल सारोखी. हंस गमणीरी गज गति लाड गति छै. इस भांत नख-सिख सूधा सोळै सिणगार कियां बारै आभूषण विराजिया छै. जाणें इन्द्र-लोकरी अपछरा, रूपरी रंभा आसमानरी ऊतर पड़ी. चित्रामरी पूतळी, विधाता हाथसूं समारी. कामरी केळि, विरहरी वीज, सुखरी सिळाव, सोनारी कांब हुग्रै तिण भांतिरी संकेळी, नख मांस मांहे ऊलाळो ग्राकासि जाग्रै, चावळरो चौथो खाग्रै, साख्यात पदमणी. वाळि वाळि नें गांठ दीजै. इण भांतिरो तूंजी, हलका ज्यों लचकती. रतनाळा लोचनां, ग्रणिग्राळा काजळ सारीजै छै. जोहर कांचूं जड़िजै छै. भमर लंक, झीणं लंक ऊपरा चालहरा घाघरा वासिजै छै दखणो चीर ओढिजै छै पाटंबर नोलंबर जरकसीरा वणाव कीजै छै. ग्राडिग्रां फणिग्रां मुखमली खासां विलाविग्रां थकां जाळौरी सांठै, खुरासाणी भळकै सांतिग्रै ऊंठ सौदागररै घोड़ै चालविग्रै पठाण अरड़ै ग्रायै चींघडिग्रै रूठै, गाम-धणीरा सा लौचनां किग्रां, वाळि वाळि मोती ग्राठविग्रां थकां, काळरा नेवर पहरिग्रां, केळिग्रभ चंदणारो छेडो, रतनारी रासि, ग्रंधारैरो ग्रादीत, ग्ररसरो ग्रमरी, सरगरी झांप, विरहरो समूह रूपरो निधान, थाका हंसरी टोळी, निवायैरी हौळी, घणें हाट नें चीरमां लपेटी थकी विराजमान होइ नै रहो छै. जाणें ग्रासोजरी पूनमरो चद्रमा सोळै कळा संपूरण उदित हुग्रो छै. इण भांत ऊजळै पतिव्रतरी पाळणहार, ऊजळी सखिग्रांरो टोळीसूं राजहंस राइजादी राजकुंग्रारी झरोख चडो झांखै छै. बधाईदार दौड़िग्रा छै. वधाईदारां ग्राइ खबर दीधी छै।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तठा उपरांत करि नै राजान सिलामत घोड़ा दोड़ीजै छै. राजान राजावत मारू घरे पधारिआ छै. चौकि कलळ फूटि नै रही छै मायारा ऊबराव बहोड़ावीजै छै. कवि राजानां विदा कीजै छै. मायारा खवास पासेवान हाजर तेड़ीजै छै. गोखैं दीवा कीजै छै. महले दीविआं अगरदानिआंरी चहकि लागि नै रही छै. हाथो पगा ढोलिआ पाथरीजै छै।

तठा उपरांत करि नै राजान सिलामत राजान राजावत महले पधारिआ छै. महले आइ विराजमान हुआ छै. आगै अिगानैणी, अम्रित वैणी कामणी सिणगार सभिया छै. इणियाळा काजळ ठांसिया छै: वणाव किया छै. राजानरा मन राखै छै।

दूहा

गुण कामणि छंदो वयण, नमि नमि संभै नेह ।
पीरो कहियो धण करै, धणरो कामणि अेह ।।

अमलांरा रंग-तरंग माणीजै छै. तेजपुंज आस्यपरा प्याला आरोगीजै छै।

तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति हमै राजान कामरा भूखिया, लांघणिया सीह ज्यों आपाळि नै रहिया छै. जाणै मदन-मयंद पछाड़ीजै छै. काछी जिमपुरी करि नै रहिया छै. विरही वाग ऊपडी छै. चौरासी आसणरा भेद कीजै छै. अस्टांग मिलण चुंबण १, अधरपान २, नखदान ३, कुच-मर्दन ४, पुड़पुड़ी ५, चुंहटी ६, चसका ७, मसका ८, हां जी, ना जी इण भांति कामरी कुहक पड़ि नै रही छै।

तठा उपरांत करि राजान सिलामत रंग-महल में प्रेम-झड़ लागि नै रही छै. सुरतांत-समय हुवौ छै: महलांरी हवा माणीजे. कांचुआंरी कस छूटी. मोत्तियांरी माळ तूटी. जाणै सुखरी लंका लूटी. इण भांत सुख-सेजे पौढिया. राति विहाणी. प्रभात हुवौ छै. रातोका काम-उजागर नैण घुळि नै रहिया छै. कपोले काम सुहागरी छाप लागी छै. खुलि नै रही छै. इण भांत सुख-विलास करतां छै रित बारै मास माणीजै छै।

दूहा

खट रित बारै मास फिरि, ज्यौं ज्यौं आवत जाइ ।
त्यौं त्यौं वात-वणावरा, दान तरंग सुहाइ ।।
.....,राज लोक सिणगार ।
च्यारे प्रस्तावे चतुर, वणियौ भलौ विचार ।।
सुर-नर-नाग निघट्टियां, काळै केहरियां ।
जळ पूरियां पाखाण ज्यौं, गल्लां उवरियां ।।
बेटै बाप विसारिया, भाई वीसारै ।
सूरां पूरां गल्हड़ी, मागिगा चीतारै ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org